॥ राम ॥

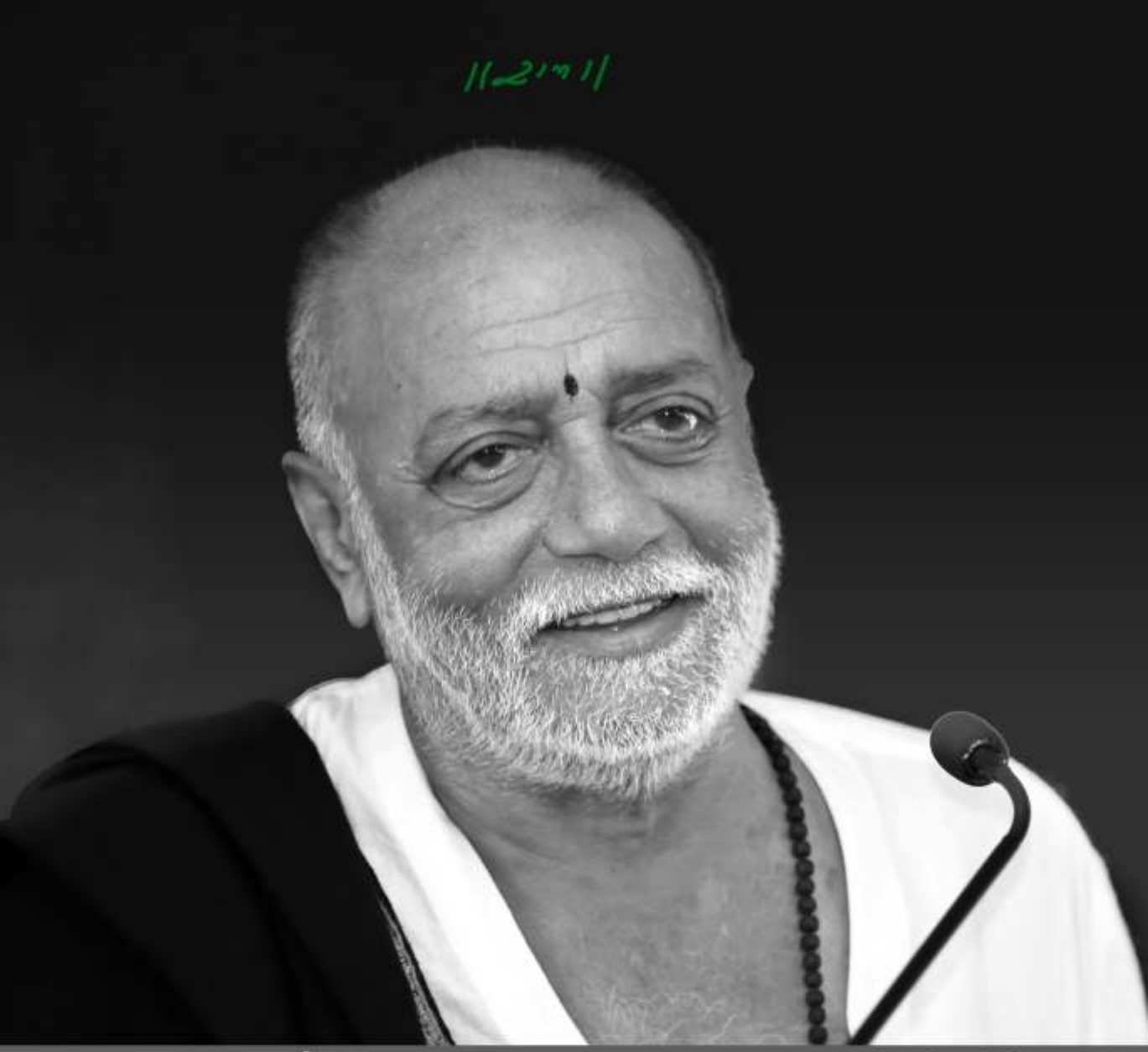

मानस-सुन्दरकांड

टोरन्टो (केनेडा)

॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

स्याम सरोज दाम सम सुंदर। प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर।।
तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर।।

|| रामकथा ||
मानस-सुन्दरकांड

मोरारिबापू
टोरन्टो (केनेडा)
दिनांक : २-७-२०१६ से १०-७-२०१६
कथा-क्रमांक : ७९७

प्रकाशन :
फरवरी, २०१८

प्रकाशक
श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,
तलगाजरडा (गुजरात)
www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट
© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक
नीतिन वडगामा
nitin.vadgama@yahoo.com

रामकथा पुस्तक प्राप्ति सम्पर्क-सूत्र :
ramkathabook@gmail.com
+91 704 534 2969 (only sms)

ग्राफिक्स
स्वर एनिम्स

प्रेम-पियाला

मोरारिबापू की रामकथा 'मानस-सुन्दरकांड' ता.२-७-२०१६ से १०-७-२०१६ दरमियान टोरन्टो (केनेडा) में सम्पन्न हुई। 'रामचरित मानस' के सप्त सोपान के पंचम सोपान 'सुन्दरकांड' में पंचदर्शन है, ऐसे निवेदन के साथ बापू ने 'सुन्दरकांड' में निहित पांच दर्शन को विशेष रूप में व्यक्त किया। बापू ने कहा कि पहला दर्शन मेरे हनुमानजी की आंखों में लंक-दर्शन है। दूसरा दर्शन है श्री हनुमानजी की आंखों में अशोकवाटिका में माँ सीता-दर्शन। तीसरा दर्शन है श्री हनुमानजी का दशानन-दर्शन। चौथा दर्शन है विभीषण का राम-दर्शन और पांचवां दर्शन है समुद्र की जड़ दृष्टि में भगवान राम का दर्शन। ये पांचों दर्शनों का समूह जिसे मेरी व्यासपीठ पंचदर्शन कहती है।

बापू ने 'रामचरित मानस' के सातों कांड के बिलग-बिलग दर्शन को भी रेखांकित किया कि 'बालकांड' अवतार-दर्शन का कांड है। उसमें अवतार का पूरा दर्शन है। 'अयोध्याकांड' है आघात-दर्शन। आघात लगना, अचानक मुश्किल आना ये 'अयोध्याकांड' है। 'अरण्यकांड' है वो आक्रमण-दर्शन है। उसमें आक्रमण का दर्शन हो रहा है। 'किष्किन्धाकांड' में आदर्श राजनीति का दर्शन है। 'सुन्दरकांड' में है आश्वासन का दर्शन। 'लंकाकांड' में आधि भौतिक वैभव का दर्शन है। और 'उत्तरकांड' आध्यात्मिक-दर्शन का कांड है।

'मानस-सुन्दरकांड' पर केन्द्रित हुई इस रामकथा में बापू ने 'सुन्दरकांड' में जो नव सुंदर वस्तु है उसका परिचय भी दिया। 'सुन्दरकांड' की चौपाईओं में प्रयुक्त 'सुंदर' शब्द का जिक्र करते हुए बापू ने यह नव वस्तु का निर्देश किया, जैसे कि 'सुन्दरकांड' में एक सुंदर है भूधर। दूसरा सुंदर है लंका के घर। तीसरी सुंदर है परमात्मा की भुजा। चौथी सुंदर वस्तु है रामनाम अंकित मनोहर मुद्रिका। पांचवीं सुंदरता अशोकवाटिका के सुंदर वृक्ष के फल। छट्ठी सुंदरता है भगवान की कथा। सातवीं सुंदरता है सगुन की। आठवीं सुंदर है नीति। ये आठ सुंदरता है और मैं नव कह रहा हूं क्योंकि सभी अष्ट सुंदरता में केन्द्र में है, 'सुंदरता कहुँ सुंदर करई।' तो केन्द्र में सुंदरता है वो माँ जानकी है।

विदेश की भूमि में रहते अपने देशवासियों को संकीर्ण संप्रदाय में विभाजित होने के बजाय सनातन धर्म के वटवृक्ष की छाया में रहने की समुचित हिमायत भी बापू ने इन शब्दो में की, ''मेरे भाई-बहनों को जाते-जाते कहकर जाना चाहता हूं कि छोटे-छोटे ग्रूपों के द्वारा विदेश में रहकर टूट मत जाना। एक-दूसरे से जुड़े रहना। तुम्हारे नगर में ईक्यावन मंदिर है ऐसा मैंने सुना है। एक सौ आठ करो, मुझे कोई आपत्ति नहीं लेकिन तुम्हारी दीवारों में दरवाजे रखना वरना टूट जाओगे! मंदिर रहे, संप्रदाय रहे, धर्म का ग्रूप रहे। सब रहे लेकिन मिले रहना। एक आसमां के नीचे रहना। और आसमां है सनातन धर्म। सनातन धर्म, वैदिक धर्म, वैदिक परंपरा ये वटवृक्ष है। उसकी छाया में सब मौज करो। वरना हम धर्म के नाम से विभक्त हो जायेंगे, टूट जायेंगे।''

– नीतिन वडगामा

'रामचरित मानस' के पंचम सोपान 'सुन्दरकांड' में पंचदर्शन है

स्याम सरोज दाम सम सुंदर। प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर।।
तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर।।

बाप! भगवत्कृपा से करीब मुझे जो बताया गया, पंद्रह-सोलह साल के बाद टोरन्टो में रामकथा होने जा रही है। सोलह साल के पहले जो एक-एक साल के थे, उन सभी भाई-बहनों को सोलहवां साल लग गया है। और मैं उसी के लिए आया हूं। आप तो मेरे बुज़ुर्ग-वडील लोग मेरे लिए वंदनीय है। लेकिन मैं इस युवापीढ़ी के लिए आया हूं। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि हमारे परम स्नेही किरणभाई और प्रवीणाबहन, आप का पूरा परिवार, आपका ये बहुत समय का मंगलमय मनोरथ कि टोरन्टो में फिर एक बार कथा हो और उसमें हमारा परिवार निमित्त बने। मैं इस पूरे परिवार को साधुवाद देना चाहता हूं। वैसे किरणभाई धार्मिक नहीं है। जिस तरह मैं जानता हूं, औरों की तरह धार्मिक घेलछा आदि-आदि दौड़-दौड़ उसके स्वभाव में नहीं है, लेकिन मैं उसकी भीतरी भावदशा को समझता हूं। धीरे-धीरे वो व्यासपीठ की ओर आते रहे, आते रहे और बिना कुछ बोले उसके मन में जो अंदर दबा हुआ था वो प्रकट हुआ। और उसमें बहुत बड़ा काम प्रवीणाबहन ने किया। आज पूरा परिवार प्रसन्न है। कथा में उपस्थित पू. स्वामीजी महाराज, सभी आदरणीय वडील मुरब्बीश्री और आप सभी मेरे भाई-बहन, सभी को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम।

कल एक तारीख थी, पहली जुलाई, केनेडा का ये दिन था। मैं पूरे राष्ट्र को, यहां के शासन को और जन-जन को मेरी व्यासपीठ से और आप सबकी ओर से यहां की जनता को 'केनेडियन डे' के लिए बधाई देता हूं, शुभकामना देता हूं। मैं सोच रहा था कि इस बार टोरन्टो में 'रामचरित मानस' से कौन-सा विषय मैं पसंद करूं? लेकिन फिर आज सुबह मेरे मन में आया कि मैं आपके सामने 'मानस-सुन्दरकांड' गाऊं, क्योंकि भारतोत्तर देशों में 'सुन्दरकांड' और 'हनुमानचालीसा' का बहुत लोग पाठ-पारायण करते हैं। पूरा 'सुन्दरकांड' तो कहना मुश्किल है, क्योंकि हर टोपिक एक-एक कथा के लिए विषय बन सकता है। लेकिन मुझे मेरे गुरु की कृपा से, संतों के आशीर्वाद से, आप सभी की शुभकामना से कुछ पढ़ा, कुछ सुना, अच्छी सोबत की हो उस वार्तालाप से कुछ जाना और कुछ परमात्मा की कृपा से मेरी समझ में जो आया; 'सुन्दरकांड' में पंचदर्शन है। वैसे 'सुन्दरकांड' 'रामचरित मानस' के सप्तकांड में पंचम सोपान है। बहुत प्रचलित शब्द होने के नाते 'कांड' कहना पड़ता है बाकी तुलसी ने 'कांड' शब्द का प्रयोग नहीं किया है। वो तो प्रथम सोपान, द्वितीय सोपान, तृतीय सोपान, चतुर्थ सोपान, पंचम सोपान कहते हैं। लेकिन बहुत प्रचलित है 'कांड' शब्द इसीलिए हम 'बालकांड', 'अयोध्याकांड' आदि शब्द का प्रयोग करते हैं।

तो पूरी रामकथा का केन्द्रीय विचारबिंदु है 'मानस-सुन्दरकांड।' पांच दर्शन है बाप! मैं हरवक्त बोलता हूं और मैं शुरू में ही निवेदन करूं कि रामकथा ये केवल कोई धार्मिक व्याख्यान नहीं है। रामकथा की मेहफ़िल, ये संगत, ये समागम धर्मशाला नहीं हैं युवान भाई-बहनों, मेरी दृष्टि में प्रयोगशाला है। इसमें पांच दर्शन है। एक श्री हनुमानजी का लंक-दर्शन। उसने लंका को किस दृष्टि से देखा। जिसके

पास आंख है वो देख सकता है, लेकिन जिसके पास आंख होने के बाद भी, दृष्टि होने के बाद भी, दृष्टिकोण नहीं है वो बहुत-सी बातें चुक जाता है। रामकथा प्रदान करती है दृष्टिकोण। सद्गुरु बनकर हमें दृष्टिकोण प्रदान करती है। तो पहला दर्शन मेरे हनुमानजी की आंखों में लंक-दर्शन है। दूसरा दर्शन मेरे हनुमानजी की आंखों में अशोकवाटिका में माँ सीता-दर्शन। तीसरा दर्शन है श्री हनुमानजी का दशानन-दर्शन। रावण भी दर्शन का विषय बन सकता है, यदि दृष्टिकोण हो तो। रावण भी हमारी दृष्टि को रोकता है, मजबूर करता है, बाध्य करता है कि मेरे बारे में सोचो। चौथा दर्शन है विभीषण का राम-दर्शन। जब विभीषण राम की शरण में आया और उसने राम का जो दर्शन पाया वो मेरी समझ में चौथा दर्शन है। पांचवां दर्शन है समुद्र की जड़ दृष्टि में भगवान राम का दर्शन।

ये पांच दर्शनों का समूह जिसे मेरी व्यासपीठ पंचदर्शन कहती है। यद्यपि 'रामचरित मानस' के सातों सोपान में यहां दर्शन की चर्चा वो शास्त्रीय दर्शन की नहीं कर रहा हूं। जो शास्त्रों में षड्दर्शन की बातें हैं, बहुत कठिन-जटिल है, मेरी भी औकात नहीं है और मैं आपको भी उल्झन में न डालूं। फिर मुझे जयपुरीसाहब का शे'र याद आ रहा हैं -

उलझनों में खुद ऊलझ कर रह गए वो बदनसीब,
जो तेरी ऊलझी हुई झुल्फों को सुलझाने गए।

तो बाप! यहां दर्शन मतलब मेरे और आपके सामने जो व्यवहार दर्शन है; प्रतिपल, प्रतिक्षण जो हम फेइस कर रहे हैं। और मैं ये सोलह साल की उम्रवाले भाई-बहनों को ये जटिल-कठिन दर्शन में क्यों ले चलूं? ये सरल बातें हम सोचे, जो हमारे कदम-कदम पर हमारे लिए आवश्यक है, नितांत जरूरी है।

मैं आपको निमंत्रित करता हूं। मेरी व्यासपीठ की ओर से, तलगाजरडा की ओर से आप सभी निमंत्रित है कि आओ फेमिली के साथ, सुनो अकेले। जरूर फेमिली के साथ आओ लेकिन मेरा बोलना शुरू हो जाए और आपका सुनना शुरू हो जाए तब अकेले हो जाओ।

आंसूओं तुम जरा अलग रहना,
उसने मुझको तन्हा बुलाया है।

बाप! एक कथा काम कर सकती है। मैं कोई यहां धार्मिक सम्मेलन में नहीं आया हूं कि मैं आपको पीटिपिटाई बात कहूं। जो हमारे जीवन में हमें प्रतिपल फेईस करना पड़ता है मुझे और आपको उसके बारे में सोचा जाए। इसलिए पांच दर्शन हमारे जीवन के लिए बहुत बड़ा सामान बन सकता है। ये पंचदर्शन का 'सुन्दरकांड' और दर्शन भी कोई सामान्य दर्शन नहीं, हनुमान की दृष्टि से दर्शन। हनुमान की दृष्टि में लंका क्या है? हनुमान की दृष्टि में अशोकवाटिका या तो उसके केन्द्र में बेठी माँ जानकी क्या है? हनुमान की दृष्टि में रावणदर्शन कैसा है? दशानन की छबि कैसी है? बहुत समझकर मेरे हनुमानजी रावण के सामने बोले हैं -

सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया।
पाइ जासु बल बिरचित माया।।

एक बहुत बड़ा दर्शन रावण से मिलता है, रावण की लंका से मिलता है। लंका को गालियां न दी जाए, रावण को गालियां न दी जाए। अपनी अज्ञानता को प्रदर्शित न करे। कृष्णमूर्ति का एक वाक्य बड़ा प्यारा मुझे लगता है, 'न कोई पाप है, न पुण्य है। पाप नहीं है, या है तो अज्ञान है; और पुण्य है तो यहां केवल ज्ञान है।' पाप है ही नहीं और बिलकुल कृष्णमूर्ति शंकराचार्य की अदा से बोले हैं, जो जगद्गुरु आदि शंकराचार्य ने गाया था-

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।

तो बाप! ये पंचदर्शन जो है, प्रतिपल डगर-डगर ये महत्त्व के हैं। तो ये पंचदर्शन है पंचम सोपान 'सुन्दरकांड।' कथा का नामकरण करता हूं, 'मानस-सुन्दरकांड।' 'सुन्दरकांड' पढ़नेवाले, गायन करनेवाले सबके लिए पंक्तियां बिलकुल जानी-पहचानी है। अशोकवाटिका में रावण आया जानकी के सामने। मंदोदरी आदि रानियों को लेकर आया है और जानकी को प्रलोभन देता है कि एक बार मेरे सामने देखे तो मंदोदरी आदि सब रानियां तेरी अनुचरी हो जाए। आप कल्पना करे, रावण जैसा बुद्धिमान आदमी एक महिला की एक नज़र के लिए पूरा साम्राज्य छोड़ने को तैयार हो गया! रावण पर विचार करना चाहिए। रावण का दर्शन जरूरी है। और जानकी भी मानो लीला कर रही हो ऐसी अदा से कह रही है -

स्याम सरोज दाम सम सुंदर।
प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर।।

श्याम कंवल की माला के समान मेरे ठाकुर के हाथ है। तेरे हाथ मेरे कंठ में नहीं आ सकते रावण! यदि मेरे कंठ में आएंगे तो श्याम हाथवाले राघव के ही आएंगे। और दूसरी उपमा 'प्रभु भुज करि कर' मीन्स परमात्मा के हाथ हाथी के हाथ समान है। और सूंढ हाथी के हाथ है। हाथी अपने सब काम सूंढ से करता है। भोजन सूंढ से करता है। किसी को मारना, धक्का देना, इसीलिए हाथी की सूंढ को कर कहते हैं। हे रावण, तेरे बीस हाथ है लेकिन राम की तुलना में तेरे हाथ की कोई कीमत नहीं। फिर हनुमानजी जब अशोकवाटिका में बिरहाकुल जानकीजी को बचाने के लिए मुद्रिका फेंकते हैं और जानकीजी जब मुद्रिका का दर्शन करती है तब तुलसी कहते हैं -

तब देखी मुद्रिका मनोहर।
राम नाम अंकित अति सुंदर।।

दो अर्थ हो गये। ज्यादा चर्चा बाद में करूंगा। लेकिन मुद्रिका मनोहर है और उसमें 'राम' लिखा है वो सुंदर है। स्वर्ण मनोहर है, लेकिन राम आते ही वो सुंदर हो जाता है। 'राम' लिखने के बाद, रामनाम अंकित होने के बाद वो सुंदर बन जाता है। और सुंदर परमात्मा का एक नाम भी है। सुंदर परमात्मा का रूप भी है। सुंदर बहुत संदेशा देता है इसीलिए टागोर से लेकर भारतीय परंपरा में 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' की चर्चा की है।

तो बाप! ये दो पंक्तियों का आश्रय मेरी व्यासपीठ इस केनेडा की कथा में कर रही है 'मानस-सुन्दरकांड' के लिए। वैसे बिलग दर्शन है। कई बार मैं इस सातों कांडों को बिलग-बिलग रूप में देखता रहता हूं। 'बालकांड' अवतार-दर्शन का कांड है। उसमें अवतार का पूरा दर्शन है। यद्यपि हमारे कई मनीषीलोग अवतारवाद में आस्था नहीं रखते; लेकिन हम जैसों के लिए अवतार चाहिए। कोई फोर्म में आना चाहिए। वो ही परमतत्त्व, वो ही परमसत्य, वो ही परमप्रेम, वो ही परमकरुणा। कभी राम के रूप में उतरी, कभी कृष्ण के रूप में उतरी, कभी बुद्ध के रूप में, कभी महावीर के रूप में, कभी जिसस के रूप में उतरी। उसी को हम अवतार कहते हैं। 'रामचरित मानस' अवतार पक्ष को ग्रहण करता है कि अवतार होता है। तो 'बालकांड' ये परमात्मा का निर्गुण का सगुण अवतार-दर्शन है।

'अयोध्याकांड' ये आघात-दर्शन है। आघात लगना, अचानक मुश्किल आना, ये 'अयोध्याकांड' है। हम कितने आघातों में जी रहे हैं! पहला आघात 'अयोध्याकांड' में आया कि मिलना था राज, मिला वन का राज! खबर नहीं, हमारे जीवन में कितने-कितने आघात आते हैं! उसी आघात के कारण रामविरह सहा न गया और दशरथ की मृत्यु हुई ये दूसरा आघात। तीसरा आघात भरत को लगा। बहुत बड़ी चोट भरत को आई कि ये क्या हो गया! यहां आघात है और आंसू से भरा कांड है। 'रामचरित मानस' में आप यदि गुरुकृपा से दर्शन करेंगे तो सात प्रकार के आंसू है। 'मानस' अश्रु का शास्त्र है। अश्रुओं का समंदर है 'मानस।' सात प्रकार के आंसू होते हैं। मेरे भाई-बहन, कभी परमात्मा से इतने सुख की मांग मत करो जो तुम्हारे आंसू के बदले में तुम्हें मिले। तुम्हारे आंसू छिन लिए जाए और तुम्हें सुख दे दिए जाए। इन कोरी आंखों से क्या करना जो कभी नम न हुई हो? मुझे पूछो तो आंख कजरे से नहीं शोभायमान होती, अश्रु से शोभायमान होती है। किसी भूखे बच्चे का एक आंसू निकलता है, क्या परमात्मा का अवतार नहीं हो रहा? अश्रु का शास्त्र है 'मानस।' सात प्रकार के अश्रु की सृष्टि है 'मानस।'

कुछ आंसू सुख के होते हैं। कुछ आंसू होते हैं दुःख के, पीड़ा के, दर्द के। 'मानस' में आपको मिलेगा; जब नारद आए हिमालय के द्वार। हिमालय ने अपनी बेटी को प्रणाम करवाया और नारद को कहा कि आप उसका नामकरण कीजिए और उसको वर कैसा मिले वो बताए। और जब नारदजी ने भवानी को, उमा को कैसा पति मिलेगा ये जब भविष्यकथन किया तब उमा को हर्ष के आंसू आए और उसके माँ-बाप को दुःख के आंसू आए! आंसू हर्ष के होते हैं, आंसू शोक के भी होते हैं। आंसू योग के होते हैं, आंसू वियोग के होते हैं। राम और भरत मिलते हैं, योग होता है, आंखें डबडबा जाती है। और कुछ दिनों के बाद राम और भरत बिलग होते हैं। फिर वही दशा, आंखें डबडबा गई! आंसू क्रोध के भी होते हैं। मैंने देखा है, क्रोध के आंसू होते हैं। जिसको बहुत क्रोध आता है उसको आंसू आ जाए तो ठीक है, क्रोध की मात्रा कम हो जाएगी। एक होते हैं बोध के आंसू। भगवान बुद्ध को जब बोध हुआ तब उसकी किताबों में लिखा है, अस्तित्व ने फूल बरसाए और उसकी आंखों से खुद के फूल बरसने लगे! अपनी बोड़ी एक पौधा बन गया था। बुद्ध का शरीर ही पौधा हो गया। और इस पौधे से आंसू निकले, फूल जरे। तो क्रोध के आंसू होते हैं वैसे ही किसीको बुद्धत्व प्राप्त होता है तो उनकी आंखों से भी अश्रु गिरने लगते हैं। सातवां आंसू होता है एक छोटे से बालक के आंसू। जिसका अभी मन डेवलप नहीं हुआ है, जिसको अभी कोई चुनाव का ज्ञान नहीं है कि ये अच्छा है, ये बुरा है। स्पर्श का थोड़ा ज्ञान होने लगा है, लेकिन बच्चा न भूखा है, न बीमार है, न कुछ चोट लगी है। न गिरा है, न किसी ने उपेक्षा की है। फिर भी बच्चा कभी अकारण-अहेतु रोता है। मेरी विश्व को प्रार्थना है कि अकारण किसी की आंख में आंसू आए इन आंसूओं की जांच करनी चाहिए। ऐसे निर्दोष चित्त से गिरा आंसू जिसके पिछे कोई कार्य-कारण संबंध नहीं है, इन आंसूओं को कसनळी में डालकर कोई वैज्ञानिक इसका संशोधन करे। ऐसे आंसू मुझे लगता है कि

विश्व में करुणा फैला सकता है, करुणा का साम्राज्य स्थापित कर सकता है। आंसू की बड़ी महिमा है।

आज सोचा तो आंसू भर आए,

मुद्दते हो गयी मुस्कुराए ...

आपने भी कभी ऐसी तनहाई में महसूस किया होगा कि कभी कोई कारण न हो, कोई खंभा पकड़कर रोने को जी करे, कोई एक कोना मिल जाए और आदमी चुपचाप बैठे और जार-जार रो ले। अश्रु है इन्सान के लिए परमात्मा का वरदान। कभी-कभी केवल विचार ने और कभी-कभी तथाकथित ज्ञान ने इन आंसूओं को छिन लिया है!

तमे रांकना छो रतन समां, न मळो हे अश्रुओ धूळमां।
जो अरज कबूल हो आटली, तो हृदयथी जाओ नयन सुधी।

- गनी दहींवाला

और परमात्मा की चेतना जब जगत में पहलीबार किसी माँ के उदर से आती है तो पहली दीक्षा उसके आंसू की दी जाती है। यदि बच्चा न रोया तो डोक्टर कहते हैं, रुलाया जाए। हम सबको पहली दीक्षा जो मिली है वो आंसूओं की मिली है। तो सात प्रकार के आंसू की चर्चा है 'रामचरित मानस' में।

तो बाप! 'बालकांड' है अवतार-दर्शन। 'अयोध्याकांड' है आघात-दर्शन, जो जीवन में हम समय-समय पर फेइस करते हैं। 'अरण्यकांड' तीसरा सोपान है वो आक्रमण-दर्शन है। उसमें आक्रमण का दर्शन हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति कहीं ना कहीं आक्रमण कर रहा है। सबसे पहला आक्रमण जयंत करता है। आक्रमण-दर्शन का आरंभ यहां से हुआ। माँ जानकी की चरण में वो चोंच मार करके भागता है। दूसरा आक्रमण 'अरण्यकांड' में होता है शूर्पणखा का आक्रमण। वो जानकी पर आक्रमण करने गई कि ये सीता है, तो मुझे राम नहीं प्राप्त हो रहे, मैं उसे खतम कर दूं। तीसरा आक्रमण है वो खर-दूषण, त्रिशरादि सेना का आक्रमण है जो राम पर आक्रमण करने के लिए तैयार हो जाती है। चौथा आक्रमण रावण ने अपनी भुजाओं को फैलाकर जानकी का अपहरण करना चाहा। पांचवां आक्रमण है उसी रावण पर जटायु ने आक्रमण कर दिया।

चौथा सोपान है 'किष्किन्धाकांड।' इसमें आदर्श राजनीति का दर्शन है। राजनीति अच्छी है कि बुरी है ये छोड़ो! आदर्श राजनीति का दर्शन 'किष्किन्धाकांड' में होता है। राजनीति का आदर्श होता है साम, दाम, दंड, भेद। जरूरत पड़े तो साम का उपयोग करो। जरूरत पड़े तो दाम का उपयोग करो। जरूरत पड़े तो दंड का उपयोग करो। जरूरत पड़े तो भेद का उपयोग करो। यहां भगवान राम एक राजा है। वन के राजा बनकर आए हैं; राजकुमार है। सुग्रीव के साथ मैत्री करने में भगवान राम सामनीति का प्रयोग करते हैं कि हम दोनों मिल जाए। एक समजौता कर ले कि मैं तेरा काम करूं, तू मेरा काम करे। एक समजौता, एक सामनीति। फिर दामनीति भी आई -

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राजपद दीन्हा।

ये सब दामनीति आई। दंडनीति भी आई जब सुग्रीव चुक गया परमात्मा का काम। चातुर्मास में भोग में डूब गया। राम को जो वचन दिया वो चुक गया तब परमात्मा ने दंडनीति का प्रयोग किया। जिस बाण से मैंने बाली को मारा, इस मूढ़ को भी मैं इसी बाण से खतम कर दूं, ये दंडनीति आई। और बाली के निर्वाण के प्रसंग में भेदनीति का प्रयोग हुआ है। राजकीय क्षेत्र में ये नीतियां होती है। आदर्श राजनीति का दर्शन भी 'मानस' में होता है।

'सुन्दरकांड' में है आश्वासन का दर्शन। एक-दूसरे को आश्वासन दिया जा रहा है। श्री हनुमानजी अपने मित्रों को आश्वासन देते हैं, दु:खी मत होना, फल-फूल खाना। मैं वापस आऊंगा, जीते रहना, ये ढाढस-आश्वासन देकर जाते हैं। श्री हनुमानजी विभीषण को भी आश्वासन देते हैं। विभीषण जब कहने लगा कि मैं असुर कुल में पैदा हुआ हूं तो हनुमानजी कहे, मैं कौन कुलीन जाति में हूं? मैं पशु, चंचल। मेरे पर यदि परमात्मा की कृपा हो सकती है तो तेरे पर क्यों नहीं? आश्वासन है ये। उसके बाद अशोकवाटिका में त्रिजटा भी जानकीजी को आश्वासन देती है। और मेरे हनुमानजी भी माँ जानकी को आश्वासन देते हैं कि धैर्य धारण करे। कुछ दिनों के बाद भगवान राम आएंगे। सब ठीक करेंगे। तो आश्वासन का दर्शन 'सुन्दरकांड' में दिखता है। 'लंकाकांड' में मेरी दृष्टि में आधि भौतिकता वैभव का दर्शन है। 'उत्तरकांड' मेरी दृष्टि में आध्यात्मिक-दर्शन का कांड है।

तो सात कांड इनमें से 'सुन्दरकांड' को इस कथा में केन्द्रित करेंगे। जिसमें पांच दर्शन, हनुमानजी की दृष्टि से लंका का दर्शन, अशोकवाटिका में जानकी का दर्शन, रावणदर्शन, विभीषण की दृष्टि से रामदर्शन और समुद्र की दृष्टि से फिर राघवदर्शन। तो ये है जिस विषय की चर्चा हम नव दिन करेंगे उसकी भूमिका 'मानस-सुन्दरकांड।'

पहले दिन की कथा में सदैव एक प्रवाही परंपरा का निर्वहण व्यासपीठ करती रही कि पहले दिन सद्ग्रंथ का परिचय दिया जाए। आप सब जानते हैं, ये ऐसा सद्ग्रंथ है जिसमें सात सोपान की व्यवस्था तुलसी ने की है। 'बाल', 'अयोध्या', 'अरण्य', 'किष्किन्धा', 'सुन्दर', 'लंका' और 'उत्तर।' 'बालकांड' के आरंभ में गोस्वामीजी सात मंत्र लिखते हैं। संस्कृत श्लोकों में मंगलाचरण करते हैं, वो भी सात है -

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

सात मंत्रों में पहले वाणीविनायक की वंदना, फिर शिव-पार्वती की वंदना, फिर परमगुरु के रूप में भगवान शिव की वंदना, आदि कवि वाल्मीकि और हनुमानजी महाराज को विशुद्ध विज्ञान विशारद कहके आपकी वंदना की। सीता-राम की संयुक्त वंदना की गई। और फिर इस ग्रंथ का हेतु बताते हुए कहा कि 'स्वान्त: सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा।' मेरे अंत:करण के सुख के लिए मैं भगवान रघुनाथ की कथा भाषा में उतार रहा हूं। लेकिन तुलसी का एक दृष्टिकोण था श्लोक को लोक तक पहुंचाने का। संस्कृत के प्रकांड विद्वान होते हुए उसने लोकबोली में शास्त्र उतारने का शिवसंकल्प किया। बिलकुल देहाती भाषा में, ग्राम्यगिरा में तुलसी ने पूरा शास्त्र उतारा। और पांच सोरठे में गोस्वामीजी ने जगद्गुरु आदि शंकराचार्य की पंचदेवों की जो धारणा सनातन धर्म के लिए उसकी स्थापना की।

तो गणेशवंदना, सूर्यवंदना, विष्णुवंदना, शिव की वंदना और माँ दुर्गा की वंदना-पंचदेवों की जगद्गुरु शंकराचार्य ने भी बात कही। उसको हम देवरूप में देखते हैं। देखना भी चाहिए लेकिन तात्त्विक रूप में भी देखे तो गणेशवंदना, विनय-विवेक को आवकार देना। सूर्यवंदना, प्रकाश में जीने का शिवसंकल्प। विष्णु की वंदना जीवन के विचारों को विशाल बनाना, संकीर्ण नहीं। मैंने आज सुबह ही विष्णुमंदिर के प्रांगण में हनुमानजी की एक बहुत ऊंची प्रतिमा स्थापित की गई देखी तो मैंने कहा कि मुझे अच्छा लग रहा है कि मेरा हनुमान मंदिर से मैदान में आ चुका है! मंदिर होने चाहिए। लेकिन मंदिर में देवता संकीर्ण होते गये संप्रदायवाद में! दीवारों में आबद्ध है! हनुमानजी बाहर आए, मैदान में आए। विशाल दृष्टिकोण और धीरे-धीरे आ रहा है।

एक ताजी घटना मैं आपको सुनाऊं। आजकल इस्लाम धर्म के भाई-बहनों के लिए रमजान चल रहा है और मेरी महफ़िल में तो सब आते हैं।

काबे से बुतकदे से कभी बज़्मे जाम से,
आवाज़ दे रहा हूं तुम्हें हर मकाम से।

एक बहन आई, मुस्लिम महिला। दो दिन पहले की घटना। खजूर ले आई। बोली, बापू, सत्ताईसवां रोजा होगा तभी तो आप केनेडा में होंगे। उसी रोज मेरा एक खजूर खा लोगे ना तो मेरा रमजान सफल हो जाएगा। तीस-पैंतीस साल की युवती थी। अकेली आई थी। कुछ लोग मेरे पास बैठे थे वो साक्षी है। बोली, बापू, मैं आपकी कथा बहुत सुनती हूं। और कोशिश करती हू सत्य, प्रेम, करुणा की डगर पर चलने की। लेकिन आखिरी बात उसने जो कही, मेरा इस्लामधर्म है, मैं रोजा कर रही हूं, लेकिन कथा सुनते-सुनते बहुत कुछ छूटा; एक दुआ करना, मेरा नोनवेज छूट जाए! ये महिला की मांग, मैं वेजिटेरियन हो जाऊं। जरा विनय से सोचो तो! एक मुस्लिम बेटी ऐसा बोल रही थी। शायद वो सुनती होगी मुझे आज भी, क्योंकि बड़ी पुरानी श्रोता निकली। मुझे पता भी नहीं! मैंने कहा है उसको, वादा किया है कि सत्ताईसवें रोजे पे केनेडा में टोरंटो में मैं उसकी खजूर खाऊंगा। दृष्टिकोण विशाल रखो। देवता को मैदान में लाओ। मैं मंदिर की मना न करूं। मंदिर जरूरी है। उसमें हमारी आस्था वो भी जरूरी है। लेकिन संकीर्णता मिटनी चाहिए। उसको कहते हैं विष्णुपूजा। विशाल दृष्टि। शंकर का अभिषेक मानी सबके लिए शुभ सोचना, सबका शुभ हो। और माँ दुर्गा की स्तुति मानी हमारी गुणातीत श्रद्धा बनी रहे। हमारी श्रद्धा कायम रहे। जलनसाहब को याद करूं, रमजान चल रहे हैं।

श्रद्धानो हो विषय तो पुरावानी शी जरूर?
कुर्रानमां तो क्यांय पयम्बरनी सही नथी.

तो बाप! पांच देवों की वंदना की गई। उसके बाद गोस्वामीजी गुरुवंदना करते हैं। 'रामचरित मानस' का पहला प्रकरण है गुरुवंदना। जिसको मेरी व्यासपीठ

'सुन्दरकांड' 'रामचरित मानस' के सप्तकांड में पंचम सोपान है। इसमें पांच दर्शन है। एक श्री हनुमानजी का लंक-दर्शन। उसने लंका को किस दृष्टि से देखा। दूसरा दर्शन मेरे हनुमानजी की आंखों में अशोकवाटिका में माँ सीता-दर्शन। तीसरा दर्शन है श्री हनुमानजी का दशानन-दर्शन। रावण भी दर्शन का विषय बन सकता है, यदि दृष्टिकोण हो तो। चौथा दर्शन है विभीषण का राम-दर्शन। जब विभीषण राम की शरण में आया और उसने राम का जो दर्शन पाया वो मेरी समझ में चौथा दर्शन है। पांचवां दर्शन है समुद्र की जड़ दृष्टि में भगवान राम का दर्शन।

'मानस-गुरुगीता' कहती है। कुछ विचारधारा ऐसी भी है जो गुरुपद को नहीं कुबूल करती। आप सीधे परमतत्त्व को प्राप्त कर सकते हैं, स्वागत! लेकिन हमारे जैसों को कोई न कोई गुरु की जरूरत है। कोई चाहिए मार्गदर्शक। जहां हमारी आंख न देख पाए तब किसी आंखवालों के मार्गदर्शन में जीना होगा। सब हम नहीं समझ पाएंगे। कोई चाहिए, जिसने देखा है, जिसने जाना है, जिसने पाया भी है। ऐसे बुद्धत्व की यहां वंदना है, ऐसे गुरुपद की वंदना है। किसी नर में गुरु का दर्शन भी हमारे यहां व्यक्तिपूजा माना गया है। किसी व्यक्ति में गुरु का दर्शन ये ठीक नहीं माना गया, लेकिन गुरु को व्यक्ति मानना ये भी अपराध है। गुरु व्यक्ति नहीं है। गुरु का शरीर तो हमारे जैसा होता है, लेकिन कुछ आध्यात्मिक पंचतत्त्व गुरु के शरीर में होते हैं, जो हमारे जैसों के शरीर में नहीं है। पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश ये पांचों से हमारी बोडी बनी है। ये तो विज्ञान भी सिद्ध करता है। लेकिन गुरु में आध्यात्मिक दृष्टि से पांच कुछ विलक्षण तत्त्व होते हैं उसको मेरी व्यासपीठ गुरु कहना चाहती है।

गुरु की मूर्ति कैसे बने? पांच सूत्र याद रखना मेरे भाई-बहन, मेरी समझ में जो आया वो मैं कहूं। मैं प्रवाही गुरुपरंपरा को माननेवाला आदमी हूं। पहला सूत्र, गुरु है भजनमूर्ति। भजनमूर्ति का नाम है गुरु। 'जेने सदाय भजननो आहार।' गुरु है भजनमूर्ति। दूसरों के लिए शुभचिंतन करो वो भी भजन है। अच्छा सोचो वो भजन है। तो गुरु होता है भजनमूर्ति। दूसरा गुरु होता है सत्यमूर्ति। तीसरा गुरु होता है प्रेममूर्ति। गुरु होता है करुणामूर्ति। गुरु होता है अनुभवमूर्ति। तो गुरु है भजनमूर्ति, सत्यमूर्ति, प्रेममूर्ति, करुणामूर्ति, अनुभवमूर्ति। भजनमूर्ति है आकाशतत्त्व, नभतत्त्व। सत्यमूर्ति है तेजतत्त्व। प्रेममूर्ति है जलतत्त्व, अस्तित्व का तीसरा तत्त्व। करुणामूर्ति है पृथ्वीतत्त्व। पृथ्वी करुणामय है। अनुभवमूर्ति है वायु। आंतर-बाह्य जो ज्यादा से ज्यादा अनुभव करता हो तो वो पवन है। बाहर भी गरम हवा-ठंडी हवा और भीतर भी; उसको पवन को अनुभवमूर्ति कहते हैं। और ये पंचमूर्ति से बना कोई बुद्धपुरुष गुरु कहलाता है। ऐसे गुरु की वंदना गोस्वामीजी ने की। कहा कि गुरु की चरणरज को मेरा नेत्रांजन बनाकरके मैं 'रामचरित मानस' गाने जा रहा हूं, लेकिन जैसे ही गुरु चरणरज से आंखें दिव्य हुई ही तुलसी के लिए पूरा जगत वंदनीय हो गया, रामरूप हो गया। सबकी वंदना करने लगे तुलसी। सबसे पहले पृथ्वी के देवता ब्राह्मणों की वंदना की। उसके बाद सज्जन समाज की वंदना की। उसके बाद साधु की वंदना की। उसके बाद साधुचरित लोगों की वंदना की। फिर असाधुओं, दुर्जनों की वंदना की। सबमें हरि दिखने लगा। आखिर में तुलसी ने कह दिया -

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

तुलसी को पूरा ब्रह्मांड, पूरा जगत राममय दिखने लगा। सब ब्रह्म है, सब ब्रह्ममय हो गया। जैसे नरसिंह मेहता कहता है, 'ब्रह्म लटकां करे ब्रह्म पासे।' गुरुचरणरज से ये होता है। तुलसी कहते हैं, मुझे सब में प्रभु दिखने लगे। अपनी दिव्यानुभूति रखते हुए गोस्वामीजी 'रामचरित मानस' में बिलग-बिलग वंदना का प्रकरण उठाते हैं। माँ कौशल्यादि माताओं की वंदना गोस्वामीजी ने की। फिर दशरथजी की वंदना की, फिर जनक महाराज की वंदना की। फिर भरतजी की वंदना की। शत्रुघ्न महाराज, लक्ष्मणजी की वंदना की। और बीच में श्री हनुमानजी की वंदना की।

महाबीर बिनवउँ हनुमाना।
राम जासु जस आप बखाना।।
प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।।

श्री हनुमानजी की वंदना गोस्वामीजी ने की। तो ये वंदना नितांत और अनिवार्य मानी जाती है। आईए, 'विनयपत्रिका' की प्रसिद्ध पंक्तियों से हनुमानजी की वंदना करें -

मंगल-मूरति मारुत-नंदन। सकल अमंगल मूल-निकंदन।।
पवनतनय संतन-हितकारी। हृदय बिराजत अवध-बिहारी।।

तो ये वंदना प्रकरण के क्रम में तुलसीजी ने श्री हनुमानजी महाराज की वंदना की है। तो मेरे भाई-बहन, श्री हनुमानजी महाराज का आश्रय करिएगा। मेरी बात यदि मानते हैं तो कोई बंधन, कोई नियम की जरूरत नहीं है। कभी भी हनुमानजी की साधना कर सकते हैं। हनुमानजी की क्लिष्ट साधना में मत जाना; तांत्रिक साधना में भी मत जाना। जहां तक संभव हो अपने घरों में भी विकराळ देवताओं की तसवीरें मत रखो। तुम्हारे बच्चों की मानसिकता पे असर करेगी। श्री हनुमानजी महाराज की शरण रखिएगा। संकट की मात्रा कम होगी। प्रारब्ध में और नियति में जो है वो तो भोगना ही पड़ेगा, लेकिन मात्रा कम होगी। तो 'हनुमानचालीसा' का आश्रय करो तो चोट कम लगेगी। 'संकट से हनुमान छुड़ावै।' आज की कथा को हनुमंतवंदना के साथ मैं विराम की ओर ले चलूं।

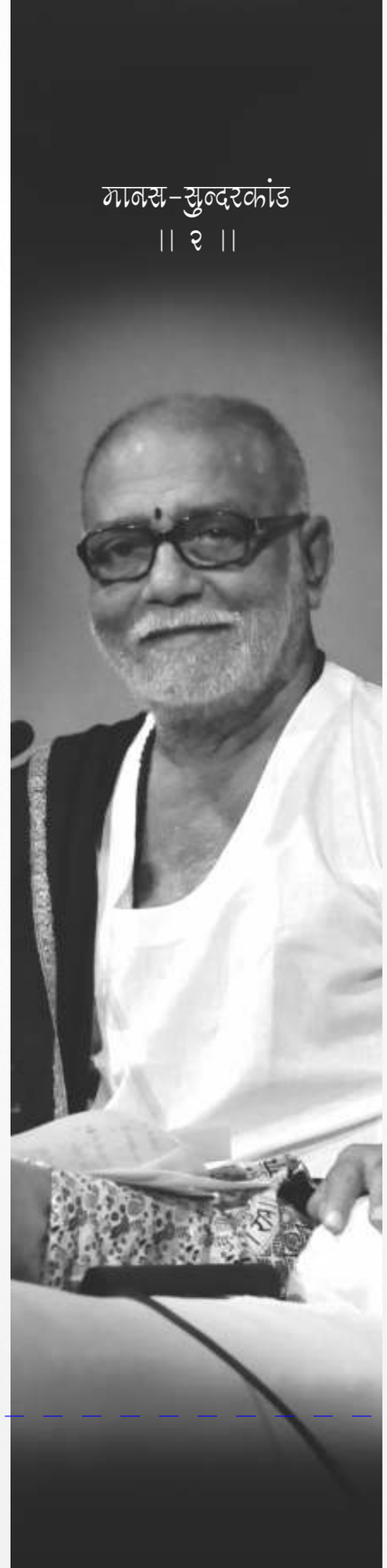

स्पर्धा से विकास होगा, विश्राम नहीं मिलेगा

'मानस-सुन्दरकांड', जो इस कथा का केन्द्रीय विचार है। उसमें हम प्रवेश करें धीरे-धीरे। बहुत-सी जिज्ञासाएं हैं, जो यथासमय-यथासमझ आपसे बात करने की कोशिश करूंगा। लेकिन इससे पहले -

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम्।।

तीन मंत्रों में गोस्वामीजी ने 'सुन्दरकांड' के आरंभ में मंगलाचरण किया है। 'सुन्दरकांड' के पहले मंत्र में भगवान राम का स्मरण है। और तीसरे मंत्र में श्री हनुमानजी महाराज का स्मरण है। मेरी गिनती के मुताबिक दोनों में भगवान के ग्यारह और भक्त के सात लक्षणों का जिक्र है। अठारह गो का वर्णन है। और दोनों के मध्य में एक मांग है। मेरे युवान भाई-बहन, हम जीव हैं, मांग करते रहते हैं। करो, लेकिन इधर-उधर मत करो। भक्त और भगवान के बीच में मांग रखो। या तो वो पूरी करे या तो वो पूरी करेगा। पहली जिम्मेवारी भगवान की है। यदि वो चुक जाए तो हनुमान बैठा है। इर्द-गिर्द मांगकर कोई फायदा नहीं। क्योंकि सब मांगन ही तो बैठे हैं! सब मांगनेवाले हैं! हम सब भिखारी हैं! भगवान के ग्यारह लक्षणों की चर्चा हैं। मेरे हनुमानजी के सात लक्षणों की चर्चा हैं मेरी गिनती में।

आज मेरे फ्लावर ने पूछा है। मेरे सब फ्लावर है, फोलोअर्स नहीं। बहुत अच्छा पूछा है। इंग्लिश में एक भाई ने पत्र लिखा है, 'Bapu, What is difference between कर्मवादी एन्ड धर्मवादी?' There is no difference between कर्मवादी और धर्मवादी। कर्म ही धर्म हैं, धर्म ही कर्म है। अकर्मण्य धर्म नहीं, अधर्म है। तुम मंदिरों में भोग लगाते रहो और गरीब बच्चों को खाना न खिलाओ तो तुम्हारा धर्म सोया हुआ धर्म है। स्लिपिंग रिलिजस है। बेहोशीभरा आपका धर्म। मेरे फ्लावर, धर्म ही कर्म है, कर्म ही धर्म है। धर्ममीमांसा और कर्ममीमांसा एक ट्रेक है। जुगपद निर्वाह करना चाहिए। मेरी बोली में कहूं तो धर्म है नृत्य और कर्म है कृत्य। कृत्य और नृत्य के ट्रेक पर जो युवानी चलेगी वो कृतकृत्य हो जाएगी। एक ओर कृत्य, एक ओर नृत्य। नाचे नहीं वो धर्म काहे का?

बीच में एक प्रश्न है इंग्लिश में। 'What is the purpose to be here for in this world?' मेरा यहां होने का पर्पज़ क्या है? एक फ्लावर पूछा रहा है। आपका पर्पज़ क्या है, मुझे कुछ पता नहीं! मेरा यहां होने का पर्पज़ है गाना, नाचना, एन्जोय करना और हरिनाम लेना। पूरा यही पर्पज़ है। आप आपकी जानो!

पग घुंघरू बांध मीरां नाची रे ...

और ध्यान देना चाहिए, नाच वो सकता है जो स्वस्थ है। नादुरस्त नृत्य नहीं कर सकता। नादुरस्त कृत्य भी नहीं कर सकता। और नादुरस्त कभी अपने जीवन में

कृतकृत्य नहीं हो सकता। चैतन्य नाचा, मीरां नाची, मेरा नारद नाचा, मेरा अभी शांत बैठा हुआ हनुमान नाचा। 'विनयपत्रिका' में लिखा है, हनुमान नर्तक है, नृत्यकारी है। मेरा नटराज, महादेव नृत्य करता है। और मेरा रासरासेश्वर भगवान कृष्ण नृत्य करता है। नृत्य होना चाहिए जीवन में। मेरा पर्पज़ यही है। तंदुरस्त आदमी नृत्य कर सकता है, नादुरस्त नहीं। और तंदुरस्त कौन? दूसरों को देखकर जिसको ईर्ष्या न आए, द्वेष न आए वो तंदुरस्त। तंदुरस्ती की परिभाषा क्या है? दूसरों के सुख को, दूसरों के प्रोग्रेस को, दूसरों की पीस को देखकर जिसको जलन न हो, वो तंदुरस्त। येन केन प्रकारे हमारा स्वरूप आनंद है। 'आनंद आमार गोत्र, उत्सव आमार जाति।'-कविवर रवीन्द्रनाथ टागोर।

हमारा गोत्र अच्युत है, जो च्युत न हो। अभंग गोत्र है। जो कृष्ण का गोत्र है। मैं बड़भागी हूं कि जितनी वस्तु कृष्ण को लागू पड़ती है वो तलगाजरडा को लागू पड़ रही है। कृष्ण का वेद सामवेद। कृष्ण ने कहा, वेदों में सामवेद मैं हूं। कृष्ण का गोत्र अच्युत गोत्र। कृष्ण गांव में रहा। तलगाजरडा गांव है। कृष्ण नाचा, मैं भी नाचता हूं। मेरी नाचने की अपनी अदा है।

जनक जनक तोरी बाजे पायलियां...

पूछा हैं एक फ्लावर ने क्योंकि लोग समझते हैं, बापू के बहुत फोलोअर्स हैं। फोलोअर्स तो आदमी को कृपण कर देते हैं। फ्लावर आदमी की पहचान को खिला देता है। मेरे सब फ्लावर्स है, कोई फोलोअर्स नहीं। मेरा कोई फोलोअर्स, कोई ग्रूप नहीं। मेरी कोई संस्था नहीं। कोई दीवार नहीं। तो मेरा पर्पज़ यही है। आओ, आनंद करो, हरिनाम लो, नाचो, गाओ। हम नादुरस्त है इसीलिए नाच नहीं सकते। तथाकथित धर्मावलंबी भी अंदर से बिलकुल नादुरस्त है। इसलिए चिढ़-चिढ़ कर कहते हैं, तुम पापी हो, तुम ये हो, तुम ये हो!

युवान भाई-बहन, यही मेरी एक ही बात है प्यारो, इर्ष्या छोड़ो, द्वेष छोड़ो, निंदा छोड़ो। काम छोड़ने की जरूरत नहीं। काम जीवन की जरूरत है। ये मोरारिबापू बोल रहा है व्यासपीठ से। सम्यक् काम जरूरी है। सम्यक् क्रोध जरूरी है। सम्यक् लोभ जरूरी है। मुझे बताओ, इर्ष्या की जरूरत है? आप इतनी माला फेरते हो, इतने पाठ करते हो, गाते हुए 'रामायण' करते हो, अखंड 'रामायण' का पाठ करते हो, तुम्हारी इर्ष्या गई? Please, I want your answer. मेरा पर्पज़ यही है, 'संगच्छध्वम्।' मेरे भगवान वेद ने कहा था, 'संगच्छध्वम्।' तुम साथ-साथ स्टेप लो। पर्पज़ क्या है? हमारे एक बहुत समर्थ, हमारे गुजराती साहित्यजगत की बड़ी हस्ती राजेन्द्र शाह साहब, उसने गुजराती गीत लिखा -

निरुद्देशे,

संसारे मुज मुग्ध भ्रमण पांशु मलिन वेशे...

निरंजन भगत कहते हैं-

हुं तो बस फरवा आव्यो छुं.

हुं क्यां एके काम तमारुं के मारुं करवा आव्यो छुं?

तो क्या पर्पज़ मेरे भाई-बहन? सात्त्विक भोजन करो। अच्छे, सात्त्विक और मर्यादापूर्ण कपड़े पहनो। एन्जोय करो। और नादुरस्त आदमी नाच नहीं सकता। तंदुरस्त आदमी नाचेगा तो मंच की मर्यादा कभी नहीं छोड़ेगा। मर्यादा अपनेआप आयेगी। घुंघरू भले न बांधी हो, लेकिन देश की सभ्यता, विनय और विवेक के घुंघरू उसके पैरों को पकड़े रहते हैं।

'What is purpose to be here in this world और why he send me here ?' उसने मुझे यहां क्यों भेजा? उसको तुम्हारे पर करुणा आई। क्यों भेजा उसके पीछे उसकी करुणा है। हम और आप लायक नहीं थे। इतनी प्यारी पृथ्वी पर हम जैसों को भेजना, निंदाखोरों को भेजना ये ठीक नहीं था। इर्ष्याखोरों को भेजना ये ठीक नहीं था। द्वेष से भरे हुए लोगों को यहां भेजना ठीक नहीं था। लेकिन ये करुणा थी। परमात्मा ने हमको यहां भेजे हैं करुणा करके। मानव देह दिया है, उनकी करुणा है, उनकी ये भेंट है, बड़ी सौगाद है। तो आपने जो पूछा, 'What is difference between कर्मवादी एन्ड धर्मवादी?' तो ये दो नहीं है, एक ही है। कर्म-धर्म को बिलग मत करो। हमारे यहां धर्मशास्त्र भी है, कर्मशास्त्र भी है। कर्ममीमांसा भी है, धर्ममीमांसा भी है। इसको मेरी व्यासपीठ कहती है नृत्य और कृत्य। समांतर चले।

तो मेरे भाई-बहन, जो कुछ आपके प्रश्न है। हमारे किरणभाई के परिवार को कह रहे थे कि हम हमारे संतानों को अपनी लेंग्वेज नहीं दे पाए; हमारे ग्रान्ड बच्चों को जरूर अपनी लेंग्वेज देकर जाएंगे। ये बड़ी प्यारी बात हैं। उसको देना चाहिए। और युवकों को चाहिए कि अपने पेरेन्ट्स से शिकायत करे कि आपने हमको हमारी लेंग्वेज क्यों नहीं दी? प्यार से देते तो सीख जाते। बोलते, जरूर बोलते। इंग्लिश की आलोचना नहीं है। इंग्लिश बड़ी प्यारी भाषा है। आप कितना सुंदर बोलते हैं! मुझे अच्छा लगता है जब आप बोलते हैं। अपनी भाषा को संभाले। ये भाषा अपने परिवारों में संभाले रखिएगा।

बहुत अच्छा प्रश्न, सुनिएगा, ''बापु, आपे काले कह्युं के घरमां आक्रमक देवी-देवतानी मूर्ति राखवी नहीं। बाळकोनी मानसिकता बगडे। तो बापु, घरमां बधा ज सौम्यस्वरूप देवी-देवता राखीए छीओ पण सासु-ससरा ज आक्रमक छे, एनुं अमारे शुं करवुं?'' ऐसे आक्रमक जीवंत चित्रों को मेरी कथा में भेज दीजिए। मैं थोड़ा ठीक करने की कोशिश करूंगा। Not promise but I will try, I will try, I will try. बाप! बुज़ुर्ग सास-ससुर अथवा माता-पिता आक्रमक स्वभाव रखते हो तो पुत्र या तो पुत्रवधू को दंडकारण्य या नैमिषारण्य जाकर तपस्या करने की जरूरत नहीं। इन बुज़ुर्गों को थोड़ा मुस्कुराते हुए सह लो यही तपस्या है। बाप! युवान भाई-बहनों का कर्तव्य है, यदि माता-पिता, सास-ससुर थोड़े आक्रमक है, स्वभाव भी ऐसा कुछ कर देता है, ऐसे समय में थोड़ा सहन कर लो। थोड़ा तपो। तुम्हारे लिए उसने बहुत तपस्या की है। ये मत भूलो। तो यदि घर में कोई आक्रमक पात्र है, भेज दीजिए कथा में। लेकिन मैं सफल न होउं तो भी तीन घंटे तो आपको शांति मिलेगी मेरे पास छोड़ जाओगे तो। इतना तो हो सकता है। आपके सब प्रश्न मैंने ले लिए। शोभितभाई, एक गज़ल सुनिए -

अमीरे-शहर कहता है जमाना मुझसे चलता है।

पर उसकी बात को सुनकर फ़कीरे-दस्त हंसता है।

धनवान लोग कहते हैं कि ये जमाना हमसे चलता है, हम चला रहे हैं, लेकिन कोई फ़कीर, कोई संत-साधु उस पर खुलकर हंसते हैं, क्या मूढ़, क्या बेहोशी में जी रहा है! छोड़ ये गर्व। एक शे'र ओर सुन लीजिए, बहुत प्यारा है -

अजब काजल मेरी आंखों में तूने ये लगा डाला,

कोई चेहरा हो कैसा भी मुझे सुंदर ही लगता है।

- राज कौशिक

तो भगवान के कुछ लक्षण हैं उसमें पहला लक्षण गोस्वामीजी 'सुन्दरकांड' के मंगलाचरण में कहते हैं, 'शान्तम्'; हरि कौन? राम कौन? ईश्वर कौन? जो शांत है। उसको इस तरह से भी लो कि जो शांत है, वो भगवान है। किसी भी बात में जो विक्षिप्त न हो जाए उसको हम भगवान कह सकते हैं। 'शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं', जो अनंत है, शाश्वत है वो परमात्मा है। जो शाश्वत है, जिसका व्यर्थ गिर गया है और सार्थक चिरंजीवी बन गया है, उसको ईश्वर कहते हैं। 'अप्रमेयम्', जिसको प्रमाणित न किया जाय, किसी भी मुद्दों से जिसको इति सिद्धम् न किया जाय, वो है परमात्मा। 'नेति' के सिवा कोई चारा नहीं रह जाता उसको कहते हैं राम। और किसी व्यक्ति के बारे में भी आप निर्णय न कर सको कि यह क्या रहस्य है, क्या है, ऐसा कोई बुद्धपुरुष हरि है। 'अनघं', जो निष्पाप है वो है ईश्वर। ईश्वर निष्पाप है, जो निष्पाप है वो ईश्वर है। 'निर्वाणशान्तिप्रदम्'; शांति प्रदान करनेवाला निर्वाण का जो दाता है वो है परमात्मा। 'ब्रह्माशम्भुफणीन्द्र-सेव्यमनिशं', ब्रह्मा, शंभु और शेष तीनों के द्वारा जो सेवित है वो है राम। जो ईश्वर है वो राम। 'वेदान्तवेद्यं विभुम्।' वेदांत के द्वारा जिस व्यापक को जाना जा सकता है। वेदांतवेद्य है परमात्मा।

रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं

वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम्।।

सुरगुरु है, रामाख्य है। माया का आश्रय लेकर जो मनुष्य के रूप में आया है। ईश्वर के लिए भी ये नियम है कि जगत में जब अवतार लेना होता है तो उसको भी माया का सहारा लेना पड़ता है। यद्यपि माया उसके आधीन रहती है। माया ईश्वर को पराधीन नहीं कर सकती। हरि का एक अर्थ है, आश्रय करनेवाले के दुःख को हरनेवाला। हे करुणा करनेवाला, मैं आपको प्रणाम करता हूं। विश्व के तमाम राजा-महाराजाओं के चूडामणि, हे रघुवर, मैं आपको प्रणाम करता हूं। उसके बाद के मंत्र में कहते हैं-

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये

सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।

भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे

कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च।।

हे परमात्मा, तू ईश्वर है, मुझे कोई अन्य स्पृहा नहीं है, कोई तृष्णा नहीं। 'सत्यम् वदामि।' शपथ ले रहे हैं तुलसी, मैं सत्य कहता हूं, कोई स्पृहा नहीं। और यदि मैं झूठ बोलूं तो हे ईश्वर, तू अखिल अन्तरात्मा है। 'भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे।' मुझे ऐसी भक्ति दे, निर्भर भक्ति दे, मैं जगत में किसी के आधार पर न जीऊं, केवल तेरे आधार पर जीऊं। निर्भर भक्ति तू प्रदान कर। 'कामादिदोष रहितं कुरु मानसं च।' कामादि दोष को मैं त्याग कर इससे मुक्त नहीं हो पाउंगा। काम आदि दोष मेरे में है, वो यदि तुझे ठीक न लगते हो तो तू निकाल दे। जैसे एक बालक के भीगे कपड़े को माँ निकाल देती है, बच्चा नहीं निकाल पाता। मेरे कुछ ऐसे दोष हो तो हरि, तू मिटा दे, मेरे से नहीं मिटेगा। तू निकाल तो निकले। तू मेरी बाजी बना। और फिर श्री हनुमानजी के गुणों की चर्चा की।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं

दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

'अतुलितबलधामं', जिसमें अतुलित बल है, जिसका बल किसीसे तोला नहीं जाता। अतुलनीय बल, बलराशि है, ऐसे मेरे हनुमान। 'हेमशैलाभदेहं', स्वर्ण का देह है हनुमान का। स्वर्णिम् है तू। जिसको कभी जंग न लगे ऐसा तू है। 'दनुजवनकृशानुं', दनुज, असुर, दुरित; उसके जंगल को जलाने में तू अग्नि है। जिसको तू जला देता है। 'ज्ञानिनामग्रगण्यम्।' ज्ञानियों में तू अग्रणी है। तेरे से आगे कोई ज्ञानी नहीं। थक गए तुलसीजी गुणों की चर्चा करते, आखिर में कह दिया, 'सकलगुणनिधानं', जाओ, आप समस्त गुणों के मंदिर हो। 'वानराणामधीशं', वानरों के आप अधीश है। 'रघुपतिप्रिय भक्तं वातजातं नमामि।' रघुपति के तो बहुत भक्त है, लेकिन आप रघुपति के अत्यंत प्रिय भक्त है। ऐसे हे पवनपुत्र, मैं आपको नमन करता हूं। तीन मंत्रों में तुलसी ने 'सुन्दरकांड' का मंगलाचरण किया। तो भगवान के गुण और भक्त के गुण उसके बीच में तुलसीजी ने छोटी-सी अरजी लगा दी। मांगना है तो ये दोनों के पास मांगना अथवा तो दोनों के बीच में अपनी मांग रखना। या तो ये पूरी करे या तो वो पूरी करे। दुनिया से क्या मांगना? क्योंकि स्वयं दुनिया मांग रही है! हम सब भिखमंगे तो है! कौन सम्राट? तो श्री हनुमानजी और भक्त दोनों के बीच में निर्भर भक्ति की तुलसीदासजी ने मांग की।

तो मेरे भाई-बहन, 'रामचरित मानस' के 'सुन्दरकांड' का मंगलाचरण हमें यही सीख देता है कि दोनों के बीच यदि तुम्हारी कोई मांग है तो जरूर मांगो। मेरे पास कई लोग आते हैं, बापू, आप कथा में कहते हैं, मांगना नहीं चाहिए। हां, बिलकुल, मांगना नहीं चाहिए। मैं तो वहां तक मानता हूं कि ईश्वर से भी नहीं मांगना चाहिए, वो अंतर्यामी है। जानता है। उसको लिस्ट देने की जरूरत नहीं!

गालिब न कर हुज़ुर में बार-बार अरज,
जाहिर है तेरा हाल उनको कहे बगैर।

वो जानता है। अखिलान्तरात्मा है। मैं इस पक्ष का हूं कि ईश्वर से भी न मांगे। लेकिन हम जीव है, मांगे बिना नहीं रह सकते तो कम से कम अपने सद्गुरु से मांगे या तो परमात्मा से मांगे। अन्यत्र क्यों मांगे, क्यों मांगे? तो भक्त और भगवंत के बीच ये मांग मुझे अच्छी लगती है। इधर-उधर मत मांगो। मांगना हो तो प्रभु से मांगे। जो कहना है, हरि से कहे। तो तीन मंत्रों में मंगलाचरण किया। और फिर 'सुन्दरकांड' का आरंभ करते हैं, जिनमें पहला दर्शन है हनुमानजी की आंखों से लंकदर्शन। इन पंक्तियों से 'सुन्दरकांड' का आरंभ होता है -

जामवंत के बचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

जामवंत के सुहावने वचन सुनकर हनुमानजी को हृदय में बहुत अच्छा लगा। सीताजी अशोकवाटिका में है, अशोक नामक वृक्ष के नीचे। इस बंदर की मंडली को संपाति मार्गदर्शन देता है कि जानकी अशोकवृक्ष के नीचे लंका में बैठी है। मैं गीध हूं, मेरी दृष्टि अपार है। आंख सबल है, पांख नहीं है कि उड़कर आपके साथ आकर आपको मदद करूं लेकिन मेरी दृष्टि अपार है। मैं यहां से देख रहा हूं। हम देख न पाए तो जो देख सकता है उसकी दृष्टि पर भरोसा करना चाहिए। सबने पार जाने का संशय प्रकट किया। हनुमान है बिलकुल चुप। हनुमानजी के पास आकर जामवंत ने कहा, हे बलवान, हे परम विभूति बजरंगी, तुम चुप क्यों हो? जब जानकी की खोज की यात्रा शुरू हुई तो हनुमानजी पीछे रहे। और जानकी के पास पहुंचने की बात आई तो हनुमानजी चुप रहे। हनुमान कौन? जो सबसे आगे रहने के अधिकारी होते हुए भी दूसरों को आगे करे कि तुम पहले चलो, तुम आगे बढ़ो। हम ये नहीं कर सकते। स्पर्धा नहीं है हनुमान में। हनुमान में श्रद्धा है, स्पर्धा नहीं।

मेरे भाई-बहन, आप स्पर्धा करोगे तो विकास होगा, विश्राम नहीं मिलेगा। मैं कुबूल करता हूं कि स्पर्धा करो तो विकास होगा, विश्राम का क्या? विश्राम नहीं होगा। विकसित तो हो जाओगे, आराम नहीं ले पाओगे। आदमी को चाहिए विश्राम। स्पर्धा में जो जाएगा उसमें दो विकृत गुण प्रगट होंगे। एक तो रजोगुण प्रगट होता है। दूसरा तमोगुण प्रगट होता है। रजोगुण और तमोगुण दोनों मिल जाते हैं, आदमी को विश्राम कैसे मिलेगा? श्री हनुमानजी सबको आगे करते हैं। सब से अंत में हनुमानजी श्री रामजी के पास आते हैं, प्रणाम करते हैं और कार्य हनुमान ही करेगा, ऐसा जानकर प्रभु ने हनुमान को निकट बुलाया। हनुमान, ये मेरी मुद्रिका ले, जानकी को निशानी में देना। श्री हनुमानजी हर जगह पीछे रहते हैं। और जो भक्ति की खोज करता है, शांति की खोज करता है, वो आगे-आगे नहीं कूद पड़ता। वो सदैव पीछे रहता है। हनुमानजी 'पवनतनय बल पवन समाना।' और केवल बल ही नहीं, बुद्धि। केवल बल हो, बुद्धि न हो तो? बुद्धि भी है और बुद्धि भी हो और विवेक न हो तो? रेशनालिझम का एक शब्द है, 'विवेकबुद्धि' ये तुलसीदासजी यहां जोड़ते हैं, बहुत साल पहले। 'बुधि बिबेक बिग्यान निधाना।' आप प्रयोग करते हैं तो विज्ञान निधान है। आप से क्या नहीं हो सकता? हनुमानजी को आह्वान किया, आपका जीवन ही तो राम के लिए है। सुनते ही बाबा पर्वताकार हो गए! महाराज, मुझे उचित सिखावन दो कि मुझे जाकर क्या करना है? प्रत्येक युवानों को रामकार्य करना है, लेकिन बुज़ुर्ग जामवंतों से मार्गदर्शन भी लेना है। हृदय में रघुनाथजी को स्थापित करके, मित्रों को प्रणाम करते हुए हनुमानजी अब निकलते हैं। यात्रा का आरंभ हो रहा है।

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर।
कौतुक कूदि चढ़ेउ ता उपर।।

'सुन्दरकांड' का 'सुंदर' शब्द का आरंभ यहां से हो रहा है। अगल-बगल में पहाड़ तो कई थे। युवान भाई-बहन, कूदना है तो सुंदरता के शिखर पर जाना, असुंदरता के शिखर मत कूदना। ओर तो कहीं पहाड़ थे लेकिन हनुमानजी का लक्ष्य है सुंदरता, 'सुन्दरकांड' लक्ष्य है। 'सुंदर सुंदरी सीता।' 'सुन्दरकांड' में सीता सुंदर है। ऐसी सीता उसका लक्ष्य है, शांति उसका लक्ष है। शांति सुंदर है, भक्ति सुंदर है। तो लक्ष्य सुंदरता है। कौतुक में हनुमानजी छलांग लगाकर ऊपर चढ़ गए। किसी ऊंचाई पर जाने में समय लगता है, लेकिन तुम्हारा लक्ष्य यदि ऊंचाई का सुंदर है तो खेल-खेल में आप चढ़ जाओगे। और उपर चढ़ गए, कौन सुंदरता? 'सुंदरता कहु सुंदर करइ।' जानकी सुंदरता को भी सुंदर कर देती है। तो जानकी तक जाना है। कौतुक में आदमी शिखर सर कर लेता है। छलांग भरने का कोई श्रम नहीं। लेकिन ये सब हो जाने के बाद भी बहुत ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं अहंकार न आ जाए। इसलिए 'बार बार रघुबीर संभारी...' रामस्मरण आदमी नहीं चुक रहा है। और जैसे भगवान का अमोध बाण सारंग से छूटे, हनुमानजी उसी तरह निकले। लेकिन आकाश में परमात्मा की कृपा से उड़ान मिल जाए तो भी जमीन पर चलने के जो आदती है वो भूलना मत। चलना, जमीन छोड़ना मत। अल्लाह ने ऊंचाई दी हो तो भी उड़ान के कारण हम जमीन की बात न छोड़े। जलनिधि समुद्र को हुआ कि रघुबीर का दूत निकला है। अब उसका स्वागत कैसे किया जाए? तो रघुवीर के दूत को समझकर समंदर ने अपने तले पर मैनाक नामक जो पर्वत था उसको कहा कि तू बाहर आ। और हनुमानजी को थोड़ी देर के लिए विश्राम दे। और एकदम चमकते हुए सोने का पहाड़ बाहर आया। मैनाक ने प्रार्थना की, रामदूत, आप थोड़ी देर विश्राम करे, स्नान करिए, फल-फूल खाईए। फिर आगे यात्रा करिए। हमें सेवा का मौका दो।

युवानों को रामकार्य करना है और बीच में कोई यात्रा रोके तो उपेक्षा नहीं करनी, अविवेक नहीं करना। हनुमानजी ने क्या कहा? नीचे आये और मैनाक के सिर पर हाथ रखा कि ले भाई, मैंने तेरा आवकार कुबूल कर लिया। हनुमानजी ने उसको स्पर्शा। लेकिन हनुमानजी ने कहा, राम का कार्य किए बिना मुझे विश्राम कहां? मैं नहीं कर पाऊंगा। संतों से मैंने सुना कि भक्ति की खोज करने जो व्यक्ति निकलता है उसका पहला विघ्न है स्वर्ण का प्रलोभन। श्री हनुमानजी ने उपेक्षा भी नहीं की और स्वर्ण में ग्रसित भी नहीं हुए। केवल स्पर्श कर दिया। कई लोग कहते हैं, हम सोने को छूते नहीं। हनुमानजी जैसा कोई वैरागी है? उसने सोने को छूआ। तुम्हारे मन में आसक्ति नहीं तो छूने में क्या तकलीफ़ है? राम के कार्य के बिना मुझे विश्राम नहीं, ऐसा कहकर हनुमानजी पहले विघ्न को पार कर जाते हैं। जो भक्ति के लिए उड़ान भरता है उसका पहला विघ्न सोने का प्रलोभन।

तो श्री हनुमानजी प्रलोभन से पार हो गए। और उसके बाद दूसरा विघ्न आया। सुरसा नामक एक सर्पों की माता, देवताओं ने उसको भेजा। हनुमानजी की यात्रा में कोई मनुष्य विघ्नकर्ता नहीं बना। या तो देवता है या तो ये पहाड़ है। साधना के मार्ग में कभी-कभी देवता भी विघ्न करते हैं। मुख चौड़ा करके सुरसा आई, आज देवताओं ने मुझे खोराक दिया! मैं बहुत भूखी हूं। मैं तुम्हें खा जाऊं। हनुमानजी ने बहुत विवेक से कहा, एक बार राम का कार्य हो जाने दो। जानकी को खबर दे आऊं, राम को संदेश दे दूं, उसके बाद मैं स्वयं आपके मुख में आकर प्रवेश कर दूंगा। सुरसा ने जाने नहीं दिया। हनुमानजी को खाने के लिए सुरसा ने एक योजन मुंह फैलाया। श्री हनुमानजी उससे दुगुने हो गए। सुरसा ने फिर सोलह योजन मुख चौड़ा किया।

हनुमान में श्रद्धा है, स्पर्धा नहीं। मेरे भाई-बहन, आप स्पर्धा करोगे तो विकास होगा, विश्राम नहीं मिलेगा। मैं कुबूल करता हूं कि स्पर्धा करो तो विकास होगा, लेकिन विश्राम का क्या? विश्राम नहीं होगा। विकसित तो हो जाओगे, आराम नहीं ले पाओगे। आदमी को चाहिए विश्राम। स्पर्धा में जो जाएगा उसमें दो विकृत गुण प्रगट होंगे। एक तो रजोगुण प्रगट होता है। दूसरा तमोगुण प्रगट होता है। रजोगुण और तमोगुण दोनों मिल जाते हैं, तो आदमी को विश्राम कैसे मिलेगा?

तब हनुमानजी बत्तीस योजन हो गए। शतजोजन सुरसा ने मुंह फैलाया तब हनुमानजी तुरंत लघुरूप लेकर उसके मुंह में चले गए। और बाहर निकलकर खड़े हो गए। सुरसा ने कहा, देवताओं ने जिसके लिए मुझे भेजा वो तुम्हारी बुद्धि और बल का मर्म मैं पा गई। तुमसे रामकार्य होगा। अब मेरा आशीर्वाद है। पक्की यात्रा होगी न साहब, सुंदरता की यात्रा होगी, जानकी की यात्रा होगी तो विघ्न भी आशीर्वाद देंगे। बाधाएं शुभकामना व्यक्त करेगी।

अब तीसरा विघ्न आया। सिंहिका नामक एक राक्षसी, जल में रहती है। तांत्रिक है। आकाश में उड़नेवाले पक्षी की छाया जल सतह पर आती है तो छाया पकड़ती है और वो पक्षी गिर जाता है और उसको खाती है। तंत्र में छाया ग्रसना एक विद्या है। मैं आपको बहुत स्पष्ट कहूं, कभी भी यदि रामकथा सुन रहे हो, तंत्रमार्ग में जाना मत। इसका परिणाम कभी ठीक नहीं होता। लेकिन छाया ग्रसित एक विद्या जरूर है। आदमी छाया पकड़ते हैं। यहां तो मेरा अर्थ इतना ही कि भक्ति की खोज में आदमी निकलता है तो उसको तो पकड़ नहीं पाते पर उसका पड़छाया पकड़ते हैं। कैसे भी उसको गिराने की चेष्टा करते हैं। एकदम हनुमानजी नीचे आए, उसको नष्ट कर दिया। तो मेरी समझ में ये जो विघ्न है उसको मैं ईर्ष्या कहता हूं। ईर्ष्या का प्रतीक है सिंहिका। तीसरा विघ्न है ईर्ष्या। सिंहिका पृथ्वी का जीव होते हुए समुंदर में रहती है। इसका एक अर्थ है, ईर्ष्या कभी-कभी समुद्र जितना बड़ा आदमी हो उसके पेट में भी निवास करती है। ईर्ष्या अगल-बगल में रही जो उपर चढ़े, हमसे आगे जाए, उसको ही पकड़ती है। और ईर्ष्या को तो समाप्त ही कर दिया जाए। इसलिए हनुमानजी ने सिंहिका को मार डाला। ईर्ष्या नष्ट हो जाए। उसको मारकर श्री हनुमानजी महाराज की यात्रा पूरी हो गई। बारिधि नांघ लिया। मेरी समझ में ईर्ष्या जब खत्म होती है तो तुरंत किनारा आ जाता है। श्री हनुमानजी महाराज लंका के प्रदेश में उतरे और गिरि पर जाकर उसने लंका का दर्शन किया, अब शुरू हो रहा है हनुमानजी की आंखों में पहला दर्शन, लंकदर्शन। सुंदर वातावरण हनुमानजी ने देखा। अति रमणीय लगता है। बहुत सुंदर है लंका। तुलसी लंका का दर्शन कराते हुए सुंदर छंद लिख देते हैं -

कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना।

फिर 'सुंदर' शब्द है, 'सुंदरायतना घना।' लंका के बहुत घने मकान सब सुंदर, सुंदर। सुंदर बन है, बाग है, उपवन है, बाटिका है, विहार करने के जो स्थान है सब रावण की लंका में उपलब्ध है। नर, नाग, गंधर्व इन सब जातियों की कन्याएं, मुनियों के मन को भी विमोहित करे ऐसी स्त्रियां घूम रही है। हनुमानजी सबको देख रहे हैं। कोई आपत्ति नहीं हनुमानजी को। क्योंकि अंदर से आरपार है। रमणीय लंका, ऐसे भोगवादी, प्रवृत्ति का नगर हनुमानजी देख रहे हैं, लेकिन हनुमानजी ऐसे यात्री आते हैं कि कहीं भी फंसनेवाले नहीं। दुनिया रमणीय रहनी चाहिए। रमणीय हो तो उसको विशुद्ध दृष्टि से देखो भी। अच्छी वस्तु देखो तो संयम से आनंदित हो। लेकिन क्या खाना, न खाना उसका विवेक रखो। हनुमानजी ने जब भी इसमें से खाए फल ही खाए। दुनिया में कहीं भी रहो, अपनी भारतीयता को बरकरार रखे।

श्रीहनुमानजी महाराज पर्वत के शिखर से ये सब रमणीयता देख रहे हैं। सुंदरता देखना लेकिन अपनी ऊंचाई छोड़ना मत। आदमी को देखना चाहिए, लेकिन ऊंचाई छोड़कर नहीं। पर्वत के शिखर से, ऊंचाई से देखो तो असंग दृष्टि हो जाएगी। ऊंचाई से देखने से एक निसंगता पैदा हो जाएगी। हनुमानजी ने देखा कि नगर की रक्षा का कड़ा बंदोबस्त है। हनुमानजी ने मन में सोचा कि दिन में जाउं तो तो पकड़ा जाउंगा। रात्रि के समय में अत्यंत लघुरूप लेकर मैं नगर में प्रवेश करूंगा। ये प्रवृत्ति की लंका है मेरे भाई-बहन। हम संसारी है, दफ़तर जाना, ये काम करना सब हमारी भी प्रवृत्ति होती है। लेकिन रात में जब विश्राम करना हो तब अपने को छोटा समझिए। अपने को जैसा है वैसा समझिए। दफ़तर में हम बोस है, लेकिन रात में घर में हम एक सामान्य आदमी, ऐसा करके नगर में प्रवेश करना मानी आत्मचिंतन करना। लंका का दर्शन हनुमानजी को पूरा का पूरा करना है। इसलिए सोचा कि पूरी लंका को समझ लूं, इसलिए रात्रि में प्रवेश करूं। और वो भी अपने को छोटा बनाके नगर में प्रवेश करूं। श्री हनुमानजी मच्छर नहीं बने, मच्छर के समान छोटा रूप ले लिया। दूसरों को सही रूप में देखना है तो अपनेआपको छोटा करना होगा। जैसे प्रवेश करने गए ही, लंकिनी नामकी एक राक्षसी हनुमानजी को इतने छोटे रूप में प्रवेश करके देख उसको पकड़ लिया, रोक लिया, मेरा खोराक लंका के चोर है! तू चोरी करने आया है! हनुमानजी इस महिला को मारते नहीं पर उसने कहा, तू चोर को खाती है? चोर तेरा खोराक है, तो दुनिया में सबसे बड़ा चोर तेरी लंका में है रावण, जो मेरी माँ को चुराकर आया है। खाने की शुरूआत वहीं से कर! मुझे क्यों खाती है? एक मुठिका का प्रहार श्री हनुमानजी ने लंकिनी के सिर पर किया! उसके मुंह से रक्त निकला और ढेर हो गई! गिर पड़ी! लहु निकल गया! और फिर तुलसी कहते हैं कि भगवान की कृपा हो जाए तो सब विघ्न टल जाते हैं और हनुमानजी लंका में प्रवेश करते हैं।

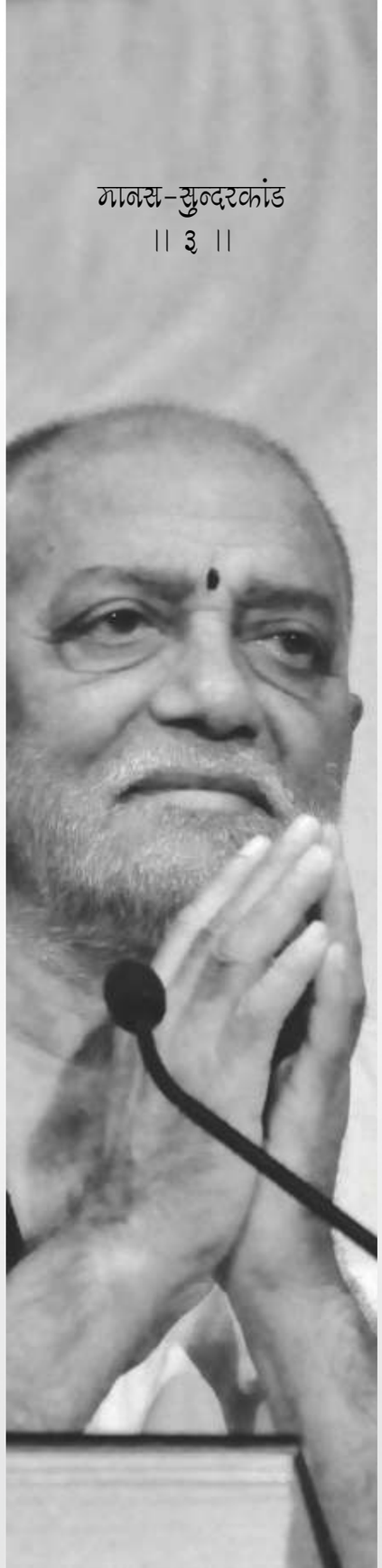

मानस-सुन्दरकांड
॥ ३ ॥

जो दूसरों को सहारा दे वो हाथ सुंदर है

'मानस-सुन्दरकांड', 'रामचरित मानस' के 'सुन्दरकांड' की हम चर्चा करते हैं। वाल्मीकि के 'सुन्दरकांड' में आपको बहुत बिलग-बिगल बातें मिलेगी क्योंकि 'रामायण सत कोटि अपारा।' लेकिन हमारे केन्द्र में जो है, 'मानस' का 'सुन्दरकांड' है। ये संशोधित 'सुन्दरकांड' है। ये तुलसी द्वारा सालों तक भविष्य के लोगों के लिए एक विशिष्ट रूप में संपादित किया गया 'सुन्दरकांड' है। और तुलसी के 'रामचरित मानस' के 'सुन्दरकांड' में नव वस्तु सुंदर है। कुल नव सुंदरता को समेटे हुए ये 'सुन्दरकांड' है। और नव का अंक पूर्णांक है। 'सुन्दरकांड' में मेरे गोस्वामीजी सुंदरता की पूर्णता का जिक्र करते हैं। क्रमशः लें। पहला 'सुंदर' शब्द का कल उद्घोष हुआ था।

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढ़ेऊ ता उपर।

'सुन्दरकांड' में एक सुंदर है भूधर। दूसरा सुंदर है, लंका के 'सुंदरायतना घना'; लंका के जो घर है, वो सुंदर है। तीसरा सुंदर है परमात्मा की करि कर सम भुजा। चौथी वस्तु सुंदर है रामनाम अंकित मनोहर मुद्रिका। बरोडा से हरीशभाई ने कल मुझे लिस्ट दिया था कि मुझे खोजने का श्रम न करना पड़े। पांचवीं सुंदरता अशोकवाटिका के वृक्ष के सुंदर फल।

सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लगि देखि सुंदर फल रुखा।।

ये सुंदर फल और वृक्ष को देखकर हनुमानजी कहते हैं, मुझे भूख लगी। छठ्ठी सुंदरता है भगवान की कथा -

सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुंदर।।

सातवीं सुंदरता है -

हरषि राम तब कीन्ह पयाना। सगुन भए सुंदर सुभ नाना।।

सगुन सुंदर है। आठवीं है, नीति सुंदर है-

सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपन सन सुंदर नीती।।

तो आठ सुंदरता है। मैं नव कह रहा हूं। क्योंकि सभी अष्ट सुंदरता में केन्द्र में है, 'सुंदरता कहुँ सुंदर करई।' यहां अशोकवाटिका की जानकी बैठी है और सुंदरता को भी सुंदर करनेवाली जानकी, पुष्पवाटिका की जानकी है जनक की, जो सुंदरता को भी सुंदर कर देती है। 'छबिगृहँ दीपसिखा जनु बरई।' तो केन्द्र में सुंदरता है वो माँ जानकी है। तो नव प्रकार की सुंदरता 'सुन्दरकांड' अंतर्गत है, पूर्ण सौंदर्य। मेरे युवान भाई-बहन, उसका थोड़ा तात्त्विक अर्थ समझने में हमारी इस जीवनी में मदद मिल सकती है। प्रशांत और प्रसन्न चित्त से सुने।

पहली सुंदरता है एक भूधर सुंदर। एक तो पर्वत में ऊंचाई रहती है। जितना ज्यादा ऊंचा, इतना पर्वत अनटच होता है, असंग होता है। जैसे कि कैलास। यद्यपि एवरेस्ट छुआ गया है, लेकिन कैलास अनटच है। एक तो ऊंचाई

होती है पर्वत में। दूसरा वो असंग होता है। और पर्वत का तीसरा लक्षण वो अचल होता है। मेरे युवान भाई-बहन, हमारी उन्नति, हमारी ऊंचाई, हमारी प्रगति तीन लक्षणो में संपन्न होनी चाहिए। समाज में कोई उपर उठे, कौन नहीं चाहता? लेकिन ये ऊंचाई तभी सुंदर है जब अनटच हो। कहीं दाग न लग जाये। कहीं उसको कोई कलंक न लग जाये। और तीसरा ये ऊंचाई अचल हो। गिर जाये, स्खलन हो जाये, भंग हो जाये ऐसी ऊंचाई न हो। 'मानस' ने कोई चिंतन नहीं छोड़ा है।

मेरे एक श्रोता ने ये भी पूछा है; आप तो मेरे है, इसीलिए मैं अपना समझकर आप-से बात करता हूं। पूछा, 'बापू, आप जो विचार प्रस्तुत करते हैं ये विचार, ये प्रिय विचार आपको कहां से आते हैं? उसके केन्द्रबिंदु कौन है?' आप मेरे हैं तो मेरी बातें बताऊं। मुझे तीन जगह से विचार आते हैं, जो मैं आपके साथ प्रसादरूप में बांटा करता हूं। एक मेरी जगह है मेरा झूला, मेरा हींचका। रात के सन्नाटे में जब मैं अकेले झूले पर बैठता हूं तब ये विचार आने लगते हैं, जो सुबह में प्रसाद के रूप में बांटता हूं। मेरे प्रिय विचारों का उद्गमस्थान एक तो मेरा झूला। ज्यादातर मैं झूले पर ही खाता हूं, झूले पर सोता हूं, झूले पर बैठता हूं। केन्द्र में तो मेरे गुरु की कृपा है। लेकिन ये मेरा उद्गमस्थान है, जहां से प्रिय विचारों का एक फोर्स शुरू हो जाता है। साहब! उपर से वर्षा हो तो वो नैसर्गिक है। लेकिन वर्षा अंदर से उपर आये उसकी कीमत होती है। उपर से बरसे वो तो नैसर्गिक है। प्रवाह का वैज्ञानिक नियम है नीचे आना, लेकिन एक प्रवाह गुरुकृपा से ऐसा ही होता है कि जो भीतर से उपर की ओर उठे।

दूसरा प्रिय विचार का केन्द्रबिंदु है मेरा यज्ञकुंड। मैं अग्नि के पास बैठता हूं। रात के सन्नाटे में चुपचाप बैठा रहता हूं तब ये प्रिय विचार शुरू हो जाते हैं। और तीसरा मेरे विचार का केन्द्रबिंदु है, 'रामचरित मानस' का पाठ जब करता हूं तब ये शुरू होते हैं। तो मैं ये विचारों के आधार पर इन गुरुकृपा के आधार पर आपसे बातें करता हूं। और ये विचार मेरे नहीं है। यहां सब व्यास का जूठा है। आपको नया लग रहा है क्योंकि ये नितनूतन है। यहां जो भी कोई बोल रहा है वो व्यास का और वाल्मीकि का जूठा बोल रहा है। लेकिन लगता है नितनूतन। गंगा में अपना प्रवाह है? न को। ये तो विष्णुपाद से निकली हुई है। लेकिन गंगा नितनूतन है इसीलिए नयी लगती है। ये सूरज की किरण जो हमारे तक पहुंचती है वो किरण स्वतंत्र है? नहीं, उसका केन्द्रस्थान है सूरज। लेकिन नितनूतन है इसलिए सूरज की किरणें प्यारी लगती है। एक पौधे पर खिले फूल क्या मौलिक है? उसका केन्द्रबिंदु पृथ्वी है। और खोज करे तो कहां-कहां तक यात्रा करनी पड़ती है! बहुत लंबी यात्रा करनी होती है। ये आध्यात्मिक साधना। पीएच.डी. आप जल्दी हो सकते हो। बी.ए. आप जल्दी हो सकते हो। ग्रेज्यूएट हो सकते हो। आध्यात्मिक यात्रा बड़ी कठिन और लंबी यात्रा है। कृपा हो जाये तो 'क्षिप्रं भवति धर्मात्मा।' इन्सटन्ट। कृपा हो जाये तो; बाकी मुश्किल है। परवीन शाकीर के शे'र है-

मोती हार पिरोये हुए।
दिन गुजरे है रोये हुए।
नींद मुसाफ़िर को भी नहीं,
रास्ते भी है सोये हुए।

बड़ी लंबी यात्रा है। 'भगवद्गीता' ने बहुत अच्छा कहा; बहुत प्यारा समाधान दिया, 'बहुनाम् जन्मानाम्।' मेरा 'मानस' भी कहता है, 'जनम जनम मुनि जतन कराये।' लेकिन कृपा कुछ ओर काम कर सकती है। क्षण में कर देती है। 'करऊ सत्य तेही साधु समाना।' तो 'रामचरित मानस' का पाठ करते प्रिय विचार उठने लगते हैं। क्योंकि ये रोज नितनूतन है। और आदमी रोज नया होना चाहिए। कई लोग कहते हैं, बापू की कथा वही की वही कथा! वही 'रामचरित मानस!' वही बापू! वही बार-बार! लेकिन उसको पता ही नहीं कि कथा रोज नयी होती है। ये मैं अपने मुंह से कहूं वो ठीक नहीं। आप अपनी प्रतीति कहिए। कथा का अपना स्वभाव है नितनूतन रहना।

तो तीन स्थान है। एक तो झूले पर। कई लोग समझते हैं, बापू मौन रखते हैं, इसीलिए ये प्रिय विचार आते हैं। नहीं, ये आपका निर्णय गलत है। मेरे से एक आदमी की बात हुई थी इसीलिए मैं बोल रहा हूं। मौन में मैं विचार करता ही नहीं। मौन में विचार करना मौनभंग है। मौन में विचार काहे का? मौन तो एक सन्नाटा है। यद्यपि हम उस स्थिति में नहीं पहुंच पाते कि विचार न आये। मौन में तो ज्यादा विचार उमड़ते हैं! लेकिन मौन में विचार न आये, ये स्थिति बहुत प्यारी है। मौन विचार करने के लिए थोड़ा है? मौन विचार करने के लिए नहीं है। मौन है निर्विचार होने के लिए। मैं मौन का आग्रही हूं। मेरे पास आये और कोई पूछे ओर कहे कि क्या करे तो मैं ये कहता हूं कि हो सके यदि अनुकूल हो तो सप्ताह में एक बार मौन

रहो। महिने में दो बार मौन रहो अथवा तो कम से कम महिने में एक बार रहो। मौन की बड़ी महिमा है। जैसे मैं कल भी कहता था कि भगवान राम पुष्पवाटिका में कवि बन गये, रसिक बन गये! कविता के टोन में वो जानकी के सौंदर्य के बारे में सोचने लगे लेकिन श्रोता खोज रहे थे राम कि किसको सुनाउं? तो फिर लक्ष्मणजी को श्रोता बना दिया। वैसे गुरुकृपा से विचार का वरसाद होने लगता है तो मैं भी सोचने लगता हूं कि कब साढ़े नौ हो और कब मैं अपने को बरसा दूं! कब मैं अपने को खाली करूं! बदायूं का एक शे'र है सीधा-सादा -

पहले खुद को खाली कर।
फिर उसकी रखवाली कर।

तेरी रिक्तता को संभाल, तेरी शून्यता को तू संभाल। युवान भाई-बहनों, मैं आपके लिए कहता हूं कि आप उन्नत बनो, आप बहुत आगे बढ़ो, आप ऊंचाई सर करो, आप प्रत्येक ऊंचाई को छूओ। लेकिन वो ऊंचाई सुंदर होनी चाहिए, असुंदर नहीं। ये ऊंचाई अचल होनी चाहिए। ये ऊंचाई अनटच होनी चाहिए। अनुपम होनी चाहिए। अद्वितीय होनी चाहिए। ये है 'सुन्दरकांड' की पहली सुंदरता। और इसके लिए मैंने रामकथा को माध्यम बनाया है। और इस माध्यम के कारण हम और आप यदि धीरे-धीरे देखे तो थोड़े-थोड़े डेवलप होते जाते हैं। अवश्य डेवलप होते हैं। गाता रहूंगा। और मुझे ईश्वर मौका दे तो जन्म-जन्म गाऊंगा। यहां मोक्ष किसको चाहिए? बार-बार आना है। इतनी सुंदर पृथ्वी है यार! मेरा मिशन कथा है। बस कथा पूरी, मैं गया! कुछ होगा। इसीलिए हम गाते रहे, आप सुनते रहो।

मैं साधुकुल में जन्मा हूं उसका मुझे गौरव है। लेकिन मैं साधु हूं कि असाधु हूं उसकी गेरंटी क्या? उसकी एक ही गेरंटी है आपका विश्वास। हमारे देश के सभी संतों ने तो यही कहा। 'मो सम कौन कुटिल खल कामी।' 'हमारे प्रभु अवगुन चित्त न धरो।' और आप सब अच्छे हैं कि बुरे हैं उसकी गेरंटी क्या? क्या गेरंटी? मेरा विश्वास है आप पर। तर्क गेरंटी चाहता है। विश्वास कोई गेरंटी नहीं चाहता। लोग गेरंटी चाहते हैं। राम है कि नहीं, उसकी गेरंटी? विश्वास होना चाहिए। रामकथा जगत में हुई कि नहीं, उसकी कोई गेरंटी? भरोसा होना चाहिए। मैं क्या तर्क दूं आपकी अच्छाई का, बुराई का? मुझे क्या अधिकार? बस, मैं तो आपसे ममता रखता हूं। इसीलिए आता हूं, गाता हूं, नाचता हूं, कूदता हूं। आप अपने को पूछो, आप कितने डेवलप हुए हो? आपकी आंख में से ईर्ष्या कितनी गई? आपने मन में द्वेष को कितना दूर किया? आपने दूसरे के बारे में गलत ख्याल कितने छोड़े? अपनेआप को पूछो। मैं अपनेआप को भी पूछुं कि मैं साधु हूं कि असाधु हूं? मैं सोचूं, आप सोचो।

मेरे भाई-बहन, इसीलिए व्यासपीठ को बहुत समदर्शी रहना पड़ता है। व्यासपीठ इतनी आसान वस्तु नहीं है साहब! बहुत समदर्शी रहना पड़ता है। कहीं भी किसी के प्रति दुर्भाव पैदा न हो जाय। ये बहुत ध्यान रखना पड़ता है। ओर मुक्ति मिले, भक्ति मिले, ये सब प्रार्थना छोड़ो। तुम एक ही प्रार्थना करो, हे प्रभु, चौबीस घंटों में मुझे किसी के प्रति दुर्भाव पैदा न हो, ये है प्रार्थना। दुर्भाव से भरा चित्त है हमारा। इससे बचिए बाप! युवान भाई-बहनों, किसी की ऊंचाई, प्रगति देखकर ईर्ष्या मत करना। स्पर्धा से विकास होता है, लेकिन विश्राम नहीं मिलता। स्पर्धा खुद से करो कि मैं इस साल ये कमाया। अगले साल ज्यादा कमाऊं। दूसरों को मत देखो। ये आपके लिए सरल हो तो मैं बहुत राजी हूं कि आप कथा को समर्पित है। लेकिन यहां स्पर्धा इतनी होती है कि बेटे की तरक्की को बाप नहीं सह सकता! पत्नी की तरक्की पति नहीं सह सकता! तो ये पहली सुंदरता-

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर।
कौतुक कूदि चढेऊ ता उपर।।
कनक कोट बिचित्र मुनि कृत सुंदरायतना घना।

तो एक तो ऊंचाई को तुलसी ने सुंदर कहा। दूसरा, लंका को देखते हुए हनुमानजी ने सोने का किल्ला देखा और हनुमानजी ने देखा कि सुंदर मकान है। आयतन, मकान, घर, रहने योग्य स्थान सब सुंदर, सुंदर, सुंदर। स्थान सुंदर, घर सुंदर। किस घर को आप सुंदर की संज्ञा दोगे? तीन वस्तु जहां हो उसको सुंदर कहना। जो घर सुघड हो वो सुंदर। सुघड हो, भले छोटा हो। लंका में तो सोने के मकान है। ये रूपक होगा, उसके पीछे आधि भौतिक दृष्टि के पीछे, कहीं आध्यात्मिक विचार होंगे। लेकिन सुघड हो, वो सुंदर है। वो घर सुंदर है जिसको बाहर से भी बंद किया जाता हो और अंदर से भी बंद किया जाता हो। केवल बाहर से बंद किया जाय और खोला जाय, अंदर से बंद करने और खोलने की व्यवस्था न हो तो वो घर नहीं है, जेल है, कारागृह है। घर वो है जो हम चाहे दरवाजा खोल सकते हैं। अंदर गये, बंद किया। कोई आ न सके। जब चाहे बाहर निकले। बाहर जाकर फिर बंद करे कि कोई जा न सके। जेल में ये व्यवस्था

नहीं है। इसीलिए जेल घर नहीं है। कई लोग जेल को घर मानते हैं, ये बात ओर है! वो घर सुंदर है जिसमें द्वार हो और द्वार का बंद करना और खोलना हमारे वश में हो वो घर सुंदर। वो घर सुंदर है जिस घर में अंदर-अंदर कलेश न हो। वो घर सुंदर है जिसमें कभी सास-बहु का कलह न हो; बाप-बेटे का कलह न हो; भाई-भाई का कलह न हो; पति-पत्नी की तो बात ही छोड़ो! कलहमुक्त घर सुंदर है। कोई भी घर हो तो चार दीवारें होती है। करीब-करीब चार दीवारें होती है। जो पुरानी मान्यता है। फिर तो कितनी भी दीवारें हो सकती है। मूल चार दीवारें होती है। चार दीवार हो और उसमें कोई दरवाजा न हो तो ये चार दीवारवाला घर, घर नहीं है, जेल है। दरवाजा होना चाहिए और होने के बाद भी अंदर-बाहर दोनों खुलने और बंद करने की स्वतंत्रता हमारे पास होनी चाहिए।

'रामचरित मानस' में ऐसे घर की चर्चा है। तुलसी कहते हैं, ये इन्सान, ये आदमी, ये जीवात्मा, ये हम सब चार दीवारों में केद हैं! गिरे हुए हैं और ये चार दीवारों

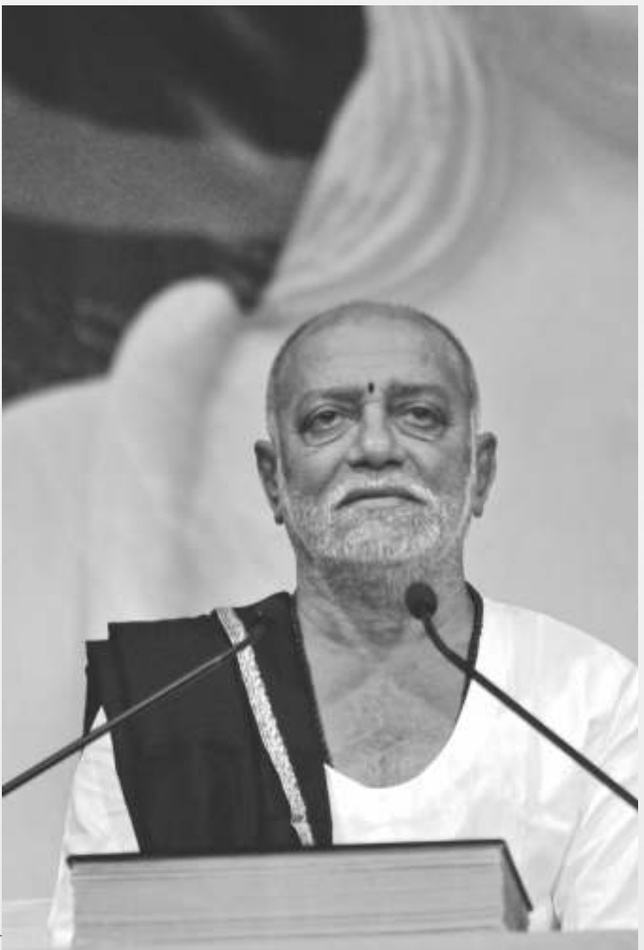

का नाम मेरे गोस्वामीजी ने दिया है, 'काल कर्म सुभाव गुन घेरा।' ये चार दीवार है! काल, कर्म, सुभाव, गुन चार दीवारों के अंदर हम बंदी हैं। हमारी परतंत्रता का कारण ये चार है। एक तो काल के द्वारा हम बंदी है। काल के दो अर्थ। काल मानी वर्षाकाल, शीतकाल, ग्रीष्मकाल। काल मानी ऋतु। उसमें तो हम कुछ नहीं कर सकते। गरमी आये, रोक नहीं सकते। हां, आर्थिक संपन्नता है तो हम कुछ उपकरण लगाकर के अपने को बचा सकते हैं कि गरमी है तो A.C. लगा दी। शीतऋतु है तो हीटर लगा दो। वर्षाऋतु है तो छाता ले लो। लेकिन प्रकृति का जो काल है, वो बदला नहीं जा सकता। दूसरा काल है जो हमारी मृत्यु है; बदल नहीं सकते हम। ध्रुव है मृत्यु। हम बंद है काल की एक दीवार में। और दूसरी तुलसी कहते हैं कर्म की दीवार। इस में हम बंद है। तीसरी दीवार है गुण; रजोगुण, तमोगुण, सत्त्वगुण, तीनों जरूरी है। ध्यान देना, हमको खबर नहीं, धर्मपीठ से इतना सिखाया गया ये रजोगुण निकालो, ये तमोगुण निकालो! निकालने की जरूरत नहीं। जितना जरूरी है इतना रखो। निकालने की बात बहुत सिखायी, छोड़ो, छोड़ो, छोड़ो! आपको पता है, तमोगुण बिना कभी नींद नहीं आती। जब भी किसीको नींद आती है, घंटा, दो घंटे, पांच घंटे, नींद के पीछे तमोगुण नितांत जरूरी है। और शरीर है तो थोड़ी निद्रा जरूरी है स्वास्थ्य के लिए। गुण जरूरी है, लेकिन तमोगुण की शरीर को जब जरूर है तब तुम में रजोगुण आ जाये तो कि स्वेटर बना लूं! किताब पढ़ लूं! ये रजोगुण है। अब तुम्हें जरूरत है विश्राम की, उसमें तुमने कुछ न कुछ प्रवृत्ति शुरू कर दी तो तुम बीमार हो जाओगे! अब तुम कथा में बैठे हो तो तुम्हें जरूर है सत्त्वगुण की और उसमें तमोगुण आ जाये तो ये कैद बना देती है। अब कथा मैं आप बैठे उसी समय कथा में भी आप कुछ सोचे; आप दूसरे विचार, दूसरे मुल्क में चले जाय तो क्या होगा? जिस समय, जिस गुण की आवश्यकता होती है वो सम्यक् रूप में इन्सान में होनी चाहिए। हमें तो बताया कि छोड़ो, छोड़ो! छोड़ना नहीं है, सम्यक् करना है।

हम चार दीवारों में बंद है। कभी काल, कभी कर्म, कभी गुण। निद्रा के लिए तमोगुण जरूरी है। ओफिस जाना, काम करना, जोब करना, खेती करना, इसीलिए रजोगुण जरूरी है। और कुछ समय प्रभु के ध्यान में बैठना, स्मरण करना, पारायण करना अथवा तो जो आप करते हो।

ये सब जरूरी है। कोई महापुरुष गुणातीत हो जाये, त्रिगुणातीत हो जाये। लेकिन ये सब लेबल है, लेबल है! अनुभव तो किसका होता है? कोई त्रिगुणातीत है। हां, साधु होते हैं। बाकी तो ये लेबल है। लेबलवाले आदमी की जरूरत नहीं है, दुनिया को लेवलवाले आदमी की जरूरत है। तो तीसरी दीवार है गुण और चौथी दीवार है स्वभाव। हम अपने स्वभाव के कारण जेल में है। स्वभाव एक दीवार बन बैठा है। तो घर उसको कहते हैं जो दीवारों से ही बिलकुल बंद न हो। दरवाजा भी हो। और मनुष्य शरीर में ये चार दीवार है। लेकिन तुलसी कहते हैं, उसमें एक दरवाजा भी है। उसको आप ठीक से रखो। 'सुंदरायतना घना।' लंका के घर सुंदर है और सुंदर घर की परिभाषा मेरी व्यासपीठ यही करती है, जो सुघड हो, जो स्वच्छ हो और जिसमें अंदर-बाहर खोलने का द्वार हो, कारागृह न हो। ऐसा घर, ऐसा स्थान, ऐसी साधनास्थली, ऐसा आश्रम, ऐसा तीर्थ।

एक भाई का एक बहुत प्यारा प्रश्न है, 'बापू, हम भारत में आते हैं अमरिका से और तीर्थ में जाते हैं तो तीर्थ हमें म्लान या तो शून्य लगते हैं!' सीधी बात है। हरद्वार के बारे में हमने क्या-क्या सोचा होता है और जाते हैं तो गंगा प्रदूषित कर दी है हमने! कचरे हैं! मंदिरों में अस्वच्छता है! और हर जगह प्रपंच है! तो हमें लगता है कि तीर्थों की महिमा गई कहां? बाप! तीर्थ में प्राण नहीं होते। तीर्थ में कोई तीर्थंकर बैठा होता है तभी प्राण होता है। वो तीर्थंकर चला जाता है, तब सब शून्य हो जाता है। कृष्ण गया, वो महक, वो खुश्बू, वो सूर, वो बांसूरी, नहीं सुनी जा रही है! राम गये, उसके बाद...! इसका मतलब ये नहीं समझना कि तीर्थ की महिमा कम है। हां, तीर्थ की अपनी एक खुश्बू तो है ही। कहीं से भी महान चेतना बिदा हो जाती है तो थोड़ी म्लानता स्थान में आ जाती है। लेकिन बहुत सूक्ष्म रूप से महसूस करने से वहां अभी भी खुश्बू है। लेकिन इस सूक्ष्म चेतना को पकड़ने के लिए हमारे पास बहुत शुद्ध अंत:करण चाहिए। वही इस चेतना को रिसिव कर सकती है। तीर्थ तो प्राणवान होता है तीर्थंकर के कारण; किसी बुद्धपुरुष के कारण, किसी सद्गुरु के कारण। फिर भी तीर्थ की महिमा है। उसकी खुश्बू अभी भी है। हम उसको रिसिव कर सके इसके लिए चाहिए सूक्ष्म चित्त, निर्दोष चित्त। महापुरुष को तीर्थों में आनंद आता है। लेकिन हम जैसे सामान्य लोगों को स्वाभाविक है दिखता नहीं है कुछ कि ये सब कैसा-कैसा सोचा था! यहां तो कुछ दिखता नहीं! ऐसा होता है।

तो कोई भी स्थान, कोई भी तीर्थ, कोई भी घर, सुंदर तभी है जब सुघड है, स्वच्छ है और कारागृह न हो। उसमें द्वार हो। केवल दीवारें न हो। तो दूसरी वस्तु 'मानस' की सुंदरता, 'सुन्दरकांड' की सुंदरता ये है। तीसरी-

स्याम सरोज दाम सम सुंदर।
प्रभु पुज करि कर सम दसकंधर।

तीसरी सुंदरता 'सुन्दरकांड' की है परमात्मा का हाथ, भुजा सुंदर। हाथ किसके सुंदर? गोरे हाथ हो, सांवरे हाथ हो, सप्रमाण हाथ हो, ऊंगलियां प्रमाणभान से बनायी हो। सब परमात्मा ने बोडी बनाया। कितना माप ले के बनाया! इसमें थोड़ा-सा इधर-उधर हो जाये तो क्या से क्या हो जाये! आप सोचो, दो हाथ है इसमें एक छोटा, एक लंबा हाथ बनाते तो! दोनों आंखें समान। दोनों कान समान। बाप! राम के हाथ के लिए तो सवाल ही नहीं। लेकिन हाथ उसके सुंदर है जो दूसरों को देता है। छोटे-बड़े की छोड़ो! गोरे-काले की छोड़ो! जो दूसरों को कुछ दे वो सुंदर हाथ। राम कितनों को देता है! गोस्वामी कहते हैं, 'ऐसो को उदार नहीं जग मांही।'

दूसरा, हाथ उसीका सुंदर है जो दूसरों को सहारा दे। गिरे हुए को आधार दे, सहारा दे, उसका हाथ सुंदर है। धक्का दे वो कैसे सुंदर हो सकते हैं? परमात्मा ने दिया हो तो हाथों से दो। तुम अंदर कितना लेते हो वो महत्त्व का नहीं, बाहर कितना निकालते हो? तुमने कितना कमाया, कितना तुमने इकठ्ठा किया, उसके साथ किसी साधु-संत को क्या लेना? तुमने इसमें से हाथ से दिया कितना, उसीकी महिमा है। कम से कम दस प्रतिशत भाग तो दो! सौ डोलर कमाते हो तो दस डोलर बिलग रखो। भारत में ही धर्मसंस्था में दो ऐसी कोई मैं अपील नहीं करनेवाला हूं। धर्मजगत के पास बहुत पैसे है! अब थोड़ा कम देना! कोई गरीब के पास इस वर्षाऋतु में छपड़ा नहीं है, उसको आवास दे दो। कोई फीस के बिना तेजस्वी विद्यार्थी शाला-कोलेज छोड़ देता हो, उसकी फीस भर दो। किसी को भोजन नसीब नहीं है उसको इज्जत के साथ रोटी दो। बाप! आदमी को चाहिए अपना दसवां हिस्सा निकाले। मैं बार-बार कहता हूं और विदेश में इसकी बहुत ज्यादा असर भी होती है। मेरे जो युवक भाई-बहन जो है वो सब मुझे कहते हैं। आज भी एक चिठ्ठी है, 'बापू, मैंने दसवां हिस्सा निकाला है, किसको दूं?' मैं कहूं? तुम्हारे अगल-बगल में यहां भी किसी को जरूरत है उसको दो! यहां कोई तुम्हें न दिखाई दे तो जब देश में आओ, तुम्हारे गांव के अगल-बगल में जिसको जरूरत है

उसको दसवां भाग दो। दसवां हिस्सा निकालो। उसके हाथ सुंदर है। दूसरे को सहारा दे उसके हाथ सुंदर है और जो गलत कर्मों में न डाले उसके हाथ सुंदर है। जो हाथ कुकर्म न करे, गलत कर्मों में न जाय, उसके हाथ सुंदर है। तो तीसरी सुंदरता का वर्णन है 'सुन्दरकांड' में भगवान के हाथ की चर्चा। प्रभु का कर सुंदर है।

तब देखि मुद्रिका मनोहर।
रामनाम अंकित अति सुंदर।।

'सुन्दरकांड' अंतर्गत चौथी सुंदरता, भगवान ने जो मुद्रिका दी, जिनमें रामनाम अंकित है वो अत्यंत सुंदर है। तुलसीदासजी ने ये आठ 'सुंदर' कही और नववीं जानकी की सुंदरता की जो परदे में है, प्रतिबिंब में है। क्योंकि मूल जानकी नहीं है। मायारूपी जानकी है। इसीलिए प्रतिबिंबित है, छाया है। लेकिन ये नव सुंदरता में दो सुंदरता को तुलसीदासजी ने 'अतिसुंदर' कहा। क्यों? व्हाय? एक तो 'रामनाम अंकित अति सुंदर।' और 'लागन कहे कथा अति सुंदर।' बाकी सब सुंदर, अवश्य। लेकिन रामनाम अति सुंदर और रामकथा अति सुंदर। वहां 'अति सुंदर' शब्द का प्रयोग मेरे गोस्वामीजी ने किया है। कोई भी मुद्रिका मनोहर है, लेकिन उसमें 'राम' लिख दिया जाय तो वो अति सुंदर बन जाती है। तो रामनाम अति सुंदर है। रामनामवाली मुद्रिका अति सुंदर है। उसी राम के आधार पर आनंद करो। एक मात्र आधार रामनाम, हरिनाम। यहां रामनाम है, इसीलिए मेरी कोई संकीर्णता नहीं है। जो भी नाम आप लेते हो मुबारक! शिव, दुर्गा, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, अल्लाह, खुदा। मुझे कोई आपत्ति नहीं। खुल्ला मैदान है। लेकिन रामनाम, रामनाम है। रामनाम अति सुंदर है।

आगे की सुंदरता। अशोकवाटिका में हनुमानजी को जब भूख लगी तो सीताजी को कहते हैं, माँ, मुझे अतिशय भूख लगी है। ये फल और फूल और ये बड़े पेड़ ये सुंदर है। उसको देखकर मुझे भूख लगी है। तो ये पांचवीं सुंदरता का आलेख 'सुन्दरकांड' में है ये फल और पेड़ इसकी सुंदरता। छठ्ठी सुंदरता भगवान की कथा की। भगवान शंकर मगन हो गये कि जब हनुमानजी के सिर पर रामजी ने हाथ रखा और कथा कहते-कहते कैलास पर भगवान शंकर ध्यानस्थ हो गये। रामकथा अति सुंदर है। भगवान अति सुंदर कथा कहते हैं। कथा तो बहुत होती है। बहुत प्रकार की होती है। कुछ कथायें रजोगुणी होती है। जिसमें टापटीप बहुत होती है। जिसमें अकारण खर्च बहुत होता है। ये रजोगुणी कथा है। कोई-कोई कथा तमोगुणी होती है। जिसमें वक्ता श्रोताओं को डांटता ही रहता है! जैसे गुनाह किया हो, डांटता ही रहता है! तुम ऐसे हो, तुम कुछ नहीं करते! ये तमोगुणी कथा है। कुछ कथा ऐसी है जो सत्त्वप्रधान होती है। सरल-तरल चले। लेकिन अति सुंदर कथा तो वो है जो शंकर कहते हैं। जिसमें शंकर जो बोले, वो कथा हो जाती है। हां, जो बोले सो कथा। 'शिव सूत्र' में लिखा है, कथा जप है। कथा का मतलब है कथन। जप का अर्थ है शांति। कोई-कोई आदमी जो बोले तो शांति ही मिले। सामान्य बात करे तो भी शांति मिलती है। चुप रहे तो भी शांति मिलती है। कुछ गाये तो भी शांति। कथा जप है। आप 'रामचरित मानस' का पाठ करते हो ना? तुम्हारा जप थोड़ा छूट जाए तो चिंता मत करना। कथा ही जप है। तीन घंटे कथा सुनो वो जप ही है। उससे नियम पूरे हो जाते हैं। 'सुन्दरकांड' में सातवीं सुंदरता सगुन की। भगवान राम ने जब प्रस्थान किया तो गोस्वामीजी कहते हैं, सुंदर सगुन होने लगे। भगवान ने जब प्रयाण किया तब सब सगुन सुंदर होने लगे। और आखिरी जो है -

सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती।
सहज कृपन सन सुंदर नीती।।

पूरे नीतिशास्त्र की चर्चा में से ये पंक्ति उठायी गई कि सठ के आगे विनय का कोई फल नहीं होगा। 'शठम् प्रति शाठ्यम्।' सूत्र का प्रयोग किया जाता है। सठ मानी जिसमें लुच्चाई भरी हो उसके सामने अपना विनय काम नहीं करेगा। कुटिल के साथ प्रीति करो तो परिणाम नहीं आयेगा। और सहज-स्वाभाविक प्रकृति ही लोभी हो उसके सामने कितने ही नीति की सुंदर चर्चा आप करे, विफल हो जाती है। ऐसा सामान्य भाष्य है। लेकिन मैं इसको बदल देता हूं मेरी जिम्मेवारी पे। और तुलसी राजी होंगे। नाराज नहीं होंगे। 'सठ सन बिनय।' लिखा है, सठ के साथ विनय ठीक नहीं। मुझे लगता है, इक्कीसवीं सदी में साधु को चाहिए कि सठ के साथ भी विनय रखे। सज्जनों के साथ तो विनय सब करते हैं। जो उल्टे हैं उसके साथ भी विनय करो। उसको भी आदर दो। उसको भी धन्य बनाओ ताकि वो टर्न हो जाये, वो मुड़ जाये ओर रास्ते। और 'कुटिल सन प्रीती।' सरल लोगों से प्रेम करना ठीक है, लेकिन कुटिल से भी प्रेम करो और प्रेम की गति तो कुटिल ही होती है। प्रेम की गति तो सर्पाकार होती है। कोई रेल्वे ट्रेक के समान प्रेम कभी नहीं चलता। वो तो सर्पाकार होती है। कभी संयोग, कभी वियोग, कभी बदनामी, कभी सुयश, कभी कुछ, कभी हर्ष, कभी ये, कभी ये। शास्त्रो में उसकी गति कुटिल है, वक्र है। बाकी 'कुटिल' शब्द बड़ा प्यारा है। गुण के कुटिल अच्छा नहीं। कोई कुटिल आदमी अच्छा नहीं, लेकिन प्रेम तो ऐसा ही होना चाहिए! प्रेम में वक्रगति होनी चाहिए। मैं प्रेम की चर्चा करता हूं वो प्रेम लोग जो यूझ करते हैं वो नहीं। वो परमप्रेम की चर्चा जिसके लिए ८४ सूत्र लिखे हैं नारदजी ने 'भक्तिसूत्र' में केवल प्रेम के बारे में। 'नारदभक्तिसूत्र'; बहुत काम हुआ प्रेमशास्त्र पर।

तो मेरे भाई-बहन, वक्र के साथ प्रीति नहीं करनी चाहिए। उल्टे आदमी वाम आदमी के साथ क्या प्रेम करना? लेकिन मुझे लगता है कि इसका ये अर्थ भी करना चाहिए कि जो ऊल्टे हैं उसके साथ भी प्यार-महोब्बत करो। कभी न कभी वो भी सूलटे हो जाएगा। उसके साथ भी अपनी संवेदना प्रकट करो। और 'सहज कृपन सन सुंदर नीती।' यहां लिखा है कि सहज लोभी हो, जिसकी प्रकृति सहज कंजूस हो, उसके सामने कितनी सुंदरनीति की आप चर्चा करो तो कोई फायदा नहीं। मैं इसका अर्थ भी बदलना चाहूं कि सहज कृपण हो उसके साथ भी सुंदर नीति की चर्चा होनी चाहिए कि धीरे, धीरे, धीरे कुछ फायदा हो। जिसमें सहज कृपणता होती है उससे मुक्त होना बहुत कठिन है। वो सहज स्वभाव अपना काम किए बिना रह नहीं सकता। उसके सामने आप लाख सुंदर नीति की चर्चा करो, लेकिन ये स्वभाव उसको बाध्य करता है। उसके सामने नीति की चर्चा क्या? ऐसा यहां तो नीति के लिए 'सुंदर' शब्द का प्रयोग किया है और हमारे यहां नीति के ग्रंथ है। चाणक्यनीति, विदुरनीति और बहुत नीतिशास्त्र हमारे देश में ऋषिमुनियों ने दिए हैं जिसमें नीतियों की चर्चा की गई है। तुलसीदासजी सुंदर नीति को भी 'सुन्दरकांड' में समाविष्ट करते हुए आठवीं नीति सुंदरता बताते हैं। और नववीं जो प्रतिबिंबित है, छाया है, जानकी मूल रूप में तो नहीं है। मूल रूप में तो अग्नि में समायी हुई है। और वो जानकी सुंदर है, ये केन्द्र में है। सुंदरता को भी सुंदरता की दीक्षा देनेवाली श्री जानकीजी है। तो नव प्रकार की सुंदरता 'सुन्दरकांड' की पूर्णता को घोषित करती है। ऐसे 'मानस-सुन्दरकांड' की हम चर्चा कर रहे हैं।

कथा के क्रम में पहले दिन हमने हनुमानजी की वंदना की थी। उसके बाद भगवान के सखाओं की वंदना तुलसी ने लिखी। उसके बाद सीतारामजी की वंदना गोस्वामीजी ने की। उसके बाद 'रामचरित मानस' में नव दोहे में यानी बहत्तर पंक्तियों में रामनाम की महिमा और रामनाम की वंदना की। परमात्मा के हजार नाम, लेकिन गोस्वामीजी कहते हैं, मैं उन में से रामनाम की वंदना करता हूं। रामनाम की महिमा का गायन करता हूं। रामनाम शंकर निरंतर जपते हैं। उस रामनाम के प्रताप से विषपान किया शिव ने और राम के साथ विष को जोड़ा तो विश्राम हो गया। सभी ने प्रभुनाम आश्रय किया है। गोस्वामीजी ने बहुत बड़ा प्रकरण लिखा है। जिस पर स्वतंत्र रूप में बोलने का मेरा मनोरथ है। अल्लाह करे, जब पूरा हो!

मेरे भाई-बहन, प्रभु का नाम सर्वोत्तम है। मुझे लोग पूछते हैं कि रामनाम का जप करने का फल क्या? तो मैं इतना ही कहता हूं, तुम रामनाम जप रहे हो वही फल है। इससे ज्यादा कोई फल नहीं। श्रेय और प्रेय दोनों को सुफल करनेवाला प्रभु का नाम। मैं राम-राम बोलूं तो इसका मतलब प्लीज़ संकीर्णता मत समझियेगा। आपके मन में जो निष्ठा हो, जिसके नाम में आपकी रुचि हो, आप स्वतंत्र हो। 'रामनाम अवलंबन एकु।' भगवान का नाम, एकमात्र हमारा सहारा है। मैं तो अपना निज अभिप्राय देता रहता हूं हर कथा में कि हम बोलेंगे। विषय पर चर्चा करेंगे। शास्त्रों की चर्चा करेंगे। गुरुकृपा से जो समझ में आये, आपके सामने बोलते जायेंगे, लेकिन ये सब करने के बाद भी आखिरी सार तो हरिनाम ही है, प्रभु का नाम, बस!

जो दूसरों को कुछ दे वो सुंदर हाथ। गिरे हुए को आधार दे, सहारा दे, उसका हाथ सुंदर है। धक्का दे वो कैसे सुंदर हो सकते हैं? तुमने कितना कमाया, कितना तुमने इकट्ठा किया, उसके साथ किसी साधु-संत को क्या लेना? तुमने इसमें से हाथ से दिया कितना, उसीकी महिमा है। कम से कम दस प्रतिशत भाग तो दो! धर्मजगत के पास बहुत पैसे हैं! अब थोड़ा कम देना! कोई गरीब के पास छपड़ा नहीं है, उसको आवास दे दो। कोई फीस के बिना तेजस्वी विद्यार्थी शाला-कोलेज छोड़ देता हो, उसकी फीस भर दो। किसी को भोजन नसीब नहीं है उसको इज्जत के साथ रोटी दो।

भक्ति मिलती है विश्वास से, शिव सुमिरन से और कृपा से

'मानस-सुन्दरकांड', उसकी सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा संवादी सूर में हो रही है। आपकी जिज्ञासा भी है मेरे पास। मैं एक प्रार्थना जरूर करूं कि आप जो-जो बात करते हैं उसको जरा संक्षेप में पूछिए और कृपया कथा के संदर्भ में ही जहां तक हो। मेरी तो सबके प्रति शुभकामना है, लेकिन ये पल जो प्राप्त हुई है ये पल को पकड़ो। ये पल, एपल नहीं! पर्टिक्युलर मोमेन्ट, ये खास लम्हा, ये पल। ये पल जो है, इससे अच्छी भी आ सकती है, इससे बुरी भी आ सकती है। लेकिन अभी जो ये पल है ये फिर नहीं आएगा। ये जो है इसको ग्रहो। 'मानस-सुन्दरकांड' में श्री हनुमानजी का लंकदर्शन चल रहा है।

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार।।

श्री हनुमानजी की यात्रा को रोकनेवाला एक जो बीच में आया सुरसावाला विघ्न उसको पार कर गये श्री हनुमानजी। सिंहिकावाला जल के उपर से विशाल देह लेकर हनुमानजी उड़ान भर रहे थे, छाया पकड़ रही थी उसमें से भी हनुमानजी बाहर आ गये। और अब हनुमानजी लंका में प्रवेश करते हैं।

तुलसी के 'सुन्दरकांड' के मुताबिक तब अत्यंत छोटा रूप ले लेते हैं। और ये छोटा रूप लेकर हनुमानजी प्रवेश कर रहे तो लंकिनी ने उसको रोक लिया, जिसकी चर्चा हमने प्राथमिक रूप में की है। लंका की एक राक्षसी लंकिनी जो रावन की एक सेविका है, एक पद नियुक्त है, रात्रि में उसकी ड्यूटी है वो लंकिनी एक अर्थ में तो ये भी है, ये लंका जो एक नगरी है वही लंकिनी का रूप धारण करके रात्रि में स्वयं, स्वयं की रक्षा करती है। आत्मा ही आत्मा का उद्धार कर सकता है, दूसरा हमारी कोई रक्षा नहीं कर सकता। हम ही अपनी रक्षा करते हैं। तो श्री हनुमानजी अति लघु रूप लेकर गये और हनुमानजी पकड़े गये और वो कहती है कि मैं तुझे खा जाऊंगी। क्या मतलब है? हनुमानजी अपने मूल रूप में जो विशाल रूप था, वो लेकर उड़ान भर रहे थे तो सिंहिका ने उसको गिरने की चेष्टा की। और हनुमानजी छोटे बनके लंका में जाने लगे तो लंकिनी ने उसको खाने की चेष्टा की। क्या मतलब है? हम और आप जब बड़े होते हैं तो दुनिया गिराने की कोशिश करती है! नहीं, नहीं, हम तो कुछ नहीं, कुछ नहीं, तो दुनिया खा जाने की कोशिश करती है! बीचवाला रास्ता निकालो। रामकथा रहस्यमय कथा है, इसको खूब पढ़ो। तुम्हारे पास गुरु ना हो तो जिसको आप गुरु मानते हो उसका स्मरण करते 'मानस' पढ़ो। तुम्हारा अव्यक्त गुरु तुम्हें उसके रहस्य का बोध जब अंत:करण शुद्ध होगा तब भर देगा।

बहुत प्रश्न पूछे जा रहे हैं गुरु के बारे में। 'बापू, आप गुरु के बारे में कहो।' 'रामचरित मानस' में लिखा है, माता, पिता, गुरु और प्रभु ये चार की बातें बिना सोचे आचरण करो। क्या ये सूत्र प्रेक्टिकल है कि माता-पिता, प्रभु यानी स्वामी, गुरु जो कहे उस पर सोचना ही नहीं, चिंतन ही नहीं? वो कहे वो कर ले, ठीक है? आपका जवाब ठीक होगा। मैं कहूं ठीक नहीं। मैं ये कहना चाहता हूं, माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए; हां, गुरु की आज्ञा माननी चाहिए, प्रभु की आज्ञा माननी चाहिए, लेकिन ये तो 'रामायण' को पूछ के नक्की करो कि 'रामायण' की व्याख्या क्या है? कौन माता-पिता? खाली जनम दे वही? खलील जिब्रान तो कहता है माँ-बाप को, संतान के माँ-बाप तुम नहीं हो, उसके असली माँ-बाप तो परमात्मा है। तुम्हारे थ्रू वो जगत में आया है। वे संतान तुम्हारे नहीं है। तुम उसके वाहक बने, तुम्हारे थ्रू ये चेतनायें आई। यहां जिसस परमात्मा को पिता कहते हैं। ठाकुर रामकृष्ण परमात्मा को माता-पिता; उद्धव और अर्जुन 'श्रीमद् भागवत' में परमात्मा को सखा कहते हैं। कौन है उद्धव? कृष्ण का अत्यंत प्रिय सखा। कौन है अर्जुन? ये सखा माना है। सुग्रीव ईश्वर को सखा मानता है। मेरा लक्ष्मण परमात्मा को भाई मानता है। माँ, बाप, गुरु और स्वामी इसकी व्याख्या 'मानस' में ये है। इसका मतलब ये नहीं है कि हमारे जो माँ-बाप है हम उसे ना मानें। लेकिन ये आज्ञा माँ-बाप की होनी चाहिए; उसकी वासना, उसकी ममता और उसकी मूढ़ता की नहीं होनी चाहिए। पिता की आज्ञा मानना है, उसकी ममता की आज्ञा नहीं मानना। तुम्हारा गुरु तुम्हें ये कहे कि मेरे सिवा तू किसी को मत मान, मेरे सिवा तू किसी को ना सुन, मेरे सिवा तू किसी के प्रोग्राम में ना जा, मेरे सिवा सार्वभौम सत्संग होता हो तो भी उसमें जाना मत और दूसरों को जाने मत देना! क्या ऐसे गुरु की आज्ञा मानना लाजिम है? क्योंकि ये गुरु ही नहीं! मेरे पास चिठ्ठियां है इसलिए बोल रहा हूं कि टोरन्टो में कई लोग है, अपना ग्रूप लिए हुए कि हमें कथा में आना है, लेकिन हमको रोका जा रहा है, वहां मत जाओ! सुनो तो हमें ही सुनो! बीमार धार्मिकता, रोगी धार्मिकता! मंदिर है कि अस्पताल है? यहां सोच-समझकर आना। मेरे पास आये तो एन्ट्री ही है, एक्ज़िट है ही नहीं। सत्संग जैसी उत्तम वस्तु नहीं है। उसको हम बिगाड़ रहे हैं सब! और सत्संग का नाम देते हैं, सत्संग में आना, सत्संग में आना! काहे का सत्संग? ये सबसे बड़ा कुसंग है। मैं आपको बुलाता हूं और कहता हूं, जहां से भी शुभ मिले, जाओ। मैंने कभी भी मेरे श्रोताओं को नहीं कहा कि यहां मत जाओ, वहां मत जाओ। शुभ मिलता हो तो जाओ क्योंकि ये कथा ही तो काम कर रहे हैं।

मेरे भाई-बहन, मेरी व्यासपीठ कभी किसीको मना नहीं करती। मुझे क्या लेना-देना है कि मैं मना करूं? मुझे इसे क्या हानि-लाभ है? लेकिन तुम भटक जाते हो! असुरों के गुरु शुक्राचार्य जो बलिराजा वामन भगवान को तीन कदम पृथ्वी मांगी और वो देने के लिए हाथ में जल लेकर संकल्प करने गया तो उसके गुरु ने मना किया कि मैं तेरा गुरु हूं, खबरदार दिया तो! मैं तेरा गुरु हूं। कई लोग ऐसे होते हैं, हमें दो, दूसरे को देना मत! हमारी संस्था में दो, दूसरे की संस्था में मत दो! इससे तो फिर हद हो गई धर्म की उग्रता! और लोग कहते हैं कि कथा में मत जाओ! आप थोड़े जागृत नहीं होते क्या? मेरी अकेली व्यासपीठ को बहुत काम करना पड़ रहा है। लोग तो वाह-वाह के पूजारी है! प्रलोभन और भय ने मार डाला! माता-पिता की बात माननी चाहिए। लेकिन वो माता-पिता होना चाहिए। गुरु की बात माननी चाहिए। लेकिन वो गुरु होना चाहिए। और ईश्वर-प्रभु की बात माननी चाहिए लेकिन वो प्रभु होना चाहिए।

तो बाप! गुरु को परखो। गरु भी गलत संदेश दे तो आदर के साथ, विनय के साथ उसको कहो कि हम रामकथा सुनने क्यों न जाये? और आप जितना रोको, मेरे यहां दुगुना आयेंगे! माता, पिता, गुरु की बानी बिना सोचकर मानो, जब मेरा प्रभु ये आदेश देता है तो पहले ये निश्चित्त करो कि माँ कौन है, पिता कौन है, गुरु कौन है? तो लाओत्सु का मैं आश्रय कर रहा हूं। लाओत्सु कहता है कि एक राजा ऐसा होता है जो उसके द्वारा सबकुछ होता है, लेकिन हमारा बोज नहीं बनता। दूसरा राजा ऐसा होता है कि दुनिया उसकी पूजा करती है। तीसरा राजा वो है, दुनिया जिसे प्यार करती हो। चौथा राजा वो है, दुनिया जिससे डरती है। पांचवां राजा वो है, दुनिया जिसकी उपेक्षा करती है; अंदर से धिक्कार देते हैं, लेकिन बोल नहीं पाते। मेरा क्षेत्र अध्यात्म है। मैं उसको आध्यात्मिकता की ओर मोड़ दूं। वैसे गुरु भी पांच प्रकार के होते हैं। इनमें से जो मुद्दा और है कि 'मानस' अद्भुत शास्त्र है, आप पढ़ो तो ऐसे पढ़ो कि तुम्हारा अव्यक्त गुरु तुम्हारे पास बैठा है, वो तुम्हें अर्थ देता जाएगा। जो हम सबके बीच में है और दिखाई न दे तो मेरी व्यासपीठ उनको कहेगी त्रिभुवनगुरु। त्रिभुवन में कोई परमतत्त्व बचा है, लेकिन दिखता नहीं है। न हमारा बोज बनता है, न हमें परवश करता है। होते हुए हमें न होते हुए दिखता है। और उनके होने से हम है। वो ना होता तो हम ना होते। वो है त्रिभुवनगुरु, जिसकी चर्चा गोस्वामीजी ने की है।

तुम्ह त्रिभुवन गुर बेद बखाना।
आन जीव पाँवर का जाना।।

भगवान महादेव, भगवान शिव एक ऐसा त्रिभुवनगुरु है, उनके होने से हम हैं, लेकिन हमें बांधता नहीं है। स्वतंत्रता दिए हुए हैं, हम सब पर उनका छाया है, लेकिन स्वाधीनता दिये हुए हैं, सब में होते हुए भी अव्यक्त अपने को रखता है।

तुं एम वर्ते छे के आ जगतमां तुं नथी,
मारे जोवो छे तने पण तारे देखावुं नथी.
हुं हाथने मारा फेलावुं तो तारी खुदाई दूर नथी,
पण हुं मागुं ने तुं आपे ए वात मने मंजूर नथी.

- नाज़िर देखैया

तो वो गुरु है परमगुरु, महादेव। मैं प्रार्थना करूं आपको कि आपको कहीं भी गुरु में श्रद्धा दिखाई न दे तो महादेव को गुरु मान लो दक्षिणा नहीं मांगेगा। और महादेव में समझ ना पड़े तो ये मेरा पवनकुमार।

जै जै जै हनुमान गोसांई।
कृपा करौ गुरुदेव की नांई।।

तो महादेव त्रिभुवनगुरु है। दूसरा गुरु मैं जगद्गुरु कहता हूं।

जगद्गुरुं च शाश्वतं तूही ही मेव केवलाम्।
नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं।।

जिसको समझ आ गई है वो वेद पढ़ा हो तो भी दीवारों में कैद नहीं है। मैं 'वीरायतन' में कथा कह रहा था, 'वीरायतन'वाली माँ, नव दिन बैठी और जब कीर्तन होता है तो खड़ी होकर नृत्य करती है! जैन परंपरा की ये आप कल्पना करो! जो समझ गये हैं, उसने दीवारें तोड़ी है। खिड़कियां खुली रखो प्यारो।

राशिद किसे सुनाउं गली में तेरी गज़ल,
उनके मकां का कोई दरीचा खुला न था।

फ्रेश हवा आने दो। तो दूसरा है जगद्गुरु। जगद्गुरु पूज्य है। पूजा करते हैं उसकी। करनी चाहिए। वो पूजनीय है। लाओत्सु कहते हैं, तीसरा शासक है जिसे लोग प्यार करते हैं, पूजा नहीं। पूजा बहुत सस्ती है, प्यार बहुत महंगा है। प्रेम कितना महंगा होता है! पूजा बहुत सस्ती है। प्रेम तो बलिदान मांगता है। आप मत जाओ, ऐसा कहूं तो प्रेम में दबाव डाला है ऐसा माना जाएगा; प्रेम कलंकित हो जाएगा।

तो त्रिभुवन गुरु वो है, जो हमारा बोज ना बने। जगद्गुरु वो है जिसको हम पूज्य कहते हैं, पूजा करते हैं। सद्गुरु वो है, जिसे हम प्यार करते हैं। लेकिन धर्मगुरु वो है जिससे हम डरते हैं, क्योंकि वो पाप-पुण्य की बातें करेगा, तूने ये किया, तू नरक जायेगा! धर्मगुरु का डर लगता है। वो बांधता है। अच्छा शब्द है, 'धर्मगुरु', बुरा शब्द नहीं है। कभी-कभी लोग गंगाजल से शराब बना लेते हैं! फिर लोग गंगाजल मानकर पीते भी हैं! लेकिन है शराब! धर्मगुरु से डर लगता है। शब्द पावन है, पवित्र है, जरा ध्यान देना लेकिन डरा रहा है धर्म! डराये वो धर्म काहेका? जिस धर्म का प्रचार करना पड़े वो धर्म क्या? सूरज को स्तुति करो तब सूरज निकलता है? सूरज अपने आप निकलता है। तुम निंदा करो तो भी निकलता है, तुम स्तुति करो तो भी निकलता है। तो धर्मगुरु वो है जिससे हम डरते हैं। और पांचवां जिसकी लोग अपेक्षा करते हैं अंदर से कि ये जाये तो अच्छा है! इसको कहते हैं कुलगुरु। कुल का पुरोहित कहते हैं। इसको कहते हैं, जल्दी दक्षिणा दे दो, यहां से जाय!

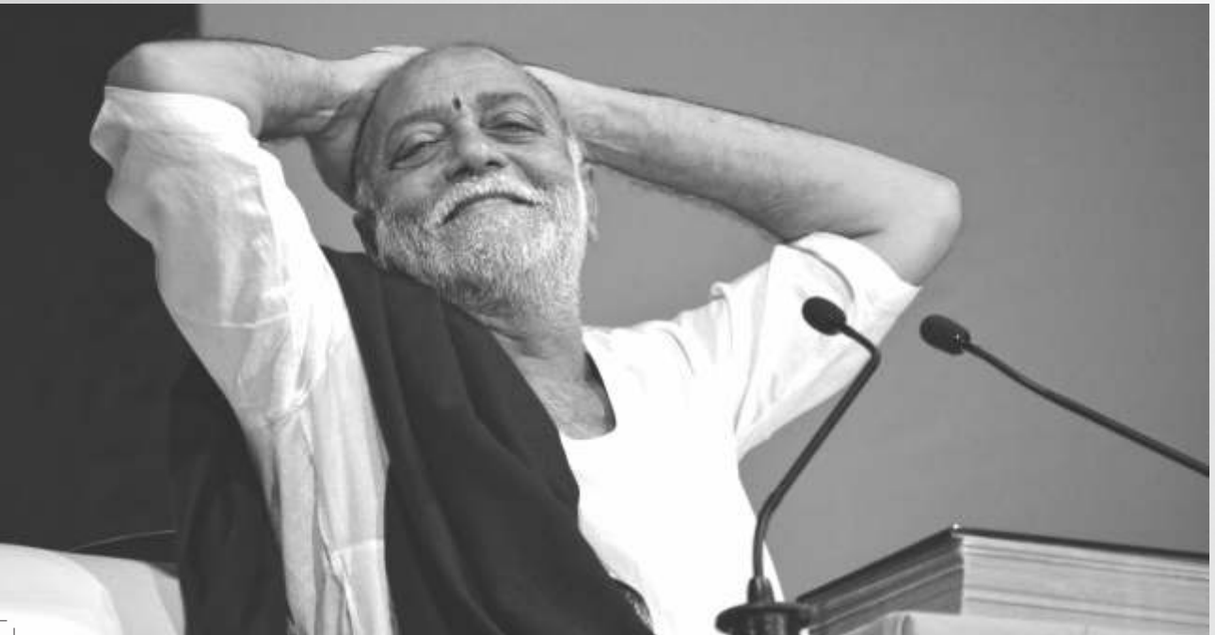

तो मैं ये बात से आगे बढ़ गया कि सिंहिका के सामने हनुमानजी बहुत बड़े मूल रूप से विशाल काया से जा रहे तो गिराने की कोशिश की। और लंकिनी के सामने अति लघु रूप लिया तो खाने की कोशिश की। दुनिया में ऐसी समस्या है, बड़ा बनो तो लोग गिराने की कोशिश करते हैं, छोटे बनो तो लोग खाने की चेष्टा करते हैं! क्योंकि दुनिया ऐसी है कि उसको कुछ रास ही नहीं आता! हनुमानजी ने लंकदर्शन में हमें ये मार्गदर्शन दिया मेरे युवान भाई-बहन। जैसे ही वो प्रवेश करने गये हैं, वैसे ही लंकिनी ने उसे रोक दिया, मेरा निरादर करके तू कहां जाता है, खबरदार तू अंदर गया तो! कितना भी तू छोटा बन जाये, खा जाऊंगी तुझे मैं! मैं चोरों को ही खाती हूं! और श्री हनुमानजी ने कोई काम नहीं किया और बहुत बड़ा सत्संग किया लंकिनी से। जैसे हनुमानजी को रोका ही तो 'मुठिका एक महा कपि हनी।' सत्संग की प्रक्रिया समझो। सत्संग का पहला काम है मस्तक पर मुक्का मारना। आप पीठ पर मुक्का मारने के आदती हो गये हैं इसलिए सत्संग का कोई परिणाम नहीं पा रहे हैं! कहो परमात्मा को कि मेरे गुरु का मुक्का मेरे मस्तिष्क पर लगे। स्थूल रूप की बात नहीं है।

'लंकाकांड' की ये कथा बड़ी रहस्यमय है। हनुमानजी ने रावण को पीठ पर मुक्का मारा। यहां लंकिनी को मस्तिष्क पर मारा। हनुमानजी का सत्संग विचित्र है! दो जगह अलग मुक्के। ये मुक्के से सत्संग करता है। गज़ब का आदमी है! अब देखो, 'लंकाकांड' में क्या लिखा है, जैसे हनुमानजी ने रावण के पीठ पर मुक्का मारा तो रावण मूर्छित हो गया, लेकिन जब जागा तो 'कपि बल विपुल सराहना लागा।' तो रावण की पीठ पर हनुमानजी ने मुक्का मारा तो रावन गिरा और फिर हनुमानजी की सराहना करने लगा। अब कोई बढ़िया सत्संग सुनाये और सुननेवाला कोई महात्मा की सराहना करे कि क्या बाबा आपने क्या मुक्का मारा! क्या आपने सुनाया! तो महात्मा राजी होगे ना? तो हनुमानजी राजी नहीं हुए! हनुमानजी ने कहा, मेरे मन को धिक्कार है, मैंने तो इसीलिए मुक्का मारा कि तेरी ज़िंदगी बदल जाये! लेकिन तू तो वैसा का वैसा ही खड़ा हो गया! तेरे में कोई परिवर्तन नहीं आया! पीठ पर मुक्का सत्संग ने ऐसा ही किया सदियों से कि मूढ़ वैसे के वैसे ही रह गये! क्योंकि पीठ पर मुक्का लगा! मुक्का लगना चाहिए मस्तिष्क पर। मस्तिष्क में बुद्धि रहती है और बुद्धि में हमारी जनम-जनम की परंपरायें पुरानी परंपरा जड़ बनती है। सत्संग क्या करता है? पहले पुरानी परंपरा को तोड़ देता है। परंपरा जड़ ना हो, प्रवाही हो। देशकाल के अनुसार मुड़ती हो। गोस्वामीजी कहते हैं, मस्तक पर सत्संग का मुक्का लगेगा तो पुरानी जो जड़ धारणा है वो मिटनी चाहिए। तो ये जड़ धारणा क्या थी लंकिनी में? लंकिनी सोच रही है, मैं रावण का अन्न खा रही हूं तो लंका में जो प्रवेश करे उसको चोर कहके पकड़ के मेरा कर्तव्य है। ये झूठी धारणा है। यदि तेरा खोराक ही चोर है तो सबसे बड़ा चोर लंका में है। खाने की शुरूआत वहां से कर! जो मेरी माँ जानकी को चुराके लाया है। उसकी तो तू सेवा करती है! बड़े चोर की तू सेविका है! लेकिन उनकी पुरानी परंपरा, मैंने उनकी रोटी खायी है, उनकी मैं सेविका हूं, उसने मुझे अच्छी पोस्ट पर नियुक्त किया है इसलिए मेरा कर्तव्य है कि मैं अपनी ड्यूटी निभाऊं। हमारा ये धर्म कहता है, हमारे पूर्वजों ने ये कहा है, ये सुधारा करो। समय के साथ उसका परिवर्तन करो। अनावश्यक वस्तु को हटाना चाहिए विवेक से। ये पुरानी धारणा हनुमानजी तोड़ रहे हैं लंकिनी के मानस की। और पुरानी धारणा को तोड़नी है। मैंने रावण की रोटी खायी है। अब इसी को परंपरा माना तो हनुमानजी ने लंका के ही फल खाये थे; लंका के राक्षस को ही मारे थे। सूत्र सुधारने चाहिए। विवेक की दृष्टि से देखना चाहिए।

मेरे भाई-बहन, लंकादर्शन में सत्संग का अद्भुत वर्णन है, उसको महसूस किया जाय कि सत्संग वो है, किसी संत का मुक्का हमारे सर पर आये और हमारी बुद्धि पर आये और हमारी बुद्धि की गलत धारणाओं को बदल दे। दूसरा क्या हुआ? लंकिनी के मुख से रक्त निकला। कोई बहुत बड़ा महात्मा होता है ना तो उसके लिए एक शब्द बोला जाता है, वो विरक्त है, जिसकी आसक्ति कम हो चुकी है, जिसका राग छूट गया है। सत्संग के प्रभाव का दूसरा मुक्का होना चाहिए, कथा सुनते-सुनते थोड़ा हमारा राग कम होता हो, थोड़ी इर्ष्या कम हो। भगवान की कथा भगवत् सत्संग सुनते-सुनते आसक्ति और रागात्मिक भाव कम हो। कोशिश ना करे लेकिन ये तो बहुत बड़ा अमृत पीने के बाद ओर रस फीके लग जायेंगे। तो लंकिनी के मुंह से रक्त निकल गया, मानी वो धीरे-धीरे विरक्त होने लगी। अब मुठिका मारी तो गिर पड़ी थी, लेकिन 'पुनि संभानि उठी सो लंका।' सत्संग गिराता है, लेकिन सत्संग के बाद

गिरे ही मत रहना, सत्संग के सूत्रों को समझकर संभाल के फिर उठना।

ये तीन लक्षण है, बौद्धिक धारणा का नाश। आसक्ति और राग धीरे-धीरे कम हो। और तीसरा, सत्संग करनेवाले कर्तव्य ना छोड़ दे, उठे। अपने लक्ष्य की ओर गति करे। जो चोर कह रही थी हनुमानजी को फिर वो हाथ जोड़ने लगी। गिरने के बाद हम किसी संत के पास उठते हैं तो एक उपकार, एक अहोभाव, हाथ जोड़े जाते हैं, विनय करने लगते हैं और फिर लंकिनी बोली -

तात मोर अत्य पुन्य बहूता।
देखेउँ नयन राम कर दूता।।

प्रार्थना करता हूं, आप 'सुन्दरकांड' का पाठ करते हैं, चौपाई गा रहे हैं, पड़े मत रहो। 'देखेउँ आंखों से राम, ऐसा लिख सकते थे। नयन क्यों लिखा? 'नयन' शब्द बहुत प्यारा है-न, य, न। इधर से पढ़ो, नयन; उधर पढ़ो नयन। लंकिनी कहती है, किसी भी दृष्टि से देखूं तो हे हनुमानजी, तू मुझे संत लग रहा है, इसीलिए नयन। आंखों से देखूं तो एक आंख से तू चोर लगता है, दूसरी आंख से साधु लगता है, तीसरी आंख से तू विचित्र लगता है! लेकिन अब मेरी आंखें एक चमड़े की उपकरण नहीं है, अब तो ये नयन है। इधर से देखूं तो भी तू साधु लगता है, इधर से देखूं तो भी साधु। पीछे से देखूं तो भी साधु, आगे से देखा तो भी साधु। इसीलिए तुलसी शब्द का चुनाव बड़ा प्यारा करता है। मेरे बहुत पुण्य है कि आज मेरे नेत्रों से सब दृष्टि मैंने देखा कि आप राम के दूत हैं, आप परमसंत है। तो श्रीहनुमानजी का सत्संगवाला 'मानस' में दर्शन करवाया और जो हनुमान को खानेवाली थी वो कहती है, महाराज, अभी तक तो मैं ये मानती थी, लंका का राजा रावण है लेकिन मेरी बुद्धि की भ्रांति टूट गई। मेरा राग कम हो गया, मुझे संत की पहचान हो गई और मुझे सत्संग मिल गया तो मेरा दर्शन बदल गया। लंका का असली राजा रावण नहीं है। लंका का असली राजा तो कौशलपुर राजा है। जो भगवान राम है वही असली राजा है।

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदयँ राखि कोसलपुर राजा।।

कितनी सुंदर शुभकामना दे रही है! आप नगर में प्रवेश करके सब काम कीजिए। हृदय में कौशलपुर राजा रख करके आप प्रवेश कीजिए। 'गरल सुधा' आपके लिए झेर अमृत हो जाएगा। ये आशीर्वाद सफल हुआ लंकिनी का। लंकिनी के द्वारा शुभकामना मिली इसका परिणाम यह आया कि हनुमानजी जहर से बच गये और अमृत के फल खाने लगे।

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई।।

दुश्मन मैत्री करेगा। लंका में तो सब दुश्मन है। लेकिन दुश्मन सब मैत्री करेगा। विभीषण रावण का भाई है, दुश्मन का भाई है, लेकिन हनुमानजी से दोस्ती हो गई। आप लंका आये तो कितने विघ्न आये! अब बिलकुल सहजता से यात्रा कर सकोगे। लंका में आग लगायी जाएगी और पूरी लंका जलेगी लेकिन आपके लिए अग्नि शीतल हो जाएगी।

भगवान के कार्य करने निकलनेवालों को थोड़ी मुश्किल तो होती है, लेकिन शुभकामना बहुत मिलती है। असुर दुश्मन भी दुआ करता है कि जाओ। हनुमानजी लंका में प्रवेश कर जाते हैं। रात्रि का समय है। श्रीहनुमानजी का लंकदर्शन चल रहा है। 'मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा।' रावण नामकरण में बड़ा चतुर निकला! सब घर को उसको मंदिर ही नाम दे दिया कि लोगों को भ्रम हो जाये! हनुमानजी को भी थोड़ा भ्रम हुआ कि सब मंदिर ही है! मंदिर में तो भक्ति होनी चाहिए। मंदिर में तो शांति होनी चाहिए। सीता मानी शांति। सीता मानी भक्ति। सीता मानी शक्ति। सीता के तीन रूप समझियेगा। गोस्वामीजी 'बालकांड' में लिखते हैं, सीताजी आदि शक्ति है; शक्ति है, शांति है और भक्ति है। तो हनुमानजी खोज रहे हैं कि मंदिर में तो शांति होनी चाहिए। लेकिन वहां तो युद्धनर, वहां तो बड़े-बड़े योद्धा सोये हुए हैं! क्या परफेक्ट दर्शन है! मंदिर में तो भक्ति होनी चाहिए। दिखी नहीं। मंदिर में शांति और शक्ति होनी चाहिए। यहां तमोगुण है! हर मंदिर में हनुमानजी निराश होते चले! यात्रा करते-करते हनुमानजी की आंखों से दर्शन किया-

गयउ दसानन मंदिर माहीं।
अति बिचित्र कही जात सो नाहीं।।

रावण के मंदिर में गये। बड़ा अति विचित्र मंदिर है। रावण को सोये हुए देखा। हनुमानजी को लगा कि ये सब मंदिर से तो मैं देखकर निकल गया। ये रावण का मंदिर है। माँ जानकी को चुरा के आया है तो कहीं न कहीं इस अति विचित्र मंदिर में उसे जानकी को छिपाई होगी। इसलिए हनुमानजी खोज कर रहे लेकिन कहीं मंदिर में जानकी न देखी। अब क्या करूं? रात्रि है। गति करनी है। तो

हनुमानजी सोच रहे हैं कि कहां जाऊं? विभीषण का घर है, वह भवन है। वहां मंदिर नाम नहीं दिया। मंदिर तो वहीं भी है, लेकिन 'हरिमंदिर तहं भिन्न बनावा।' विभीषण का भोग भवन बिलग है और पूजाभवन बिलग है, जिसको मंदिर की संज्ञा दी। हरि का मंदिर जहां अलग से बना है। श्रीहनुमानजी वहां जाते हैं। यहां कुछ बिलग-सा लगता है। सोचने लगे कि गज़ब है कि मंदिर बिलग है, भवन बिलग है! रामनाम अथवा रामायुध अंकित गृह है। आंगन में तुलसी का गमला है। हनुमान को बहुत हर्ष हुआ कि लंका में वैष्णव कहां से! आंख हो तो दुर्जनों के बीच में भी सज्जनता मिल जाती है। और कभी-कभी देखे तो सज्जनों के बीच में भी मंथरा मिल जाती है! ये दुनिया गुण-अवगुण से सनी हुई है। मात्रा भेद है।

तो हनुमानजी सोच रहे हैं कि लंका में तो निशिचरों का वास है। यहां सज्जन कहां? जब हनुमानजी विभीषण के आंगन में आ गये, तर्क करने लगे उसी समय विभीषण जागा। कौन-सा समय था, लिखा नहीं है। लेकिन जाग गया इसका मतलब है कि जीव सोया हुआ है, कोई साधु प्रवेश करता है तब वो जाग जाता है। राम-राम कहते-कहते विभीषन जागा। हनुमानजी बहुत हर्षित हो गये। सही में सज्जन है। आंगन में खड़ा है एक साधु और वैष्णव जागा। आंगन में एक साधु को देखते भाव में डूब गया कि आप कौन है? कहां से आये? आपको देखकर इतना अच्छा क्यों लग रहा है? परमात्मा ने मुझ पर कृपा करके आपको तो नहीं भेजा है? मैं कितने समय से प्रतीक्षारत हूं। और आप आ गये, आप कौन है? श्रीहनुमानजी महाराज और विभीषण का मिलन होता है। दोनों मिले। विभीषण अपनेआप को जरा कोसने लगा कि मैं सुत, मेरे पर प्रभु कृपा करेंगे? हनुमानजी ने कहा-

कहहु कवन मैं परम कुजीना।
कपि चंचल सबहीं बिधि हीना।।

तू बता, मैं कौन हूं? कुलीन कुल में पैदा हुआ हूं? चंचल वृत्तिवाला बंदर सब प्रकार से हीन हूं। लेकिन मेरे पर प्रभु ने कृपा की कि मैं समंदर नांघ कर आया; विघ्न पार करके आया। लंकिनी ने मुझे शुभकामना दी और मैं यहां तक पहुंच गया। तुम अपनेआप को मन में कोसों मत।

हनुमानजी ने जो-जो अर्थ निकाले उससे विभीषण बहुत प्रसन्न हुए। विभीषण ने कहा, महाराज, मुझे पता था, ठाकोरजी मुझ पर कभी कृपा करेंगे। तुलसी का गमला रखा हुए है, दीवाल पर रामनाम लिखा है। सुबह में मंत्र बोल कर उठता हूं। हनुमानजी ने कहा, ये भ्रांति में मत रहना, तेरे पर राम कभी कृपा नहीं करेंगे। विभीषण ने कहा, महाराज, आप सब ऊल्टा ही बोलते हैं! मैं इतना करता हूं, कृपा नहीं, क्यों? तू ये सब करता है, राम, राम करता है। मैंने भी सुना, तू राम राम करता है, लेकिन जिस राम का नाम तू मंत्र के जप में जपता है, उसी राम की जानकी को तेरा भाई चुरा के लाया और तू रावण की मंत्रीपरिषद का एक प्रधान है। तेरा कर्तव्य नहीं कि तू राम को भजनेवाला रावण को एक बार कहे कि तूने अपहरण किया वो ठीक नहीं। राम राम भजे और राम का काम ना करे तो उस पर प्रभु कृपा नहीं करते। तू काम कर। विभीषण ने कहा, कल की सभा में रावण को ललकारूंगा कि सीता को लौटा दो। काम करूंगा तब तो कृपा करेंगे ना? हनुमानजी ने कहा, कृपा तो ओलरेडी हुई है। तेरे पर राम कृपा नहीं, तेरे पर राम प्रेम करेंगे। और प्रेम करेंगे, ऐसा विभीषण ने सुना तो विभीषण बहुत प्रसन्न हो गया। उसको उत्साह से भर दिया। अब हनुमानजी कहते हैं, हे भाई, मैं माँ जानकी का दर्शन करना चाहता हूं। विभीषण की हृदय की प्रसन्नता विशेषरूप में खिलती जा रही है और उसके बाद विभीषण युक्ति बता रहा है सीता तक पहुंचने की। जिसको मंज़िल प्राप्त करनी हो उसको जहां भी अच्छा मार्गदर्शन मिले, ले लेना चाहिए। जानकी के तीन रूप मैंने

सीता को दूसरे रूप में देखें तो सीता है भक्ति। भक्ति को पाने की तीन युक्ति। पहली युक्ति विश्वास। भक्ति मिलती है विश्वास से। दूसरी युक्ति विभीषण बताते हैं, भगवान शंकर का भजन करने से भक्ति मिलती है। आप किसी भी संप्रदाय के हो, किसी भी धर्म के हो, यदि जिद्द छोड़ दे, यदि आपकी आक्रमकता कम हो जाये, आप दीवारों से मुक्त हो जाये तो आपको मानना होगा कि शिव सुमिरन के बिना भक्ति नहीं मिलती। भक्ति का भंडारी, भक्ति का दाता भगवान महादेव है। और भक्ति पाने की तीसरी युक्ति है कृपा।

आपके सामने रखे, शक्ति, शांति और भक्ति। शांति, शक्ति और भक्ति पाने की जुगति कौन है, मुझे आपके सामने ये रखना था, ये लंकदर्शन है।

एक बार मैंने किसी कथा में नव प्रकार की जुगति बताई है। मेरे पुराने श्रोताओं को याद होगा कि विभीषण भक्ति की नव युक्ति बताते हैं कि भक्ति कैसे प्राप्त करे। यहां दूसरा दर्शन; पहले शांति, शांतिरूपी सीता पाने की युक्ति कौन है? शांति मिलती है तीन विधा में। शांति मिलेगी अभय से। पहली युक्ति; जब तक हमारे में अभय नहीं आता तब तक हम शांति प्राप्त नहीं कर सकते। हम अशांत होते हैं भय के कारण। दूसरी युक्ति, त्याग नहीं आता तब तक शांति नहीं मिलती। आप सोचिए, संग्रह करनेवालों को शांति नहीं मिलती। मानो या ना मानो, जितना ज्यादा परिग्रह है, आदमी इतना कम शांत है। आप किसी संत के पास बैठे हो लेकिन आपके पास ज्यादा संग्रह है और इस संग्रह में कुछ गड़बड़ होगी तो ये संग्रह तुम्हारा सत्संग छुड़वा देगा, शांति भंग कर देगा। तो पहली युक्ति है सीतारूपी शांति को प्राप्त करने की अभय। दूसरी युक्ति सीतारूपी शांति प्राप्त करने की त्याग। और तीसरी युक्ति शांति प्राप्त करने की अहिंसा। हिंसक अशांत हो जाये, अहिंसक शांत हो जाये। सीधी-सी बात है। जो हिंसा करता है वो शांत नहीं होता। ये पहले से ओलरेडी विकृत है, तभी तो ये हिंसा करता है। शांत कभी हिंसा नहीं कर सकता।

तो शांति को पाने की तीन युक्तियां मेरी व्यासपीठ कहना चाहती है। अब सीता को दूसरे रूप में देखे तो सीता है भक्ति। अब भक्ति को पाने की तीन युक्ति। पहली युक्ति विश्वास। मेरे गोस्वामीजी 'विनयपत्रिका' में लिखते हैं-

बिस्वास एक राम नाम को।

एक भक्ति मिलती है विश्वास से। दूसरी युक्ति विभीषण बताते हैं, भगवान शंकर का भजन करने से मिलती है। आप किसी भी संप्रदाय के हो, किसी भी धर्म के हो, यदि जिद्द छोड़ दे, यदि आपकी आक्रमकता कम हो जाये, आप दीवारों से मुक्त हो जाये तो आपको मानना होगा कि शिव सुमिरन के बिना भक्ति नहीं मिलती। भक्ति का भंडारी, भक्ति का दाता भगवान महादेव है। तीसरी युक्ति है कृपा। 'मानस' में लिखा है-

धीरजु मन कीहन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई।।

तो शांति पाने की तीन विधा; भक्ति पाने की तीन विधा। तीसरा, सीता है शक्ति। शक्ति पाने की भी तीन विधा। हमारे जीवन की कुछ मौलिक मांगे है। जगत में जीव आता है तो मौलिक मांग लेकर आता है। इनमें से एक मांग है ज्ञान की। हमें ज्ञान प्राप्त हो। एक मांग है कला; किसी विद्या की प्राप्ति हो। एक मांग होती है हमें प्रेम की प्राप्ति हो। एक मांग होती है हमें सुख की प्राप्ति हो। एक मांग होती है हमें आनंद की प्राप्ति हो। इनमें से एक मांग है हमें शक्ति की प्राप्ति हो। सब शक्ति चाहते हैं। और जरूरी भी है, लेकिन शक्ति प्राप्त करने की विधा क्या है? 'मानस' के आधार पर कहूं तो शक्ति प्राप्त करने के लिए पहली विधा है स्थिरता। जो डामाडौल हो वो शक्ति प्राप्त नहीं कर सकता, मिली हुई शक्ति को बिखैर देता है। स्थैर्य शक्ति का जन्मदाता है। प्रमाण नगाधिराज हिमालय। सदियों से युगों से ये स्थिर है और उसका ये स्थैर्य का कारण बना शक्ति का जन्म। जो दक्षकन्या थी। दक्षकन्या के रूप में भी सती संपन्न थी लेकिन उसकी शक्ति में भटकाव था, बिखराव था। हिमालय की स्थिरता से प्रकट हुई शक्ति तब उसका रूप कुछ बिलग है।

तो मेरी व्यासपीठ के मुताबित शक्ति प्राप्त करने की एक युक्ति है स्थैर्य, स्थिरता। शक्तिरूपी कन्या को प्राप्त करने की दूसरी विधा है मौन। आदमी जितना मौन रहेगा, शक्ति बढ़ेगी; जितना मुखर होता है शक्ति छिन जाती है। मौन शक्तिदाता है। जितना ज्यादा बोलते हैं आदमी की शक्ति का क्षय होता है। शक्ति को जन्म देने के लिए चाहिए मौन, प्रेक्टिकल सायलन्स। कभी-कभी हम मौन रखते हैं तो जिद्दी हो जाते हैं! शक्ति का जन्म होता है स्थैर्य से। शक्ति प्रकट होती है मौन से। कुछ मेरे अनुभव से शक्ति प्रकट होती है रामनाम के सुमिरन से। शक्ति प्रकट होती है रामनाम से। क्योंकि खुद को एक महोर जग गई, क्योंकि हनुमानजी को पता है कि मेरे में शक्ति कहां से आयी।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लांधि गये अचरज नाहीं।।

मुद्रिका मैंने मुख में रखी थी तो मैंने समंदर नांघे। समंदर नांघने की शक्ति कहां से आयी? क्योंकि मेरे मुंह मुद्रिका थी। मुद्रिका में रामनाम अंकित अति सुंदर। तो रामनाम से बहुत शक्ति मिलती है। विभीषण ने शक्ति, शांति और भक्ति की तीन युक्तियां बतायी। श्री हनुमानजी महाराज विभीषण को मिलकर अशोकवाटिका में प्रवेश करते हैं। और उसके बाद के लंकदर्शन की चर्चा हम कल करेंगे।

मानस-सुन्दरकांड
॥ ५ ॥

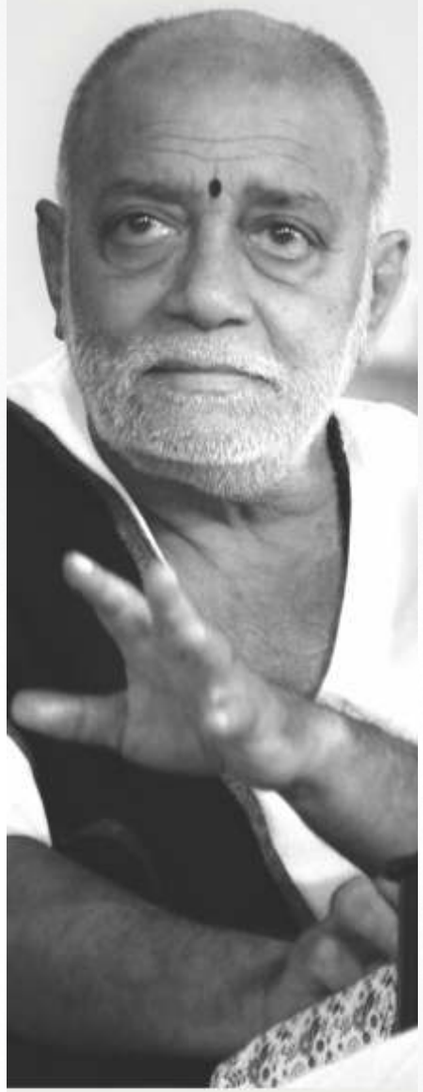

दशमुख होना कि दशरथ होना हमारे हाथ में है

आज अषाढ़ी बीज, रथयात्रा का बड़ा पावन दिन। मन ही मन जगन्नाथपुरी की यात्रा कर लें। अहमदाबाद में भी जगन्नाथ मंदिर से निकलनेवाली, निकल चुकी होगी, पूरी हुई होगी रथयात्रा। गांव-गांव जहां रथयात्रा का उत्सव है। रथयात्रा की बहुत-बहुत बधाई, शुभकामना। साथ-साथ कई लोग कहते हैं, आज ईद है। कोई कहते हैं, कल है। जो भी हो, सबको, पूरे संसार को ईद मुबारक। प्रसंग प्रवेश हो इससे पूर्व कल एक अघोषित कार्यक्रम था। सरल और समर्थ गायिका कौशिकी चक्रवर्ती ने कल करीब दो घंटे अपना शास्त्रीय गायन बहुत विवेक और मर्यादा से पेश किया। सूर और स्वर आदमी को अधिक सुंदर बना देता है। इतना ही नहीं, स्टेइज को भी स्वर और सूर विशेष सुशोभित करता है। मेरी व्यासपीठ की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं। आगे बढें, 'मानस-सुन्दरकांड।' लंकिनी के साथ एक विशेष प्रकार का सत्संग कर के श्री हनुमानजी लंका में ओलरेडी प्रवेश कर चुके हैं और अपनी आंखों से लंकादर्शन कर रहे हैं। समंदर के तट पर एक शिखर पर चढ़कर उसने स्थूल रूप लंकानगरी का दर्शन किया। उसके बाद लंकानगरी की लंकिनी बनकर खुद की चौकी कर रही थी ये लंकिनी के साथ भी बातचीत की। फिर लंका में प्रवेश करते हैं। और मंदिर-मंदिर में प्रवेश करते हुए वो दशानन के मंदिर में हनुमानजी प्रवेश करते हैं और वहीं से हनुमानजी का रावणदर्शन शुरू हो जाता हैं। यद्यपि बीच में हनुमानजी की आंखों में जानकी का दर्शन है लेकिन यहां पहली बार हनुमानजी के नेत्रों में दशानन का दर्शन करने योग्य है।

दशमुख होना कि दशरथ होना हमारे हाथ में है। दो पात्र 'मानस' के रहस्य हैं। दोनों में दश का अंक सामान्य है। दशमुख रावण, दशरथ अवध नरेश। और इस संसार में किसीका मूल खराब नहीं है। परिस्थिति, देश, काल, अपनी प्रकृत्ति और अपनी प्रवृति ये पांच कोई ऐसी रस्सियां है कि जो आदमी को खींच कर कभी दशमुख बना देती है, कभी दशरथ बना देती है। एक तो परिस्थिति, संजोग। दूसरा देश और काल और स्थान और समय। तीसरा व्यक्ति का स्वभाव और चौथी व्यक्ति की प्रवृत्ति इन पांचों को, इस पंचक को व्यक्ति की दशमुख और दशरथ होने की भूमिका मानी गई है। बाकी मूल में चाहे दशरथ हो चाहे दशमुख हो, सब में सत्त्व ये पड़ा है। रावण का मूल है सत्यकेतु; राजा; उसका बेटा प्रतापभानु पूरा कुल 'रामायण' में पढ़ लीजिए आप। इससे बढ़िया कुल किसीका हो सकता है? रावण का जो कुल है, इसकी जड़ें एक बहुत पावन कुल में है। प्रतापभानु बहुत अच्छा राजा है। लेकिन देश-काल, परिस्थिति, प्रवृत्ति और प्रकृति के कारण दूसरे जन्म में वो दशमुख बन जाता है। इधर दशरथ का मूल

कितना पवित्र? मनु उसका मूल है। ये आदम, ये ईव, ये विज्ञान का उत्क्रांतिवाद, विकासवाद ये सब जड़ का विकास और धीरे-धीरे आदमी ऐसे-ऐसे इन्सान बन गया, मानव बन गया। मानव बन गया ये उत्क्रांतिवाद है। लेकिन ये पाश्चात्य विचार है, वैज्ञानिक विचार है। उसकी अनदेखी न करे। फिर भी हमारी मूल परंपरा को भी अनदेखी न करे। मनुष्य मनु की संतान है। प्रमाण 'मानस'; ये पूरी नरसृष्टि मनु से शुरू हुई है। मनुज का अर्थ है मनु से जन्म लेनेवाला। जैसे जलज, जल से जन्म लेनेवाला। मनुज माने मनुष्य, मनु से जन्म लेनेवाला मनुष्य।

एक बच्चे का प्रश्न है। ''बापु, जय सीयाराम। मारो पांच वर्षनो पौत्र रोहन, ए मने पूछे छे, God made us, but who made God? एने केवी रीते समजाववुं? बापु, मदद करो। रोहनने 'हनुमानचालीसा' आवडे छे। तेमज 'रामायण' नां बधां पात्रोने ओळखे छे। हनुमानजी एने बहु ज प्रिय छे। गमे छे।'' बेटा रोहन, बच्चुं, God made us, we made God. हमने परमात्मा को बनाया है। निराकार को हमने आकार दिया है। अभिराम को हमने राम बना दिया है। व्यापक को हमने व्यक्ति बना दिया है। जगत के बाप को हमने बेटा बना दिया है, बंधु बना दिया है। परमात्मा हम ने बनाया है। परमात्मा हमारी इरजाद है।

छुं शून्य ए न भूल ओ अस्तित्वना खुदा,
तुं तो हशे के केम पण हुं तो जरूर छुं!

मैंने तुझे बनाया है। किस ने मूर्तियां बनाई? हमने। किसने रूप दिए ठाकुर को? हमने। किस ने पूजा की? हमने। पथ्थर से किसने मूर्ति बनाई? हमने। किसने प्रतिष्ठा की? हमने। और ये हमारा सर्जन है। इसलिए हमको अच्छा लगता है। अपना सर्जन सबको प्रिय लगता है। ईश्वर हमारा बनाया हुआ है। तो बाप! परमात्मा को हमने बनाया है। हमारा सर्जन है ये।

तो हमारे आदि माता-पिता मनु-शतरूपा; ये भारतीय दर्शन है। उनको अनदेखा न किया जाए। तो दशरथ वो ही मनु का दूसरा जन्म है। दशमुख रावण वो ही प्रतापभानु। जो प्रकाश उनका है। मूल सबका अच्छा है। लेकिन परिस्थिति, देश-काल और प्रवृत्ति और प्रकृति के कारण आदमी दशमुख बन जाता है; आदमी दशरथ बन जाता है। बाकी जहां उद्गमस्थान है वहां तुलसी विज्ञान को बड़ा आदर देते हैं। लेकिन अपना सविनय विरोध भी प्रकट करते हैं। विज्ञान कहता है, ये दुनिया जड का विस्तार है। पहले कुछ नहीं था। थोड़ा चैतन्य दिखा फिर ये देखा कि ये हुआ। इससे पहले सब जड़ था। लेकिन तुलसी ने 'विनयपत्रिका' में लिखा है कि मेरी आत्मानुभूति में भौतिक जगत का विकास जरूर जड़ से हुआ होगा कि तोड़ो; अणु को तोड़ो, उसको तोड़ो। लेकिन तुलसी कहते हैं, ये विलास जड़ का नहीं हैं। ये चिद्विलास है। ये चैतन्य का विलास है। निरंतर चैतन्य विकसित होता रहा है। ये चिदविलास है। चैतसिक विकास है। तुलसी कहे, कोई गुरु की कृपा है तो ही समझ में आता है। तो दशमुख अथवा दशरथ मूल दोनों का पवित्र है।

कैसा कुल है रावण का? पावन। कैसा कुल है? निर्मल। कैसा कुल है? उसकी समान दूसरे का कुल न हो ऐसा अनूप। फिर भी ब्राह्मणों के शाप के कारण, परिस्थिति, देश-काल, प्रवृत्ति और प्रकृति के कारण सब राक्षस हो गए। तो मूल में रावण अच्छा है। इसलिए रावण अवतार है। और अवतार का दर्शन होना चाहिए। इसलिए रावण को अनदेखा न करे। मेरे हनुमानजी की आंख रावण का दर्शन कर रही है। लंका में ये लंकदर्शन अंतर्गत उसने पहली बार रावण को देखा तो सोये हुए देखा। अब सोए हुए आदमी को देखकर पूरा का पूरा निर्णय करना मुश्किल है। आदमी सोया है तो क्या निर्णय कर पाएंगे कि सज्जन है, दुर्जन है? यद्यपि अगल-बगल के परिसर से हम निर्णय कर सकते हैं कि कैसा होना चाहिए। लेकिन कोई जागृत है तो हमसे कोई बात करे, हम मुलाकात करे, दो-पांच बार मिले उसके बाद हम कुछ निर्णय कर सकते हैं कि कैसा है। लेकिन हनुमानजी की विवेकी दृष्टि ने रावण के दर्शन में पहला ये निर्णय किया कि ये आदमी तमोगुण प्रधान लगता है। क्योंकि वैदेही तो मंदिर में है नहीं और सो रहा है। जीवन में भक्ति न हो, शांति न हो और कोई सोया ही रहे तो हनुमानजी की आंख कहती है, ये आदमी तमोगुणी लगता है।

मेरे भाई-बहन, परमात्मा सब प्रकार की सुविधा दे तब जागना; तब जागृति-होश जरूरी है। मालिक ने इतना दिया तो भी मैंने हरि नहीं भजा! पहली बात पकड़ी हनुमानजी ने ये आदमी तमोगुणी है। आदमी जाग नहीं रहा है। उसको जागना चाहिए। परमात्मा जितना दे, आदमी को ओर जागना चाहिए। अथवा तो हनुमानजी को ऐसा

लगा कि आदमी कैसा है खबर नहीं! निर्णय करना मुश्किल है! क्योंकि जिसके पास ज्यादा सोना होता है वो तो शायद सो भी न सके। उसका सोना मुश्किल है। ये आदमी की चारों ओर सोना फिर भी सो गया है! डामाडौल है हनुमान! तो पहला रावण का दर्शन हनुमानजी को किस रूप में हुआ है? हनुमानजी वहीं से निकल गए। विभीषण के घर गए। जो कल हम चर्चा कर चुके हैं। शांति, शक्ति और भक्ति पाने की कौन युक्ति है, वो विभीषण ने हनुमानजी को सुना दी। ये सब हनुमानजी को बता दिया विभीषण ने।

करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ।
बन असोक सीता रह जहवाँ।।

यहां हनुमानजी अति लघुरूप नहीं है। विशालकाय भी नहीं है। जो हनुमानजी का मूल रूप है वो लेकर के युक्ति जो विभीषण ने जो मार्गदर्शक ने सुनाई उसके मुताबीत गये। भक्ति के पास जाओ तब मूल रूप में जाना। अपनेआप को बड़ा समझकर मत जाए। हम तो कुछ नहीं है, ऐसे रोते-रोते मत जाओ। अशोकवन में हनुमानजी गए जहां सीताजी है। अब सीतादर्शन शुरू हो रहा है। बीच में फिर रावण का दर्शन टपक पड़ेगा। फिर दरबार में रावण का दर्शन। तो पहले जानकी का दर्शन तुलसी कराते हैं। अशोकवन में हनुमानजी पहुंच गए है। सीताजी को देखा उसने।

निज पद नयन दिएँ मन राम पद कमल लीन।
परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन।।

शक्ति, भक्ति और शांति की ये बेठक है। वो ऐसे बेठती है। ऐसे बेठनेवाले में समझ लेना की ये भक्ति है। ये शक्ति है। ये शांति है। हनुमानजी ने देखा कि यही जानकीजी है। यही सीता है। पक्का तो नहीं कर पाए। लेकिन कैसे बैठे हैं सीताजी? जानकीजी ने अपनी आंखें अपने चरण पर रखी है। अब जैसे हम पलांठी लगाकर बैठते हैं तो दृष्टि से चरण दिखते नहीं है। या तो सीताजी एक ऐसे आसन पर बैठी है कि उसने बांया पैर दाएं घुटन पर रखा है।

तो जानकीजी ये जिस आसन में बैठे हैं। ऐसा आसन होगा कि पैर के तले दिखते होंगे। 'निज पद नयन दिए।' भक्ति की बेठक कैसी हो? भक्ति की मूर्ति तुलसी बनाते हैं; चित्र पेश करते हैं। जानकीजी हनुमानजी की आंखों में कैसी दिखती हैं? जानकी के नेत्र अपने पैर पर लगे हैं। पैर के तले पर भक्ति करनेवाले की आंख अपने आचरण पर होती है। भक्ति नहीं करनेवाले की आंखें दूसरे के आचरण पर होती है कि वो क्या करता है, वो क्या करता है? भक्ति करनी है तो दूसरे के आचरण पर ध्यान न दे, खुद के चरण पर ध्यान दे। पहला लक्षण। दूसरा, जानकी भक्तिरूपा है, इसलिए हमें बताती हैं कि दूसरे के चरण कितने भी सुंदर होंगे लेकिन तेरी गति तो तेरे चरणों से ही होती है। इसलिए तेरी दृष्टि तेरे चरण पर रख। दूसरे के चरण प्यारे हैं तो प्रक्षालन कर लो, स्पर्श कर लो, पूजा कर लो, यदि वो करने दे तो। लेकिन उस सुंदर चरण को स्पर्श करने के लिए भी हमारे कैसे भी चरण हो उसी से ही जाना पड़ता है। दूसरे की आंखें बहुत प्यारी हो लेकिन इन मनोहर आंखों को देखने के लिए हमारी कैसी भी आंख हो, हमें हमारी आंख से ही देखना पड़ेगा।

तो भक्ति ने पहला दृष्टांत, पहला एक मेसेज हमें ये दिया कि अपने चरण पर दृष्टि रखे। दूसरा ये दिया कि कैसे भी हो, मुझे मेरे चरणों से ही गति करनी है। तीसरा अर्थ ये हो सकता है, सीताजी ने अपने चरण पर दृष्टि इसलिए रखी कि कायम मेरे चरण राम के पीछे चलते थे उसी चरण ने मेरे आचरण ने ऐसी सीता के उच्चारण ने एक बार राम को कहा, 'यह मृग कर अतिसुंदर छाला।' ये सोने का हिरण है उसका चमड़ा ला दो। और मैं निज राम के चरणों पे चलनेवाली, आज मेरी गति सोने में चली गई और मेरा अपहरण हो गया! इसलिए अपनी दृष्टि मानो चरणों को कंट्रोल कर रही है कि अब ये चरण कोई ओर सोने की ओर गति न करे; कोई प्रलोभन की ओर जाए ना।

मेरे भाई-बहन, तुलसी कहे, जानकी ने नयन अपने चरण पर रखे थे। और अपना मन राम के चरण में रखा था। ये भक्ति का चित्र है। भक्ति की मूर्ति है। साधक को चाहिए अपनी दृष्टि अपने आचरण पर रखे और अपना मन प्रभु के चरणों में रखे। इस दृश्य को देखकर हनुमानजी बहुत दुःखी होते हैं कि मेरी माँ इतनी दीन, इतनी मुश्किल में? फिर क्या देखा?

कृस तनु सीस जटा एक बेनी।
जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी।।

हनुमानजी ने देखा, जानकीजी का शरीर कृश हो गया है। ये सिद्धांत के रूप में मैं पेश नहीं करूंगा लेकिन बहुधा ऐसा दिखता है कि जो भजन करता है उसका शरीर मोटा नहीं होता, कृश होता है। भजन एक तपस्या है। भक्ति में शरीर

मोटा नहीं होता। मैं ये सिद्धांत नहीं पेश कर रहा हूं। कभी-कभी मोटा भी होता है। लेकिन आप ध्यान रखे, बहुधा ऐसा देखा गया है। और भक्ति में एक बहुत बड़ा अध्याय आता है वियोग का। और वियोग आदमी को दुर्बल करता है, कृश बना देता है। और जानकी के मस्तक पर जो बाल थे वो एक लट में बंध गए थे। और 'सुन्दरकांड' का दो महिलाओं का मिलन देखिए। दो महिला में एक का नाम है एक जटा और दूसरी का नाम है त्रिजटा। दो महिलाओं का समन्वय है सत्संग। एक जटा जानकी और त्रिजटा जो जानकी की विपत्ति की संगिनी बनी है। त्रिजटा का अर्थ होता है जिसमें ज्ञान है, भक्ति है, कर्म है, ये त्रिजटा है। जानकी एक जटा है। एक जटा मीन्स अब कोई ज्ञान, अब कोई भक्ति, अब कोई कर्म कुछ नहीं। केवल एक राम की शरणागति है। केवल एक जटा एक ही वस्तु पक्की कर के बैठी है। जप करती है। किस मंत्र का जप करना है? भगवान के गुणों की अनंत शृंखला है। एक माला है प्रभु की। गुणों का जप करती है। अब जप होठ से होता है। यहां होठ से जप नहीं कर रही। हृदय से जप करती है। परमात्मा के गुण के शृंखला का जप होठों से नहीं, हृदय से करना चाहिए। किसी की अच्छी बातों को जहां तक संभव हो, दिल में रखकर दिल से सराहना। उपर से बोलना जरूरी हो तो बोलो। होठों से बोलनेवाले में शायद अहंकार भी आ सकता है। हो सकता है वो पचा भी न पाये। इसलिए 'रामचरित मानस' में हृदय से जप करने की बात लिखी है। तो भक्ति वो है जो दिल से जप करती है। इसका मतलब ये नहीं कि हम होठों से न करे। ये जरूरत है। धीरे-धीरे वहां पहुंचा जाता है। माला जरूरी नहीं, ऐसा मत समझना। ये भी जरूरी है।

तो भक्ति का एक चित्र यहां अंकित किया है। श्री हनुमानजी सोच रहे हैं कि क्या करूं? पता तो लग गया कि ये है। प्रगट होउं, इसी रूप में प्रगट होउं? लघु रूप लेउं या कोई दूसरा रूप लेउं? क्या करूं? रात्रि का समय है। श्री हनुमानजी ने निर्णय किया और जानकीजी जिस वृक्ष के नीचे बैठी है उस वृक्ष के घने पत्तों में हनुमानजी बैठ गए। सोचने के लिए बैठ गए। किसी के लिए पक्का निर्णय लेने से पहले बैठो। थोड़ा बैठो। थोड़ा सोचो। गहन घने पत्तों की डाली पर हनुमानजी बैठे हैं। उसका मतलब है मेरी समझ में गहन चिंतन कर रहे है। और ये पत्ते हरे हैं। उसके किसलय लाल है, नूतन है। उसकी शाखा पर हनुमानजी बैठे हैं। लाल रंग है प्रेम का। हरा रंग है करुणा का; दूसरों के हित का; दूसरों के शुभ का। हमारा चिंतन हरा होना चाहिए। हमारा चिंतन प्रेमपूर्ण होना चाहिए, द्वेषपूर्ण नहीं। ये हनुमानजी की भूमिका है। विचार करते हैं। वृक्ष के पल्लव में छिप गए बाबा और सोच रहे, क्या करूं? इतने में एक घटना घटी।

तेहि अवसर रावनु तहँ आवा।
संग नारि बहु किएँ बनावा।।

यहां हनुमानजी का गहरा, गहन चिंतन चल रहा है। सोच रहे थे इतने में रावण आया है। हनुमानजी ने देखा, वो ये आदमी को मैंने सोया हुआ देखा था वो ही तो है! लेकिन इतना जल्दी जागकर आया तो हनुमानजी का रावण-दर्शन बदल रहा है कि भले ही सोया हुआ है पर लगता है समय पर जागता भी है। और जागरण तब है जब जानकी के दर्शन की चाह हो जाए; जब सीता तक जाने की कामना हो जाए। किसी भी रूप में गया लेकिन गया। और ये आदमी अकेला नहीं आया। रावण ने सीता को अपने बश में समझी होती तो रावण अकेले आया होता। पर ये आदमी अवतार है। मजबूर कर रहा है चिंतन के लिए कि आया तो अकेले नहीं आया, अपनी कई रानियों को लेकर आया। कल कोई जानकी पर उंगली न उठाये। भोर का समय है और सीता परनारी है। उसको मिलने में कहीं दाग न लग जाए। और ठाठमाठ से आया है। हां, भक्ति के दर्शन करने हो तो आदमी में एक रोनक होनी चाहिए। और आदमी केवल अकेला शांति पाने के लिए नहीं आया। अकेला भक्ति के दर्शन के लिए नहीं आया। उनके साथ जो जो जुड़े थे सब को लेकर आया। और जानकी की मूर्ति का स्थापन अभी हमने किया कि ऐसे बैठी है। हनुमानजी उपर है।

कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी।
मंदोदरी आदि सब रानी।।

'मानस' की चौपाईयां सुनिए साहब! ये 'मानस' का मंत्र है। रावण बहुत बुद्धिमान है। उसके पास बड़ी आंखें है। हमारे पास तो दो दो है। उनके पास बीस है। आदमी देखने में और बुद्धि में भूल कर रहा है! तो सीता को संबोधित करते हुए कहता है, सुमुखी! हे सुंदर मुखवाली सीता। और पूर्व पक्ष कहता है, 'कृष तनु सीस।' सीता तो सूखी हुई है।

गाल बैठ गए हैं। कोई सुमुख रहा है उनमें? भक्ति सूखी है। दुर्बल है। कृशकाय है। और रावण जैसा बुद्धिमान भूल कर गया कि ऐसे सूखे हुए शरीरवाली जानकी जिसका रूप नहीं रहा है! या तो रावण भूल कर रहा है या तो हम रावण के दर्शन में भूल कर रहे हैं! सावधान! रावण हमको बता रहा है, तुम लोग मुझे ये मानते हो, मैं रूप का दीवाना हूं? जानकी में अभी कोई रूप जैसा दिखता नहीं। लेकिन फिर भी मैं सुमुखी कहता हूं, मैं दुनिया को सुंदरता की-सुमुख की व्याख्या देना चाहता हूं कि मेरी दृष्टि में उसी का ही मुख सुंदर है जिसके मुख से निरंतर हरिनाम निकलता है। उसका ही मुख सुंदर है, जिसके मुख से हरिनाम निकलता है। और सयानी, बहुत समझदार कहा है। बहुत समझदार। मैं बीस पैरों से दौड़ता रहा; मैं बीस हाथों से लूटता रहा; बीस आंखों से देखता रहा। लेकिन धन्य है तू अपने पैरो में दृष्टि जड़ाकर बैठी हो। हे सुमुखी, हे सयानी सीते, मेरे साथ मेरी मंदोदरी और अन्य रानियां है। ये मंदोदरी आदि रानियों को मैं लेकर इसीलिए आया हूं, जैसे कोई आदमी पूजा करने जाए तो फूल ले जाए, फल ले जाए, पूजा की सामग्री ले जाए। मैं तुझे क्या-क्या समर्पण करूं? मैं लंका की पाटमहिषी मंदोदरी और अन्य रानियों को तुम्हारे पास लेकर आया हूं और कहता हूं-

तव अनुचरीं करउँ पन मोरा।
एक बार बिलोकु मम ओरा।।

मंदोदरी आदि रानियों को किंकरी बना दूं। एक अर्थ में ये है कि प्रलोभन दे रहा है। यदि मेरी बात मान लो तो मंदोदरी आदि रानियों को तुम्हारी अनुचरी, सेविका, दासियां बना दूं। एक तो प्रलोभन है। पहली बात तो स्थूल रूप में लग रहा है कि ओफर कर रहा है। ये सब गुलाम बन जाए तू मेरे साथ रह वगेरे-वगेरे। लेकिन रावण कह रहा है कि मेरा पन है, मेरी प्रतिज्ञा है वो पूरी करूं। रावण की प्रतिज्ञा क्या है? मेरे से भजन नहीं होता। मैं वैर रखूंगा जीवनपर्यंत और राम के हाथ मरूंगा तो मैं तो मुक्त हो जाउंगा। लेकिन मेरा कर्तव्य है कि मेरे साथ जिनका प्रारब्ध जुड़ा है उसकी मुक्ति कब होगी? हे जगदंबा, तू आज से उसे अपनी किंकरी बना ले कि मेरे जाने के बाद तू उस पर कृपा कर दे। एक नारी की एक दृष्टि प्राप्त करने के लिए इतनी बड़ी कुरबानी! या तो रावण कामी है या तो रावण यदि समझदार है तो इतनी बड़ी कुरबानी! लेकिन नहीं, रावण कहता है ये सब तुम्हें दे दूं लेकिन हे जगदंबा, एक बार तेरी कृपा दृष्टि से मेरे सामने देख। एक बार तेरी दिव्यदृष्टि मेरे सामने कर। जानकी ने सुना। अब जवाब देती है-

स्याम सरोज दाम सम सुंदर।
प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर।।

लेकिन खानदान महिला किसी को जवाब दे और विदेश में और एक विधर्मी दूसरा आदमी है और उनके सामने बोलना है तब आदर्श नारी एक मर्यादा, एक विवेक रखती है। जानकी को रावण को जवाब देना है तो क्या किया? नीचे देखी एक तिनका तोड़ा। मर्यादा से बात कर रही है। जानकी क्या करे? किसकी आड ले? तो तुलसी कहते हैं, एक तिनका रख। और तिनके की आड की। दृष्टि तिनके से कर रही है, सुना रही है रावण को। एक संत ने कहा, सीता ने तृण क्यों तोड़ा? एक पत्ता लेकर भी तो कह सकती थी। एक पत्ता गिरा हो वो लेकर उसकी आड में इसकी मर्यादा में बात कर सकती थी अथवा तो अपना हाथ करके भी बात कर सकती थी। अथवा तो अपने वल्कल पहने होंगे उनमें से वल्कल का एक छेडा आड कर सकती थी। लेकिन तिनका इसीलिए कि बहुत-सा जवाब तिनके में छिपा हुआ है। पहला जवाब, दशानन, तुने मुझे साम्राज्ञी बनाने का ओफर किया है, मंदोदरी आदि रानीओं को तेरी गुलाम बना दूं और लंका की महिषी बना दूं लेकिन रावण, तेरे वैभव की कीमत मेरे पास तिनके के समान भी नहीं है! दूसरा दर्शन, सीताजी ने तिनका बताकर कहा कि मुझे खबर है रावण कि मैं तेरी बात नहीं मानूंगी तो तू मुझे मार देगा; तो मेरी मृत्यु होगी। तो सुन, राम के विरह में अब मुझे मेरा प्राण तिनके की तरह भी प्यारा नहीं है। ले ले प्राण! तिनके की तरह छोड़ दूं।

तृन धरि ओट कहति बैदेही।

पर तुलसीदासजी सीता बोली, ऐसा नहीं कर रहे; जानकी बोली, ऐसा भी नहीं कह रहे हैं; 'बैदेही।' कहा। रावण, तू मुझे ले जाकर क्या करेगा? मैं देह में नहीं हूं, वैदेही हूं। मैं विदेह की कन्या हूं। मैं छाया हूं। रावण, छाया को पकड़ा नहीं जाता! घास का तिनका आगे करके जानकीजी ने जवाब दिया, मेरी दृष्टि पाने के लिए तू अधिकारी नहीं है। हे रावण, जुगनू के प्रकाश से कभी कंवल नहीं खिलते। कंवल खिलने के लिए सूर्योदय जरूरी है। मेरा राम सूर्यवंशी है। तू अंधकारवादी है, निशिचर है। रात्रि में जुगनू चमकते

हैं, सूरज नहीं। मैं सूर्यवंशी की पुत्रवधू हूं। सूर्यवंशी राम की पत्नी हूं। जुगनू से नलिनी विकसित नहीं होती। तू मुझे प्रभावित नहीं कर सकता। रावण को तिनके के समान किया और इन्कार उनकी हर बात को वो कर दिया माँ ने तब रावण एकदम गुस्से में आ गया और क्रोधित रावण ने अपनी तलवार खींची! इस तलवार का नाम था चंद्रहास। अपमानित रावण क्रोध में है। हनुमानजी की आप कल्पना करो! मैं साथ-साथ हनुमानजी को देखता जाता हूं, ये आदमी की मनोदशा क्या होगी कि क्या करूं? लेकिन गहन चिंतन में डूबा। थोड़ा धीरे अपने को संभाला। किसने प्रेरणा दी संभलने की? अशोकवृक्ष ने। अपना आसन प्रेरणा देता है। बहुत गहन चिंतन कर रहा है। अब रावण ने मारने की ये बात हुई उसी समय हनुमानजी बहुत कश्मकश में है कि मैं क्या करूं? उतने में मंदोदरी बोली, मालिक, नारी पर ऐसे वार न किया जाए। भक्ति सच्ची होनी चाहिए, मर्यादा और विवेक पक्का होना चाहिए, तो दुश्मन के घर से भी सहाय मिले।

दिवसो जुदाईना जाय छे, ए जशे जरूर मिलन सुधी.
मारो हाथ झालीने लइ जशे, हवे शत्रुओ ज स्वजन सुधी.

- गनी दहींवाला

रावण मंदोदरी आदि रानी को लेकर लौट गया। अब जानकीजी चिंता में है, यदि एक महिने में ठाकुर न आया तो क्या होगा? फिर बहुत रोई! त्रिजटा नाम की एक राक्षसी जो रामचरण में रति रखती थी। वो जानकी को ढाढस देती है। सीताजी कहती है, माँ, कहीं से अग्नि ला दे, मैं जल जाउं। मुझे मर जाना है। त्रिजटा आश्वासन देती है और कहती है कि जानकी, ये लंका है। यहां रात्रि में अग्नि नहीं मिलती। त्रिजटा जाती है। अब जानकीजी बहुत विरह आकुल बनी है। कैसी भी परिस्थिति हो तो भी शरणागति नहीं बदलनी चाहिए। बस, शरणागति बचाईए। प्रलोभन आएगा, भय आएगा। धारी हुई मानसिकता सफल नहीं होगी और हमारा चित्त डामाडौल हो जाएगा, लेकिन शरणागति बरकरार रहनी चाहिए। आज जानकी का चित्त डामाडौल हुआ है! जो निरंतर रामगुण श्रेणी को स्मरनेवाली, जो रावण से भी बात करे तो रघुपति गुणश्रेणी वो अवधपति का स्मरण नहीं चुकती वो आज शरणागति दूसरे की करने लगी! अशोक की शरणागति, वृक्ष की शरणागति! राम भूल गई! तब हनुमानजी से नहीं रहा गया इसलिए हनुमानजी ने 'दिन्ही मुद्रिका डारि तब।' एक तो माँ को स्मृति करा दी, रामनाम नहीं छोड़ना चाहिए और दूसरा गिरेगी नहीं। रामनाम गिरता नहीं। भक्ति उसको उठा लेती है। और जैसे हाथ ऐसे किए मुद्रिका और जानकीजी को क्या हुआ? अग्नि मांग रही थी तो लगा अशोकवृक्ष ने मानो मुझे अग्नि दे दिया! लिया और जब मुद्रिका देखी! 'चकित चितव मुदरी पहचानी' कि ओह! ये तो मेरे बाप ने कन्यादान के समय दी थी ये मुद्रिका! यह कहां से आई? जानकीजी सोच रही है। मुद्रिका राम के पास थी और राम को कोई जीत नहीं सकता। राम अजय है। तो राम के पास से तो कोई ला नहीं सकता और माया से तो ऐसी मुद्रिका बन नहीं सकती। और मायावी मुद्रिका होती तो मेरे हाथ में आकर भस्म हो जाती! तो ये मुद्रिका आई कहां से? अब हनुमानजी को लगा कि अब अवसर है मेरे बोलने का। श्री हनुमानजी महाराज ने सोचा कि किसी की व्यथा दूर करनी हो तो एक मात्र उपाय है कथा।

रामचंद्र गुन बरनै लागा।
सुनतहिं सीता कर दुख भागा।।

लंका में राम पारायण बैठी भाई! वक्ता है हनुमानजी। श्रोता है मेरी माँ जानकी। हनुमानजी वहां बैठकर रामचंद्र के गुण सुनाने लगे। मैंने बहुत बार कहा है, ये सूत्र फिर याद दिलाउं। युवान भाई-बहन, समस्या जीवन में आएगी। जानकी के लिए भी ये समस्या अशोकवाटिका में आई, इससे पहले हनुमानरूपी समाधान ओलरेडी आ चुका था। हमारे और आपके जीवन में समस्या आती है इससे पहले समाधान प्रभु भेजता है। लेकिन उसके लिए थोड़ा धैर्य रखना पड़ता है। समाधान कूदकर आएगा और दु:ख भाग जाएगा। समस्या आये तब जानकी की तरह उपर देखना। समाधान उपर से आएगा। श्रीहनुमानजी महाराज रामचंद्रजी की कथा सुनाने लगे कि माँ के दु:ख भागे। दु:ख की क्या विसात कि कथा के सामने व्यथा खड़ी करे? भागे! नष्ट नहीं हुए, भागे; वापस आ सकते हैं!

जानकी के दु:ख भागने लगे। इतनी सुंदर कथा सुन रही है माँ जानकी। कथा से बढ़ियां कोई समाधान नहीं। जीवन का सबसे श्रेष्ठ समाधान मेरे अनुभव में कथा है। मैंने जो समाधान पाया है, कथा से पाया है। दु:ख भागे। जानकी से नहीं रहा गया! जिसके बहुत सुंदर वचन हमें सुनने हैं। ये तो मानव स्वभाव है! उनको देखने की इच्छा होती है कि कौन बोल रहा है? ये है कौन? तो जानकी ने कहा, इतनी सुंदर कथा कानों में अमृत घोल रही है, ऐसी कथा सुनानेवाला है कौन? प्रगट हो जा! और जैसे प्रगट होने की बात कही, हनुमानजी तुरंत जानकी के सामने कूद पड़े! हनुमानजी प्रगटे वोही रूप में बंदर को देखकर जानकी मुख फेर गई! ये फिर मायावी रावण की कुछ करतूत है! जो मेरे पास स्वर्णमृग लेके आया था, जो मेरे पास स्वयं एक संन्यासी बनकर आया था! वो आदमी फिर एक बंदर के रूप में किसीको भेज रहा है! जानकी ने मुख फेर लिया। बड़ा अपमान है। लेकिन हनुमानजी ने अपमान नहीं समझा। हनुमानजी ने कहा, माँ, तूने मुंह फेर लिया, माँ अच्छा किया। क्योंकि कथाकार की कथा ही सुनने जैसी है, उसका मुख देखने जैसा नहीं। मेरी व्यासपीठ ने सूत्र बनाया है, वक्तव्य को पकड़ो, वक्ता को नहीं। बाप! हनुमानजी अच्छा निर्णय करते हैं कि कथा ही सुननेयोग्य है। कथाकार का चेहरा देखने की जरूरत नहीं। अब जानकीजी को लगा कि मैंने इसे प्रगट होने को कहा तो प्रगट हुआ तो कथा रुक गई! कथा ही तो मेरा दु:ख भगा रही थी। तो अब कथा कैसे फिर से शुरू करवा दे? इसलिए जानकी ने योजना बनाई कि हनुमानजी को कहा कि तू कौन है? तो हनुमानजी परिचय देते हैं-

राम दूत मैं मातु जानकी।

मैं तो राम का दूत हूं। और जानकी के मन का वहम तोड़ दिया क्योंकि सीता को हुआ कि ये कोई मायावी राक्षस बंदर के रूप में आया हो इसलिए कह दिया, माँ तू जानकी, तू मेरी माँ है। सीता भरोसा न करे तो? इसलिए हनुमानजी सोगंद देते हैं, 'सत्य सपथ करुनानिधान की।' राम की कसम, मैं राम का दूत हूं। रघुवीर की कसम, मैं राम का दूत हूं। राम, रघुवीर, रघुनाथ कोई शब्द नहीं। 'करुणानिधान' शब्द का उपयोग किया। क्योंकि इस नाम में जादू था। अयोध्या में राम को कौशल्या 'राघव' कहती थी। महाराज दशरथजी राम को 'राम' कहते थे। कोई कुछ कहते थे, कोई कुछ। लेकिन जानकी तो नारीस्वरूपा है वो राम को 'राम' नहीं कहती, 'राघव' नहीं कहती। जबसे पुष्पवाटिका में देखा तब से उसने अपना एक संबोधन किया राम के लिए -

करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।

ये जानकी का बहुत अंगत संबोधन है राम के लिए। जैसे हरेक प्रेमाळ दंपती में हरेक प्रेमी नारी को अपने पति के लिए एक अंगत संबोधन होता है। हनुमानजी ने सोचा कि राम और जानकी के बीच में जो संबोधन है तो उसीकी सोगंद दूं तो माँ को यकीन हो जाये कि निश्चित राम का कोई निकट का आदमी आया होगा कि कभी राम ने कह दिया होगा कि जानकी जब मुझे पुकारती है तो करुणानिधान कहती है। तो उसको भरोसा हो जाएगा।

हनुमानजी ने कहा कि माँ, मैं करुणानिधान की कसम खाता हूं और कहता हूं कि मैं राम का दूत हूं। मैं रावण का दूत नहीं हूं, यकीन कर। माँ को भरोसा हो गया। लेकिन कथा माँ ने रोक दी उसका घाटा उसको पीड़ा दे रहा था इसलिए फिर कथा शुरू करवानी थी ताकि व्यथा हट जाए। तो जानकी ने युक्ति की, तू राम का दूत है, ये सब ठीक है लेकिन पहले ये तो बता कि वानर और नर का संग कैसे? तू वानर, मेरा राघव नरोत्तम, नर; इसमें संग कैसे हुआ? अब इस प्रश्न के जवाब में हनुमानजी को फ़रजियात कथा सुनानी पड़ती है कि राम ऐसे किष्किंधा आए। मैं मिलने गया फिर पूरी कथा कही। अब कथा फिर से शुरू करवाने की सुंदर विवेकपूर्ण युक्ति जानकी ने निकाली। श्रीहनुमानजी माँ से बातचीत करते हैं। राम का सब संदेश देते हैं। और फिर जानकीजी हनुमानजी को आशीर्वाद देती है।

दशमुख होना कि दशरथ होना हमारे हाथ में है। दो पात्र 'मानस' के रहस्य हैं। दोनों में दश का अंक सामान्य है। दशमुख रावण, दशरथ अवध नरेश। और इस संसार में किसीका मूल खराब नहीं है। परिस्थिति, देश, काल, अपनी प्रकृति और अपनी प्रवृत्ति ये पांच कोई ऐसी रस्सियां है कि जो आदमी को खींच कर कभी दशमुख बना देती है, कभी दशरथ बना देती है। मूल सबका अच्छा है। लेकिन परिस्थिति, देश, काल और प्रवृत्ति और प्रकृति के कारण आदमी दशमुख बन जाता है; आदमी दशरथ बन जाता है।

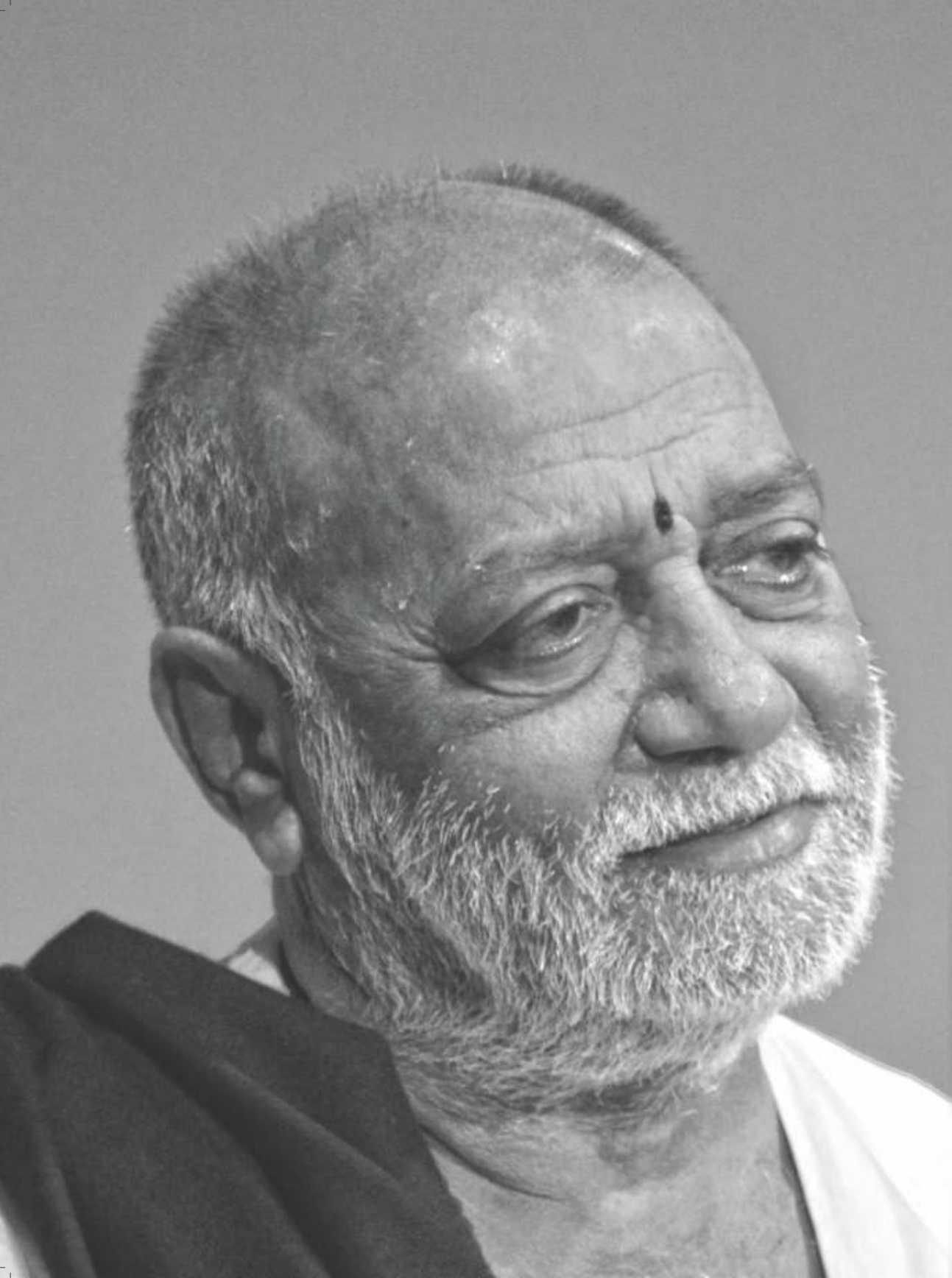

कथा-दर्शन

रामकथा सद्गुरु बनकर हमें दृष्टिकोण प्रदान करती है।
रामकथा एक ऐसी दृढ़ नौका है जिसमें जितने भी लोग बैठना चाहे बैठ सकते हैं।
रामकथा रहस्यमय कथा है, इसको खूब पढ़ो।
कथा से जीव जागता है। कथा तृप्ति देकर नई प्यास प्रगट करती है।
कथा का अपना स्वभाव है नितनूतन रहना।
'मानस' अश्रु का शास्त्र है। अश्रुओं का समंदर है 'मानस।'
व्यासपीठ को बहुत समदर्शी रहना पड़ता है।
कैसी भी परिस्थिति हो तो भी शरणागति नहीं बदलनी चाहिए।
जिसकी कृपा से ज़िंदगी में आनंद आया हो उसका कभी अपराध मत करना।
साधना को जीवन से बिलग मत करो। जीवन ही साधना है।
मंज़िल प्राप्त करनी हो उसको जहां भी अच्छा मार्गदर्शन मिले, ले लेना चाहिए।
परमात्मा सब प्रकार की सुविधा दे तब जागृति-होश जरूरी है।
हम देख न पाए तो जो देख सकता है उसकी दृष्टि पर भरोसा करना चाहिए।
मौन विचार करने के लिए नहीं है, मौन है निर्विचार होने के लिए।
तर्क गेरंटी चाहता है। विश्वास कोई गेरंटी नहीं चाहता।
दृष्टि हो तो दुर्जनों के बीच में भी सज्जनता मिल जाती है।
कर्म ही धर्म हैं, धर्म ही कर्म है। अकर्मण्य धर्म नहीं, अधर्म है।
संग्रह करनेवालों को शांति नहीं मिलती।
आंख कजरे से शोभायमान नहीं होती, अश्रु से शोभायमान होती है।
स्पर्धा से विकास होता है, लेकिन विश्राम नहीं मिलता।
मेरी समझ में पुण्य है प्रसन्नता और पाप है अप्रसन्नता।

मानस-सुन्दरकांड
॥ ६ ॥

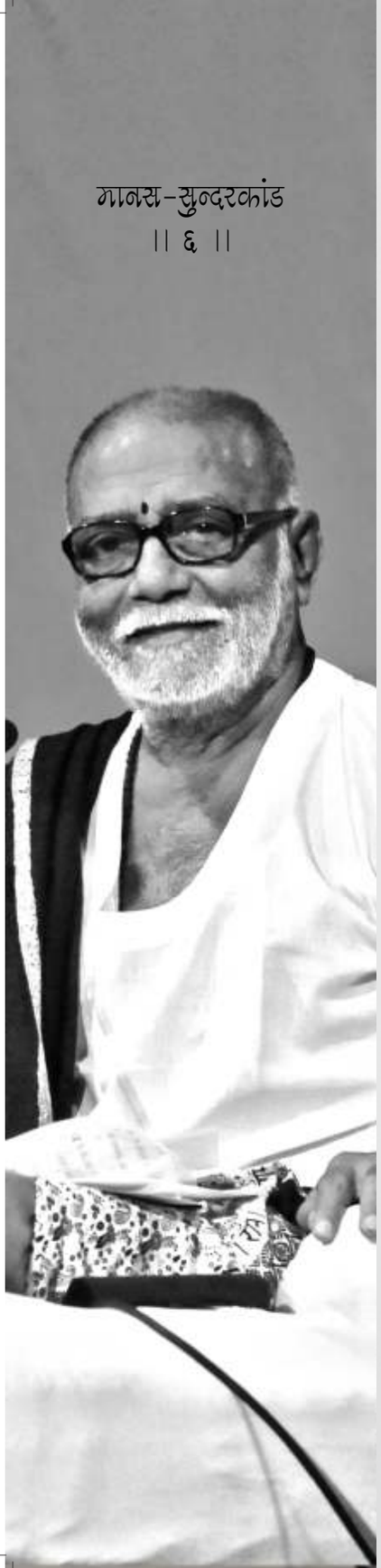

गुरु के द्वार जाने से हमें विषाद से मुक्ति मिलती है

'मानस-सुन्दरकांड', इसकी कुछ सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा संवादी सूर में हो रही है। इसमें हम प्रवेश करें उससे पूर्व कल शाम की एक मेरी विशेष प्रसन्नता आपके सामने पेश करूं कि कल कोई प्रोग्राम नहीं था! आगे बढ़ें। बहुत-से प्रश्न है। लेकिन मेरी इच्छा है; मैं आज सुबह से एक मंत्र को याद कर रहा था। और ये मंत्र मेरे दिमाग में बहुत साल पहले याद किया था। लेकिन अब छूट गया था। फिर मैंने खोज के इस मंत्र को पकड़ा फिर इधर-उधर न हो जाए इसीलिए मैंने लिख लिया। मेरी इच्छा है कि मैं इस मंत्र को आपके सामने पेश करूं। और ये भी मनोरथ है कि मैं इस मंत्र को छोटे-छोटे हिस्से में उच्चारूं और ठीक से सुनकर आप भी मेरे पीछे उसका उच्चारण करे। तो आइए, हम इस मंत्र का उच्चारण करें -

इदं हि पुंसस्तपसः श्रुतस्य वा स्विष्टस्य सूक्तस्य च बुद्धिदत्तयोः।
अविच्युतोऽर्थः कविभिर्निरूपितो यदुत्तमश्लोकगुणानुवर्णनम्।।
(श्रीमद्भागवत' १/५/२२)

ये मंत्रात्मक वचन है भगवान वेद व्यास का। आप कहते हैं, 'इदं हि पुंसस्तपसः।' जगत में जो जितना भी तप करता हो इस तप का, इस समस्त तप का फल; 'श्रुतस्य वा', कितने ही वेद का उच्चारण किया हो, वेद सुने हो उसी का फल। 'स्विष्टस्य', आपने कितने ही होम-हवन किए हो उसका फल; 'सूक्तस्य', आपने कितने भी सूत्रों और सूक्तों का पाठ किया हो उसका फल; 'बुद्धिदत्तयोः।' आपकी ईश्वरदत्त बुद्धि का फल; 'कविभिर्निरूपितो', परमात्मा ने आपकी बुद्धि में कोई सर्जनात्मक कोंपले फूटी हो तो इसी का फल; 'यदुत्तमश्लोकगुणानुवर्णनम्।' इन सभी का फल है कोई उत्तम श्लोक के गुणों का वर्णन करना। तप करो, जप करो, यात्रा करो, यज्ञ करो, वेद पढ़ो, पढ़ाओ, सुनो, सुनाओ। सुंदर भाषण करो, सूत्रात्मक बोलो। परमात्मा की दी हुई बुद्धि से नया-नया सृजन करो। जो भी आप शुभ करते हो इन सभी का फल है कोई उत्तम श्लोक के गुणों का वर्णन करना और उन्हीं का श्रवण करना। आजकल हम ये कर रहे हैं। उत्तम श्लोक है भगवान राम। उत्तम श्लोक है भगवान कृष्ण। उत्तम श्लोक है भगवान शिव। उत्तम श्लोक है परमतत्त्व।

कल रात्रि को मुझे दो-तीन चिठ्ठी मिली थी वो यज्ञकुंड के पास रखी थी तो रात को पढ़ा। उसमें पूछा गया था, ये कथा का हेतु क्या है? ये कथा क्यों, जिसमें इतना बड़ा खर्चा होता है! खर्चा कोई करता है, तुम चिंता क्यों करते हो? तो कथा का हेतु क्या है? 'विनयपत्रिका' में लिखा है -

जब द्रवै दीनदयालु राघव, साधु-संगति पाइये।

गोस्वामीजी कहते हैं, जब परमात्मा द्रवीभूत होते हैं तब किसी साधु का संग होता है।

जेहि दरस-परस-समागमादिक पापरासि नसाइये।।

जिसके दर्शन से, जिसके स्पर्श से, जिसको श्रवण करने से हमारे पाप की राशि नष्ट हो जाती है। फिर पाप-पुण्य की बात आती है। पाप-पुण्य की बहुत चर्चा है शास्त्रों में और ज्यादातर पुराणों में। लेकिन पाप-पुण्य की चर्चा करनी है तो मैं फिर एक बार दोहराउं कि मेरी समझ में पुण्य है प्रसन्नता और पाप है अप्रसन्नता। इससे अतिरिक्त मेरी जुबां में, मेरे शब्दकोश में, मेरी समझ में ओर कोई व्याख्या नहीं है। साधु के संग में अप्रसन्नता रूपी पाप की राशि नष्ट हो जाती है और प्रसन्नता का पुण्य प्रगट होता है। और ऐसा संग; साधु मानी ये 'रामचरित मानस' साधु है। सद्ग्रंथ साधु है। उसका संग, उसका दर्शन।

एक बच्चे ने मुझे पूछा है, 'Bapu, I am your very little flower and very new flower. I have a question Bapu. every morning you came to katha and seat down in vyaspith. you open up your pothi and take only tope few pages, look at them and put it back. My question is what do you look in pothi? and why?' वाह! little flower! बेटे, हम पोथी के सत्संग में बैठे हैं, मोरारिबापू के सत्संग में नहीं। पोथी के-सद्ग्रंथ के सत्संग में। और इसलिए शुरू करता हूं तो मैं पोथी को खोलकर के जो पन्ना निकले उसका दर्शन कर लेता हूं। मेरी एक मान्यता है कि आपको कोई शास्त्र पूरा कंठस्थ हो जाए तो भी जब पाठ करो तब ग्रंथ खोलना। वरना ग्रंथ का अपराध हो जाएगा। जिसके माध्यम से आपको मिला है उस ग्रंथ को एक ओर मत कर देना कि हमको सब याद है! याद हो, किसी की इतनी तीव्र स्मृति है तो ये परमात्मा की एक बहुत बड़ी कृपा है। लेकिन किसी भी कृपा को पचाना कठिन है। विश्व में सबसे बड़ी कठिन चीज मेरी समझ में है तो कृपा को पचाना है। कृपा ओलरेडी हम सब पर हुई है। 'कबहुँक करि करुना नरदेही।' लेकिन ये कृपा पचती नहीं है। तो मेरे छोटे फ्लावर को कहूं कि मैं पोथी का दर्शन कर रहा हूं। बहुधा पहले दो-तीन पन्ने ही खोलता हूं। इसमें मंगलाचरण के श्लोक एक-दो जो पहली दृष्टि में आ जाए, पढ़ लेता हूं। गुरुवंदना की एक-दो चौपाई पढ़ लेता हूं। अथवा तो कभी कोई भी पन्ना खुल गया तो शास्त्र का दर्शन कर लेता हूं। ये जरूरी है। क्योंकि हम बैठे हैं पोथीजी के सत्संग में। हमारे नीतिन वडगामासाहब ने एक कविता लिखी गुजराती में -

पोथीने परतापे क्यां क्यां पूगिया!
भगवा रे अंकाशे जइने ऊडिया!

ये पोथी के प्रताप से हम कहां-कहां पहुंचे, उसको भूले नहीं। तो ये पोथी का दर्शन 'रामचरित मानस' के सत्संग में है। और उसका दर्शन करना, उसका स्पर्श करना, उसमें डूबना, उसका पान करना।

दरस परस मज्जन अरु पाना।
हरइ पाप कह बेद पुराना।।

हमारे अप्रसन्नतारूपी पाप को दूर करता है; अप्रसन्नता को हर लेता है। तो जीवन के सभी सत्कर्मों का फल भगवान वेदव्यास कहते हैं, उत्तम श्लोक के गुणों का वर्णन करना। और उत्तम श्लोक परमात्मा के गुणों का वर्णन करना मीन्स, केवल पोथीका ही पाठ करना, केवल 'मानस' ही गाना, 'गीता' ही गाना ऐसा नहीं। आप दो-तीन लोग बैठे हैं और कोई अच्छी कविता सुनाए तो अच्छी कविता सुनना भी उत्तम श्लोक का गुणगान वर्णन है। कोई अच्छा लेख आपके सामने पढ़े उस पर चर्चा करो ये उत्तम श्लोक गुणवर्णन है। दो-तीन लोग इकठ्ठे हो जाए किसी की चर्चा न करे, किसी की निंदा न करे, किसी की इर्ष्या न करे, किसी का द्वेष न करे, किसी को छोटा करने की कोशिश न करे और कोई शेर, कोई शायरी, कोई कविता, कोई लेख, कोई निर्दोष हास्य, कोई विद्या, कोई संगीत, कोई सूर, कोई गायन, कोई शास्त्रीय राग का कोई टुकडा, कोई बंदीश, कोई चित्रकाम, कोई शिल्प, उसीकी जितनी शुभ चर्चा है ये सब उत्तम श्लोक है। उसकी चर्चा ये कथा है। और वो कथा में खर्चा भी नहीं है।

मुझे तो कल एक भाई ने ये भी चिठ्ठी दी कि बापू, हम कथा नहीं करवा सकते। बहुत पीड़ा होती है। शायद हम भी संपन्न होते तो हम कथा करवाते। ऐसी ग्लानि मत करो। तुम कथा न कर सको ये कोई चिंता नहीं। लेकिन तुम निंदा न करो ये सबसे बड़ी कथा है। ये कथा का पुण्य है तुम किसी की निंदा न करो। और कई लोग मेरी कथा करानेवाले निंदा और ईर्ष्या छोड़ नहीं पाए हैं! उसकी आंखों से द्वेष गया नहीं है! व्यासपीठ की दृष्टि से उतर जाना बहुत घाटे का सौदा है। सोचो। कथा करो, न करो उसमें क्या बड़ी बात है? ये किरणभाई तो पहली बार इस कथा में इस रूप में जुड़े है। जिसके पास प्रभु ने संपदा दी है।

और किरणभाई, मुझे चिठ्ठियां मिलती है आपके आयोजन की सराहना करने की। थेन्क यू कहने की। मैं ज्यादा बोल नहीं रहा हूं, क्योंकि आपको भी पचना चाहिए! अभी पहला-पहला है।

लंबी दूरी तय करने में वक्त तो लगता है।
नये परिंदों को उड़ने में वक्त तो लगता है।

ये आदमी प्रसन्न है; गूंगा है। बाकी कितना बोलता है, उनके घर के परिवारवाले जाने! अल्लाह जाने! कई लोग बड़े-बड़े आयोजन करते हैं। हजारों डोलर खर्चते हैं। ईर्षा नहीं छोड़ पाया! द्वेष नहीं छोड़ पाया! आंखों से जलन नहीं गई! किसी को गिला नहीं करना चाहिए, ग्लानि नहीं करनी चाहिए कि हम नहीं कर पाते। कोई करते हैं उसको धन्यवाद दो, लेकिन मेरा तो तीन ही सूत्र है। निंदा न करना रामकथा का आयोजन है। साहब, किसी की इर्ष्या न करना, तुमने रामकथा का बहुत खर्चीला आयोजन कर लिया। और किसी के प्रति द्वेष न करना तुमने चंद्रमा में कथा आयोजित कर दी। पृथ्वी पर तो सब करते हैं। तुमने चांद में कर दी। बाप! आपसे मेरी मोहब्बत है इसलिए कहता हूं। आपसे मेरी ममता है इसलिए मैं कहता हूं कि तीन ही काम करो। निंदा छोड़ो, कथा हो गई। इर्ष्या छोड़ो, कथा हो गई। द्वेष छोड़ो, कथा हो गई।

तो बाप! ये मंत्र बड़ा प्यारा है। कथा के बाद दो मिलो, तीन मिलो तो भगवत्चर्चा करो; उत्तम श्लोक की चर्चा करो। दूसरों की चर्चा करने से फायदा क्या है? मेरी समझ में नहीं आता! इमानदारी से तुम्हारे धंधे की चर्चा करो; इमानदारी से; सत्संग है। ये भी जरूरी है। इमानदारी से तुम्हारे जोब की चर्चा करो, सत्संग है। सत्संग मानी व्यासपीठ लगा दो, पोथी लगा दो, बापू बैठ जाए, इतने में सत्संग को सीमित क्यों करते हो? 'मानस' में लिखा है। रामराज्य के बाद क्या करते थे लोग? जहां मिलते हैं, रघुपति की चर्चा करते हैं। रघुपति की चर्चा माने सत्य की चर्चा, प्रेम की चर्चा, करुणा की चर्चा। देखो, मैं चित्रकूट में बैठता हूं। कोई कलाकार आए; कोई विद्याधर आए; कोई संगीतवाले आए; कोई लोकगायक आए। तो हम बैठकर यही चर्चा करते रहते हैं। उसी की चर्चा होती है। कोई गाए, मैं सुनूं। कोई बात पूछे, मैं बोलूं। ये सब कथा है।

तो यज्ञों का फल, वेदों का फल, तपस्या का फल, बड़े-बड़े भाषणों का फल है उत्तम श्लोक का गुणवर्णन। और गुणवर्णन होता है जब किसी साधु की मुलाकात हो। साधु है सद्ग्रंथ। ये 'रामचरित मानस' साधु है। उसका संग हमें उत्तम श्लोक का गुणगान करने के लिए आमंत्रित करता है।

'विनयपत्रिका' को तुलसीदासजी का आख़िरी सर्जन माना गया है। दो मत है। पर मेरी आत्मप्रतीति इस मत की ओर मुझे लिए चलती है कि तुलसीदासजी ने सबसे पहले 'हनुमानचालीसा' लिखा। और आख़िर में उसने 'विनयपत्रिका' लिखी। 'विनयपत्रिका' में गोस्वामीजी ने बहुत समय से चल रहे साधकों के प्रश्न का उत्तर दिया। गोस्वामीजी के पास लोग प्रश्न किया करते थे कि राम का प्रेम प्राप्त करने के लिए क्या किया जाय? प्रत्यक्ष जवाब नहीं देते थे। शान में कहते थे। लेकिन गोस्वामीजी को लगा कि मैं चला जाउंगा तब ये प्रश्न प्रश्न न रह जाए इसलिए उसने एक पद में उसका जवाब देने की कोशिश की। मुझे दो पंक्तियां बहुत प्रिय है। आज पहली बार आपके सामने उद्घाटन करता हूं। कुछ बातें यहां पहली बार है। हम सब चाहते हैं कि परम का प्रेम कैसे मिले। हम तो प्रभु से प्रेम करे लेकिन प्रभु हमें प्रेम करे। कभी ईश्वर से मांगना मत। लेकिन मांगना है तो पांच वस्तु जब ईश्वर दे तब समझना जीवन कृतकृत्य हो गया। एक, परमात्मा जब तुम्हें प्रेम करने लगे। दूसरा, परमात्मा जब तुम्हें बहुत अधिक करुणा करे। तीसरा, परमात्मा हमारे अनुकूल हो जाए। चौथा, परमात्मा हम पर प्रसन्न हो जाए। पांचवां, हमारा परमहित जिसमें हो इतना ही परमात्मा करे। ये पांच सूत्र 'मानस' के है। किसी गुरु को ले लो साहब! किसी बुद्धपुरुष को ले लो। बुद्धपुरुष की करुणा मिले; बुद्धपुरुष का प्यार मिले; बुद्धपुरुष हम पर अनुकूल हो जाए; हमको देखकर, हमारा जीवन देखकर, हमारी आंखें देखकर, हमारी सोच देखकर, हमारी हलन-चलन देखकर, हमारी मुद्राएं देखकर, हमारी जीवनी देखकर, हमारा खान-पान देखकर, हमारा बैठना-उठना देखकर, हमारी सब वस्तु को देखकर कोई बुद्धपुरुष हम पर प्रसन्न हो जाए।

आज एक प्रश्न ये भी है, 'बापू, गुरुद्वार जाने से कौन फायदे होते हैं?' शीख भाईओं ने तो अपने मंदिर का नाम ही गुरुद्वारा रख लिया है। और जो अपने गुरु हो उसके द्वार जाने से मुझे जो चार-पांच फायदे हुए हैं वो मैं आपको गिना दूं। गुरुद्वार जाने से पांच फायदे हैं। एक, गुरु के पास

जाने से, गुरु के द्वार जाने से हमें विषाद से मुक्ति मिलती है। विषाद माने दु:ख, विषाद माने अप्रसन्नता। विषाद माने डिप्रेशपन। हमें कहीं चैन नहीं पड़ता; हमें कहीं अच्छा नहीं लगता; हम डामाडौल है; असमंजस में है। ऐसे जब दशरथजी कश्मकश में है तो 'गुरुगृह गए तुरत महिपाला।' थोड़ा अनुभव करना पड़ेगा। और किसी गुरु के पास जाओ तो बोल-बोल मत करना। हां, बैठे रहना। पास बैठना मिले उससे बड़ा कोई फायदा नहीं। मौन सत्संग इसका मतलब नहीं बोलना, ऐसा भी नहीं। लेकिन जहां तक संभव हो गुरु को बोलने देना। उसको मौज आये और कुछ बोले। लेकिन बड़ा मुश्किल है! लोग बोलने लगते हैं! मेरे पास आनेवाले कभी कुछ बोलते नहीं थे और अभी इतने मुखर हो गए हैं कि अल्लाह बचाए! इतने बोलते हैं! इतने बोलते हैं! और बोले वो मुझे अच्छा लगता है। क्योंकि मैं तो श्रोता हूं। लेकिन विषय न हो ऐसा बोलते हैं! गुरु यदि गुरु है तो उसके पास जाने से विषाद से मुक्ति होनी चाहिए। तथाकथित गुरुओं से ये नहीं होता। बुद्धपुरुष के पास जाने से विषाद मिटता है।

आज एक फ्लावर ने ये भी पूछा है, 'मेरे दादाजी कहते हैं कि भगवान की सेवा करनी चाहिए। पर भगवान तो दिखते नहीं तो मैं किसकी सेवा करूं?' तारा दादानी! आपणा दादा भगवान छे। मने मारा दादा ज भगवान। मैं बिलकुल 'मानस' पर हाथ रखकर कह दूं। मुझे ईश्वर के दर्शन की कोई इच्छा ही नहीं। मैंने ईश्वर देख लिया। मैंने देखा, दो हाथवाला, दो पैरवाला। ऐसा ईश्वर कहां मिलता है? न अपनेआप को कभी परदे में रखा, न कभी आरती उतरवाई! पूरा जीवन जिसने अयाचक वृत्ति के रूप में और अकिंचन बिताया। मैंने कल भी कहा कि हमारे इस अभाव की बात करूं तो आप मेरे निकट इतने हो चुके हैं, आप सह नहीं सकते इसलिए मैं इसमें जाता नहीं। आपको ज्यादा पीड़ा होगी। मैं वो दृश्य याद करता हूं कि दादा के पास तिलक करने के लिए सीसा नहीं था; सीसा नहीं था! जैसे बाज़ार में किसीका सीसा तूट जाए और किसी भी कोनेवाला एक टुकड़ा मिल जाता तो वो टूटे हुए सीसे का टुकड़ा दादा रखते थे अपनी पूजा में और उस सीसे की टूटी हुई पट्टी में वो अपना ऊर्ध्व तिलक करते थे। ऐसे देखा है अकिंचन ईश्वर को मैंने। मुझे कोई कामना नहीं कि मुझे राम के दर्शन हो। ओलरेडी हो चुके हैं। वो मेरा गुरु, वो मेरा राम है। और जिसको अपने बुद्धपुरुष में हरि न दिखे उसको हरि में क्या खाक हरि दिखेगा! हमारे यहां कहा गया है, 'नास्ति तत्त्वम् गुरो: परम्।' गुरु से उपर कोई तत्त्व नहीं। लेकिन मैं बार-बार बीच में आपको कहूं, ये गुरु होना चाहिए। कोई बुद्ध, कोई महावीर, कोई कबीर, कोई मीरां, कोई एकनाथ, कोई नामदेव, कोई महेता नरसिंह, कोई सुरदास, कोई तुलसी, कोई शुक; ऐसे बुद्धपुरुष के पास जाने से विषाद से मुक्ति मिलती है। गुरुद्वार जाने से विद्या की प्राप्ति होती है। गुरु देता है विद्या, ब्रह्मविद्या, वेदविद्या, योगविद्या। अथवा तो जो हमें बंधन में न डाले और मुक्त रखे ऐसी कोई वस्तु गुरु देता है। तीसरी वस्तु है, गुरु के पास जाने से, गुरुद्वार जाने से विवेकवर्धन होता है, विवेक बढ़ता है। चौथा, गुरु के पास रहने से हमारा विश्वास दृढ़ होता है; भरोसा परिपक्व होता है। और पांचवां और अंतिम सूत्र, गुरुद्वार जाने से संशय का नाश होता है।

एक भाई ने पूछा है, सद्गुरु और शिष्य के बीच में संबंध कैसा होना चाहिए? उसको माता-पिता समझे और हम उसके बालक है, ऐसा संबंध रखे? कौन-सा संबंध रखें?' मैं प्रार्थना करूं, तुम अपनी ओर से सद्गुरु के संग किसी भी प्रकार के संबंध प्रस्ताव मत रखो। इसको निर्णय करना होगा। तुम कहो कि मैं तेरा शिष्य हूं। और तुम्हारे शिष्यत्व का क्या ठिकाना! तुम कहो कि मैं तुम्हारा पुत्र हूं। और तुम्हारा पुत्रत्व का क्या ठिकाना! हम कहे कि हम तुम्हारे बंधु है। निर्णय उसको करने दो। तुलसी का 'विनय' का एक पद है-

तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानियै जो भावे।
ज्यौं त्यौं तुलसी कृपालु! चरन-सरन पावै।।

हे ईश्वर, तेरे साथ मेरे कई प्रकार के नाते हैं। तू निर्णय कर। तुझे मेरे साथ कौन-सा नाता पसंद है। गुरु और शिष्य का संबंध से मुक्त संबंध है। ना माँ-बाप; ना भाई-बहन; ना गुरु-चेला। और आजकल के जगत में गुरु बन जाना भी बहुत आसान है! मुझे तो ये बहुत बड़ा फायदा हुआ है कि मैं किसी का गुरु नहीं। कोई मेरा चेला नहीं है। मेरे श्रोता है। हजारो श्रोता; इसके अलावा कोई नहीं मेरा। फिर मैं मज़बूरसाहब की दो पंक्तियां कहूं -

ना कोई गुरु, ना कोई चेला।
मेले में अकेला, अकेले में मेला।

कई लोग पूछते हैं, बापू, आपके शिष्य कितने हैं? मेरा कोई शिष्य है ही नहीं। मैं एकमात्र शिष्य हूं दादा का। और ये निभ जाए तो बहुत है। कोई शिष्य नहीं; मेरे श्रोता है आप अवश्य। आप फोटो खिंचवा लो, बोल दे कि हम ये है, ये आपका करम! ये आपका निर्णय! मैं क्या करूं उसमें? मुझे सुनो, अच्छा लगे, आपकी आत्मा तक बात जाए, उस प्रकार चलो और आपको प्रसन्नता मिले। आप स्वतंत्र; मैं उधर आप इधर, बात खतम! जो समर्पित है, शरणागत है वो अपनेआप में कुछ नहीं बचाता। गुरु गुरु होना चाहिए, ये ध्यान रखना।

बाप! तुलसीदास की 'विनयपत्रिका' एक अद्‌भुत प्रेमपत्र है परमात्मा के नाम पर। और उसमें परमात्मा हमें प्यार कैसे करे उसका जवाब एक सौ छबीस साल की उम्र में तुलसी ने दिया। और ये किताब मिली तुलसी की बेड से। और बहुत पुराना प्रश्न वो जो पूछा गया, उसका जवाब वहां दिया गया। वो पंक्ति मैंने लिख ली है, 'विनयपत्रिका' के पद की। प्रभु का प्रेम प्राप्त करने की एक विधा है, एक युक्ति है। एक किमिया तुलसी ने बताया है-

समुझि समुझि गुनग्राम रामके, उर अनुराग बढ़ाउ।

कैसे प्रेम प्रभु करे? उत्तम श्लोक के गुणगान सुनो। उत्तम श्लोक के गुणगान करो। वो ही तपस्या का फल है। वो ही ज्ञानमात्र का फल है। तुम्हारे हृदय का अनुराग बढ़ाओ।

तुलसिदास अनयास रामपद पाइहै प्रेम-पसाउ।।

अनायास तुम्हें परमात्मा का प्रसाद मिले। 'पसाउ' का अर्थ होता है प्रसाद। तुम्हें परमात्मा का प्रसाद कुछ किए बिना प्राप्त हो जाएगा। इसलिए मैंने आज इस श्लोक से कथा का आरंभ किया। 'रामचरित मानस' जैसा साधु हमारे बीच में है। और हम उनका सत्संग कर रहे हैं।

तो हमें और आपको रामकथा का सत्संग मिल रहा है। यही है किसी जन्म के हमारे यज्ञों का फल। किसी जन्म के हमारे वेदज्ञान का फल। किसी जन्म के हमारे सूत्रपातों का फल। किसी जन्म के हमारे तप और यात्रा का फल।

तो कल मुझे एक चिठ्ठी मिली थी, ये कथा क्यों? कितना खर्चा होता है! सत्संग का कोई मोल नहीं। और मैं ये खर्चा भी कभी-कभी गिनता हूं। देश में दो-दो, तीन-तीन लाख लोग भोजन करते हैं! हां, लाख तो सामान्य होते हैं देश में भोजनवाले। तो ये नव दिन की कथा उसमें रोज भोजन। सुबह नास्ता। रात का भी मेहमानों का भोजन। कथा एक नौका है। मैं नहीं कहता हूं। बाबा तुलसी कहते हैं-

भव सागर चह पार जो पावा।
राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा।।

रामकथा दृढ़ नौका है। जिसको भवसागर पार करना है वो इस नौका में बैठे। अब नौका छोटी हो तो पांच-दस ही बैठ पाए। बड़ी हो तो शायद सौ बैठ पाए। इससे बड़ी हो तो दो सौ बैठ पाए, पांच सौ बैठ पाए। कोई बड़ी जलपोत हो तो पांच हजार लोग बैठ पाए। तो जिसकी जितनी मर्यादा उतने लोग बैठ पाएंगे। लेकिन रामकथा एक ऐसी दृढ़ नौका है जिसमें जितने भी लोग बैठना चाहे बैठ सकते हैं। पचास हजार बैठ सकते हैं; लाख बैठ सकते हैं; तीन लाख बैठ सकते हैं; देश की कथाओं में। और नौका चौड़ी होती जाती है। तुम जितने आओ समा जाओगे। ये रामकथा नौका है।

लोग कहते हैं कि कथा की क्या जरूरत है? कथा में इतना खर्चा होता है। कथा में इतना खर्चा हो तो उससे अच्छा है कि ये कर देते, वो कर देते। सत्संग से मूल्यवान कुछ नहीं है साहब! उत्तम श्लोक के गुणगान की बात यहां चल रही है। राजेन्द्र शुक्ल की गज़ल किसी ने मुझे दी है।

पुकारो गमे ते स्वरे हुं मळीश ज।
समयना कोई पण थरे हुं मळीश ज।

एक दूसरी कविता भी है मेरे पास।

अढी अक्षरनुं चोमासुं अने बे अक्षरना अमे।
खोट पडी अडधा अक्षरनी पूरी करजो तमे।
- भगवतीकुमार शर्मा

तो 'सुन्दरकांड' में अब थोड़ा प्रवेश करें, जिसमें हनुमानजी का सीतादर्शन चल रहा है। हनुमानजी महाराज ने रामकथा गाना शुरू किया। जानकीजी के दु:ख भागे। कथा के बीच में संगति टूटी तो जानकीजी ने ऐसा प्रश्न करके कथा को संगति कर दी। हनुमानजी ने कहा, ये मुद्रिका मैं लाया हूं। प्रभु ने निशानी के लिए मुझे दी थी ताकि आपको भरोसा हो। जानकी को यकीन हुआ। हनुमानजी को भूख लगी। भूख लगनी चाहिए। विशेष सुनने की भूख, भक्ति के फल पाने की भूख कि अच्छी छांव में रहने की भूख जगे। जानकीजी ने कहा, ठीक है। रघुवीर को हृदय में धारण करके मधुर-मधुर फल खा। क्योंकि यहां तो विषाक्त फल भी है। देखो भाई, लंका में फल बहुत है लेकिन फलाहारी एक भी नहीं! सब मांसाहारी! आज हनुमानजी पहला फलाहारी निकला, जो फल खाए। श्री हनुमानजी महाराज बाग में प्रवेश करते हैं। और यहां फल खाते हैं और वृक्ष तोड़ते हैं। हनुमानजी वृक्ष तोड़ रहे हैं उसके रखवारे जो थे बाग के वो हनुमानजी को रोकने गए। हनुमानजी ने उसको निकट बुलाया और मुष्टि प्रहार किया। कुछ भागे! रावण की सभा में जा कर कहने लगे, हे मालिक, एक भयंकर वानर आया है। पूरी अशोकवाटिका को उखाड़ डाला है! कई मर गए हैं! हम बा मुश्किल भागकर आए हैं! ऐसा आतंक हमने कभी देखा नहीं! कौन है? पता नहीं! रावण ने देखा। अपनी बगल में बैठा था अक्षयकुमार। कहा, अक्षय बेटा, जा तू। और अक्षयकुमार बाग में आया। श्री हनुमानजी महाराज ने अक्षय को देखते ही एक वृक्ष उठाया और अक्षय के उपर फेंका! अक्षय का क्षय कर दिया! अक्षय मर गया! राक्षसों ने देखा कि रावण का लाल मर गया, अब क्या करे? राक्षस आये। खबर दी। गजब बंदर है! रावण ने कहा कि उसको तो मुझे देखना पड़ेगा कि ये है कौन? इन्द्रजित खड़ा हुआ। और सूचना दी, उसको मारना मत। बांधकर मेरी सभा में ले आना। अतुलित योद्धा इन्द्रजित जा रहा है बाग में और फिर दोनों का बहुत युद्ध होता है। इन्द्रजित ने ब्रह्मास्त्र उठाया। हनुमानजी ने सोचा, मैं ब्रह्मास्त्र के भी टुकड़े कर सकता हूं पर जो ब्रह्मास्त्र को न मानूं तो उसकी महिमा घट जाएगी। और मुझे भी तो रावण को देखना है। और ब्रह्मास्त्र से हनुमानजी मूर्छित हुए। नागपाश से बंध गए। और इन्द्रजित बांधे हुए हनुमानजी को लेकर रावण की नगरी में प्रवेश करता है।

आइए, हम इस प्रसंग को यहां रखते हुए अब थोड़ा रामदर्शन के लिए अयोध्या की ओर चलें। लेकिन उससे पूर्व कथा है शिवचरित्र की। गोस्वामीजी ने शिव और पार्वती की कथा लिखी है। शिव पार्वती के ब्याह के बाद पार्वती ने एक पुत्र को जन्म दिया जो कार्तिकेय। जिसने पुरुषार्थ का रूप लेकर तारकासुर नामक राक्षस को मारा। एक बार शंकर कैलास के बेदबिदित वटवृक्ष के नीचे सहजासित है। और योग्य अवसर देखकर पार्वती शिव के पास गई। भगवान शिव ने आदर दिया। वाम भाग बिठाया। सन्मुख होती पार्वती ने शिव की प्रसन्नता देखकर कहा कि भगवन्, मेरे मन से वो भ्रान्ति गई नहीं कि राम ब्रह्म है कि मनुष्य? आप मुझे रामकथा के माध्यम से रामतत्त्व की समझ दो। कथा की मांग जब पार्वती ने की तो भगवान शिव के मुख से पहले जो शब्द निकले वो 'धन्य' शब्द थे। 'धन्य हो। धन्य हो। धन्य हो। आपके समान कोई उपकारी नहीं है। क्योंकि आपने ऐसी कथा पूछी जो सकललोक को पावन करनेवाली गंगा है।' इस प्रसंग पर मैं हमेशा कहता हूं कि भगवान की कथा में जो निमित्त बनता है और कईओं को लाभ दिलवाते हैं वो धन्यवाद के पात्र बन जाते हैं। शिव ने दो बार धन्यवाद दिया। अपनी प्रसन्नता प्रगट की। रामतत्त्व क्या है वो तुम्हें बताउं। वेद भी जिसकी महिमा का गायन नहीं कर पाते वो तत्त्व है राम। और वो निराकारतत्त्व साकार क्यों हुआ, व्यापक ने व्यक्ति का रूप क्यों लिया, इसके कई कारण है। लेकिन कोई कारण इदमित्थ नहीं। क्योंकि ईश्वर को कार्य-कारण सिद्धांत लागू नहीं होता। फिर भी पांच कारण मैं सुनाउं। शिव ने 'मानस' में पांच कारण बताए। एक तो जय-विजय का कारण बताया। जिसके कारण राम का अवतार हुआ। दूसरा सतीवृंदा का शाप, जिसके लिए राम को आना पड़ा। तीसरा नारद ने शाप दिया। प्रभु को अवतार लेना पड़ा। चौथा मनु और शतरूपा ने कठिन तपस्या करके ईश्वर से मांगा कि हमारे घर में अगले जनम में आपके समान पुत्र की प्राप्ति

गुरुद्वार जाने से पांच फायदे हैं। एक, गुरु के द्वार जाने से हमें विषाद से मुक्ति मिलती है। बुद्धपुरुष के पास जाने से विषाद मिटता है। गुरुद्वार जाने से विद्या की प्राप्ति होती है। गुरु देता है विद्या, ब्रह्मविद्या, वेदविद्या, योगविद्या। अथवा तो जो हमें बंधन में न डाले और मुक्त रखे ऐसी कोई वस्तु गुरु देता है। तीसरी वस्तु है, गुरुद्वार जाने से विवेकवर्धन होता है, विवेक बढ़ता है। चौथा, गुरु के पास रहने से हमारा विश्वास दृढ़ होता है; भरोसा परिपक्व होता है। और पांचवां और अंतिम सूत्र, गुरुद्वार जाने से संशय का नाश होता है।

हो। और ये वादा पूरा करने के लिए भगवान सोचते हैं कि मेरे समान दुनिया में कोई है ही नहीं। मैं स्वयं आपका पुत्र बनकर आउं। पांचवां और अंतिम कारण 'मानस' में है राजा प्रतापभानु, जो ब्राह्मणों के शाप के कारण राक्षस हुआ।

प्रतापभानु रावण होता है। उसका भाई अरिमर्दन कुंभकर्ण बनता है। और धर्मरुचि नामका जो उसका मंत्री था वो दूसरी माता के उदर से जन्म लेकर विभीषण बनता है। 'मानस' में राम के अवतार से पहले रावण के जन्म की कथा लिखी है। दिन आता है उससे पहले रात होती है। इसलिए पहले निशिचर वंश की कथा फिर सूर्यवंश की कथा। तीनों भाईयों ने बहुत तपस्या की। दुर्गम, दुर्लभ वरदान प्राप्त किए। और इस वरदान का दुरुपयोग करते हुए रावण ने समाज में अत्याचार फैला दिया। रावण के त्रास से धरा अकुला उठी। गाय का रूप लेके ऋषिमुनिओं के पास गई। देवताओं के पास गई। सब मिलकर ब्रह्मा के पास गए। सभी ने मिलकर हरि को पुकारा। आकाशवाणी हुई, 'देवगण, मुनिगण, पृथ्वी, डरो ना। वैसे कोई कारण नहीं और मानो तो कई कारण; मैं धरती पर आऊंगा अपने अंशों के साथ और आपकी समस्याओं को निर्मूल करूंगा। मैंने बार-बार ये कहा है। ईश्वर को प्रगट करने की विधा तीन है। पहला पुरुषार्थ; दूसरी प्रार्थना, पुकार; तीसरी प्रतीक्षा। आदमी को चाहिए पुरुषार्थ करे। लेकिन हम जीव है। हमारे पुरुषार्थ की अपनी सीमा है। जितना कर सके इतना करने के बाद हम पुकार करे कि प्रभु, मेरे से जितना हो सका मैंने किया। प्रार्थना करें। प्रार्थना की एक मर्यादा है हमारी। और प्रार्थना की सीमा आ जाने के बाद फिर हम प्रतीक्षा करें।

गोस्वामीजी हम सबको लिए चलते हैं श्री धाम अयोध्याजी, जहां प्रभु का प्रागट्य होनेवाला है। अयोध्या का साम्राज्य। रघुवंश का शासन। वर्तमान महिपति है दशरथजी। कैसे हैं दशरथ? धर्मधुरंधर है, गुणनिधि है, ज्ञानी है। हृदय में सारंगपाणि की भक्ति है। सुंदर दांपत्य है महाराज का। कौशल्या आदि प्रिय रानियां है। राजा रानियों को प्रेम देता है। रानियां राजा को आदर देती है। और दोनों मिलके कोई परमतत्त्व की साधना भी करते हैं। मैंने बार-बार कहा कि राम प्रकट हो ऐसे दांपत्य के नाम ये तीन सूत्रीय फोर्म्यूला है। एक, पुरुष अपनी पत्नी को प्रेम दे। दूसरा, पत्नी पुरुष को आदर दे। और दोनों मिलकर हरि भजे उसके घर राम जैसा बेटा प्रगट होगा। राम मानी आराम-विश्राम। जीवन में प्रसन्नता को जन्म देना है तो ये तीन सूत्रीय फोर्म्यूला होनी चाहिए।

महाराज दशरथजी ऐसे राजा है। परम सुखी है। लेकिन एक ग्लानि है कि इतनी उम्र हो गई, मुझे पुत्र नहीं! वशिष्ठजी के पास दशरथजी दो समिध लेकर गए, दु:ख और सुख। अपने दु:ख-सुख सुनाए, 'बाबा, मेरे भाग्य में पुत्रसुख नहीं है क्या?' 'मैं तो कब से प्रतीक्षा कर रहा था कि राजा आए और ब्रह्मजिज्ञासा करे तो ब्रह्म को बालक बनाकर आपके आंगन में घूमता कर दे। लेकिन अभी भी देर नहीं हुई। एक नहीं, चार पुत्रों प्राप्त होंगे। राजन्, आपको पुत्र कामेष्टि यज्ञ करना पड़ेगा।' उसने शृंगी को बुलाया। यज्ञ हुआ। भक्तिसहित आहुतियां दी गई। और यज्ञनारायण अग्नि के रूप में प्रसाद की खीर लेकर यज्ञकुंड से बाहर आए। तीनों रानियों ने प्रसाद पाया। सगर्भा स्थिति का अनुभव होने लगता है। दिन बितने लगे।

परमात्मा को प्रगट होने का अवसर निकट आया। पंचाग अनुकूल हो गया है। त्रेतायुग, चैत्रमास, शुक्लपक्ष, नवमी तिथि, मंगलवार, मध्याह्न का समय। मंद सुगंध शीतल वायु बहने लगी। गर्भस्तुतियां शुरू हो रही है। पूरे जगत में जिसका निवास है अथवा तो पूरा जगत जिसमें निवास करता है ऐसे भगवान, ऐसा ब्रह्म, ऐसा ईश्वर, ऐसा परमात्मा, ऐसा परमतत्त्व जो कहना चाहो, प्रगट होते हैं। चतुर्भुज विग्रह में परमात्मा यहां प्रगट होते हैं। अनंत कोटि ब्रह्मांडनायक माँ कौशल्या की गोद में रोने लगे। बालक के रुदन की आवाज़ प्रासाद से बाहर निकली सुनकर संभ्रमित दासियां दौड़ी कि क्या है? रानियां दौड़ी! महाराज दशरथजी के कान पर बधाई गई कि महाराज बधाई हो, कौशल्याजी ने पुत्र को जनम दिया। महाराज, ब्रह्मानंद में डूब गए। जिसका नाम सुनने से शुभ हो जाए वो तत्त्व मेरे घर बालक बनकर आया? कौन मानेगा? गुरु वशिष्ठ को बुलाओ। वो ही निर्णय करेगा कि ये ब्रह्म है कि भ्रम है? ब्राह्मणों के संग वशिष्ठजी आए। कहा, ये ब्रह्म का प्रागट्य हुआ। ये निराकार साकार हुआ है, नराकार हुआ है। परमानंद में सब डूब गए। और पूरी अयोध्या में बधाईयां शुरू होती है। केनेडा की भूमि पर टोरंटो के इस होल में आज रामजन्म का वर्णन हो रहा है। इस रामजन्म की आप सबको और पूरी दुनिया को बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो।

सेवा करो तो ऐसी करो जो दिखे नहीं

'मानस-सुन्दरकांड', जिसकी विशेष रूप में हम संवादी सूर में चर्चा करते हैं। किसीने आज पूछा है, वादी सूर क्यों नहीं? संवादी क्यों? 'संवादी सूर' शब्द का प्रयोग करने का मतलब हम संवाद पैदा करे, कोई विवाद पैदा न करे। कोई वाद भी पैदा न करे। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं 'गीता' में, वाद मेरी विभूति है। जल्पवाद, विवाद, अपवाद नहीं, दुर्वाद नहीं, केवल संवाद। 'रामचरित मानस' संवाद में है। उमा-शंभु का संवाद; याज्ञवल्क्य-भरद्वाज का संवाद; कागभुशुंडि-गरुड का संवाद; तुलसी अपने मन से संवाद कर रहे हैं। अब आगे बढ़ें। कल का दृश्य। श्री हनुमानजी महाराज ने अशोकवाटिका के मधुर फल खाये क्योंकि हनुमानजी को अतिशय भूख लगी थी। हनुमानजी की पहली दीक्षा भूख है। हमारे जनम के बाद की पहली दीक्षा आंसू है। हनुमानजी को अतिशय भूख लगती है। भूख से एक लड़की और एक लड़का पैदा होता है। भूख के गर्भ से एक कन्या-कुमार का जन्म होता है। इसलिए भूख अच्छी है। कभी-कभी भूख के कारण जो कन्या का जन्म होता है वो है भीख।

मागउँ भीख त्यागि निजधरमू ।
आरत काहन करइ कुकरमू ।।

भीख कन्या का नाम है। और यदि आध्यात्मिक भूख लगती है तो कुमार का जन्म होता है उसका नाम है भेख। अलख, आदेश, भेख जनम लेते हैं। श्री हनुमानजी महाराज की भूख जनम से प्रारंभ की दीक्षा है। हनुमानजी की पहली दीक्षा है भूख। हनुमानजी सूर्यग्रहणवाले दिन जन्मे। और-

बाल समय रबि भक्षि लियो तब,
तीनहुँ लोक भयो अंधियारो।

●

जुग सहस्र जोजन पर भानू।।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।

इतनी दूरी पर सूर्य है, फिर भी सूर्य को फल समझकर निगल गये। वो तो बुद्धिमतां है। पर हनुमानजी जैसे विवेकी हमें चिंतन करने के लिए मजबूर करते हैं। हनुमानजी की भूख है प्रकाश की भूख। शास्त्रों में ज्ञान को प्रकाश कहा है। हनुमानजी सूरज को पकड़ते हैं। आप विज्ञान के तरीके से मत सोचना। ये वानर, इन्सान या रोकेट है? संपाति और जटायु भी सूरज को लेने निकले तो ये आखिर क्या है? उसको तत्त्वबोध से समझना पड़ेगा। ज्ञान बहुत दूर है। हनुमानजी गये वहां और पूरी दुनिया में अंधेरा कर दिया। यहां राहु भी समांतर दौड़ता था। राहु का काम था अमावस्या का ग्रहण करे पर उसके पहले हनुमानजी ने अंधेरा कर दिया। राहु ने इन्द्र के पास शिकायत की। इन्द्र ने क्रोधित होकर वज्र उठाया और हनुमानजी पर फेंका। हनुमानजी ने कहा, तू देव होकर दानव राहु का क्यों पक्ष ले

रहा है? तू देव है तो मैं महादेव हूं। एक वस्तु कहूं, देव और दानव दोनों के लक्ष्य एक है। कैसे भोग प्राप्त करे? पर सवाल बंटवारे का है! लूट में भी धरम रखना। देवलोक यज्ञ करके पुण्य करके फल प्राप्त करते हैं; शुभ करके स्वर्ग में जाते हैं। और राक्षस कहते हैं, पुण्य करने की जरूरत क्या है? ताकत है, देव को हराकर स्वर्ग छिन लेंगे। दोनों का आदर्श-लक्ष्य एक है; कार्यपद्धति अलग है। देवता भी और दानव भी स्वार्थी है। समुद्रमंथन में दोनों का हेतु अमृत निकालने का था। लेकिन बटवारे में लड़ाई हुई। काग कवि कहे -

मंथननी गोळीने तळिये, झेर हशे ते नीकळशे,
कां सळगी जग भस्म थशे, कां कोई जटाधर जागी जशे।

'रामचरित मानस' में 'लंकाकांड' में एक पंक्ति है। तुलसीदासजी एक निवेदन डालते हैं-

आए देव सदा स्वारथी। बचन कहहिं जनु परमारथी।।

हनुमानजी ने इन्द्र को पूछा, तूने देव होकर मुझे वज्र क्यों मारा? लोककल्याण के लिए विश्व में उजाला रहना चाहिए। लोककल्याण की परिभाषा 'मानस' के रूप में सीखे। इस कथा में विशेष रूप में मेरे युवानों को कुछ संदेश पहुंचे। समाज में उजाला रहना चाहिए। वज्र फेंका। तो राहु भी तो अंधेरा करनेवाला था। सूर्य हमारी बड़ी सेवा करता है। बिलकुल सूर्य से हम जिंदा है। सूर्य की सेवा ज्यादा कि पवन की सेवा ज्यादा है? मैं पवन का बेटा हूं, तू मुझे रोकने आया? लोग मरे जायेंगे! पृथ्वी, अग्नि, जल, आकाश सब सेवा करते हैं पर जब आवश्यकता होती है तब। बाकी पवन एक ऐसा है कि जिसकी चौबीस घंटे सेवा चलती है पर दिखती नहीं। गुप्त रहकर पवन सेवा करता है। तो पवनपुत्र-पवनतनय लिखा; बाप का नाम लिखा, माँ का नहीं।

सेवा करो तो ऐसी करो, दिखे नहीं। तुम चित्रकूटधाम की सेवा न करो पर तुम निंदा, इर्ष्या या द्वेष ना करो। मुझे कोई सेवा की जरूरत नहीं। मेरी इतनी ही मांग है, तुम मूल वस्तु करो। आप कभी ये मत समझो कि बापू सेवा करने से राजी हो जायेंगे। समझो, सरनामा चुक गये हो! मुझे रामनाम के सिवा और पगडीवाले मेरे बाप, इसके सिवा क्या लेनादेना? आपको क्षमता हो और सद्उपयोग करो लेकिन मेरी मूल बातों समझो। व्यासपीठ यही चाहती है। व्यासपीठ सेवा कर रही है वो भी मुफ़्त में! मैं पोथी लेकर आता हूं, पोथी लेकर चला जाता हूं। एक डोलर भी नहीं! कुछ भ्रांतियां चिठ्ठी में आती है! बापू विदेश में कथा कहते हैं तो एक लाख डोलर चार्ज करते हैं!

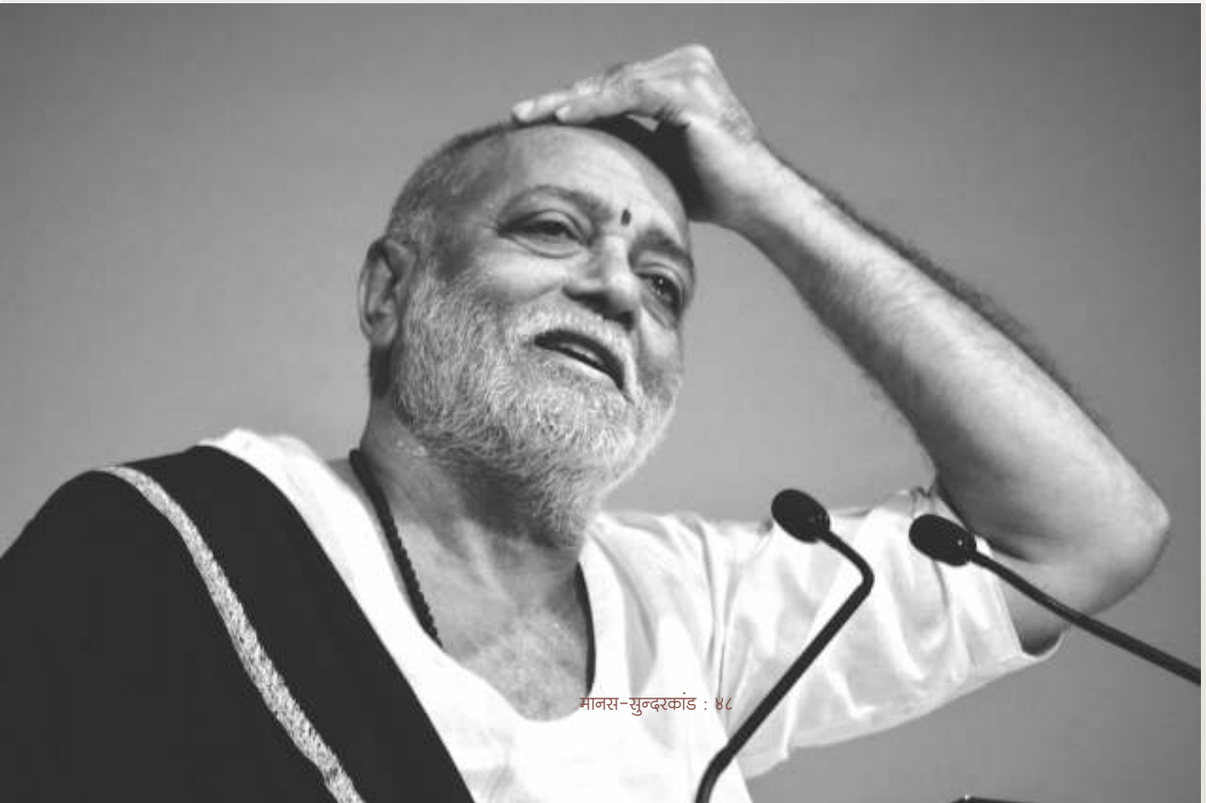

अब इसको क्या कहे? खानदानी के स्वभाव में ये नहीं है! हम तो घरघर की रोटी खानेवाले हैं साहब! मेरी सेवा करनी हो तो निंदा छोड़ो, इर्ष्या छोड़ो, दृष्टि बदलो, द्वेष छोड़ो। और यदि मुझ में भी आपको निंदा, इर्ष्या या द्वेष दिखे तो मुझे भी छोड़ो। मैं बिलकुल खुल्ला हूं। मुझे भी परखो और इसके बाद मेरे पास आना। निखिलभाई डोक्टर, उसने वोशिंग्टन में एक कमरा बनाया। मैंने कभी कहा था, आप अलग इतने सारे कमरे बनवाते हो तो एक साइलन्ट कमरा भी बनाओ। डोक्टर ने पकड़ लिया। लास्ट यर जब मैं उसके घर ठहरा था तो मुझे वो कमरा बताया और बोले, यहां मैं कुछ भी नहीं रखता हूं। केवल बापू की तसवीर। यहां मैं मौन रखता हूं। पर ये केवल मोरारिबापू ही बोलेगा। मैंने डोक्टर से कहा, कभी-कभी मैं भी बाधा बन सकता हूं! मेरी तसवीर भी निकाल दो। कमरा बिलकुल खाली रखो। आप पहले खुद एम्प्टी हो जाओ।

पहले खुद को खाली कर।

फिर उसकी रखवाली कर।

शून्य की रक्षा करने की जरूरत होती है, भरपूर की रक्षा करने की नहीं। मेरी तसवीर भी तुम्हारी आड़ बन सकती है। मेरी क्या सेवा करते हो? मेरी सेवा वो है निंदा, इर्ष्या छोड़ो। एक-दूसरे के प्रति द्वेषदृष्टि छोड़ो। जिसका कोई मूल्य नहीं वो बहुत अमूल्य होता है। रामकथा का क्या मूल्य हो सकता है? सबसे बड़ी सेवा कथा में से विरक्त हो जाओ। धीरे-धीरे करो। मैं कभी किसीको कोई बात छोड़ने की बात नहीं करता पर तीनों बात आदेश के रूप में कही है। जीवन में सम्यक् काम होना जरूरी है। क्रोध, लोभ छोड़ने का नहीं। 'मानस' का अध्ययन करने से, गुरुकृपा से दिखता है कि आदर्श सबका एक है, बंटवारे में तकलीफ़ है!

मद्य असुरने सुरने अमृत, पंगतिभेद प्रभु करशे,
ए फळनुं परिणाम हरिने युगयुग अवतरवुं पडशे.
झडपेला अमृतथी सुरनां चित्त कदी नहीं स्वस्थ थशे,
झोंटेलुं अमी अमर करे पण अभय नहीं आपी शकशे.

सेवा तो पवन करता है, चौबीस घंटों। सूरज रात में नहीं करता। जो दिखने में दुलेजा हो जाता है, तो उसका महत्त्व बढ़ जाता है। पवन दिखता नहीं इसलिए उसकी कोई कीमत ही नहीं। इसलिए इन्द्र सूरज के लिए लोककल्याण की बात करने लगा। हनुमानजी महाराज की पहली दीक्षा है भूख। इन्द्र ने वज्र छोड़ा और हनुमानजी की दाढ़ी पर लगा। वो गिर पड़े। इन्द्र समझता था सूर्य, पृथ्वी, अग्नि, जल ही सेवा करता हैं। पिता वायुदेवता को गुस्सा आ गया और कुछ समय के लिए वायु को खींच लिया। जैसे वायु को खींचा, सब मरे-मरे करने लगे! पिता दुनिया को दिखाना चाहते थे कि वायु की क्या कीमत है? एक मिनट में देखो, कैसी दशा हो गई! अब इन्द्र ने प्रार्थना करके वायुदेव की माफ़ी मांगी। सभी देवता इकठ्ठे हो गये। माफ़ी मांगी और सब देवता ने हनुमानजी को आशीर्वाद दिया। किसी ने अजरता का-अमरता का आशीर्वाद दिया तब पवन-वायु मुक्त हुआ।

हनुमानजी अशोकवाटिका में मधुर फल खाकर खड़े थे। इन्द्रजित आया। रावण ने कहा था, मुझे देखना है कि जिसने अक्षयकुमार को मारा वो बंदर कैसा है? उसको मारना नहीं। इन्द्रजित ने ब्रह्मास्त्र फेंका। हनुमानजी को बचपन में ओलरेडी वरदान मिला था। वो कुछ नहीं काम कर सकता। फिर भी हनुमानजी ने इन्द्रजित के ब्रह्मास्त्र का मान रखा। हनुमानजी मूर्छित हो गये। बचपन में हनुमानजी ने इन्द्र को मूर्छित किया। अब रामकथा में इन्द्रजित ने हनुमानजी को मूर्छित किया। लेकिन संत को कोई मूर्छित नहीं कर सकता। वो गिरे पर इन्द्रजित की सेना जहां थी वहां गिरे और कई मर गये! साधु गिरता है तो दुर्गुणों को खतम करता है। साधु को गिराया नहीं जा सकता।

हनुमानजी लंकादहन सब करके आये। सुग्रीव-जामवंत को मिले। फिर खबर की, फटिक शिला प्रवर्षण पर्वत पर बैठे थे। 'रामायण' में तीन शिलायें है। पहली, अहल्या की शिला, गौतम आश्रम में वहां राम की चरणरज ने काम किया। दूसरी, 'बैठे फटिक सीला पर दो भाई।' चित्रकूट की फटिक शिला; लक्ष्मण फल-फूल लेने गये हैं और रामजी सीताजी का शृंगार कर रहे हैं। तीसरी फटिक शिला है प्रवर्षण पर्वत पर, दोनों भाई बैठे थे। 'रामचरित मानस' में तीन प्रकार की शिला क्यों? 'मानस' में चार प्रकार की गुफा क्यों? तीन प्रकार के वन, तीन प्रकार का जिक्र क्यों? ये 'मानस' है। हमको मार डाला है इस शास्त्र ने!

आसमां से उतारा गया।
ज़िंदगी देके मारा गया!

ये भी बहुत प्यारा सूत्र आया है कि ये जीवन मरणधर्मा है कि जीवनधर्मा? हम कहते हैं, शरीर मरणधर्मी है। ओशो की समाधि पर पूना में लिखा, 'मैं इस तारीख से इस तारीख गुजरा हूं; पृथ्वी नामक ग्रह से गुजरा हूं।' यहां 'मृत्यु' शब्द नहीं; गुजरना, पास होना, ओशो ने तो आज लिखा। हमारे काठियावाड में तो पोस्टकार्ड में लिखे कि हमारे पिता गुजर गये हैं। मृत्यु हुई है, ऐसा नहीं लिखा जाता।

गुजरे हैं आज इश्क में हम उस मकाम से।
नफ़रत सी हो गई है मोहब्बत के नाम से।

शरीर जीवनधर्मा है। एक बोडी से दूसरी बोडी में हम ट्रान्सफर होते हैं। पुराने कपड़ें निकालकर नये कपड़ें पहनते हैं। 'भगवद्गीता'-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि
अन्यानि संयाति नवानि देही ।।

नया कपड़ा धारण कर लेते हैं, वैसे आत्मा पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण कर लेता है। 'शिवसूत्र'- लोकानंद समाधि सुखम्।' शोकानंद नहीं, लोकानंद। सात लोक नीचे, सात लोक उपर। चौदह श्लोक नहीं, चौदह लोक लिखा है। 'रामचरित मानस' में सुबह में मेरा श्लोक 'लोकाभिरामं रणरंगधीरम्।' ओलरेडी है। श्लोक पर लोक से शुरू होता है। भाषा का क्या है? ठंडी चाहे कम्बल से उड़े या पस्मिनी सोल से। मतलब ठंडी रोकने की बात है। 'लोकानंद समाधि सुखम्।' भगवान शंकर 'शिवसूत्र' में बोले, समाधि का सुख। दूसरी ओर लोकानंद सुख दोनों समान है। मैं आपसे पूछुं, सोने का पात्र हो या मणिजड़ित पात्र हो और उसमें ज़हर दिया हो तो आप पीओगे? एक बार पीके पात्र बेच देना! लेकिन यदि मिट्टी के बर्तन में अमृत भरा हो तो हम पी जाते हैं। भाषा-लोकभाषा में भेद क्यों करते हैं?

तो बाप! संत को गिराया नहीं जाता। समाज समय-समय पर चेष्टा करता है, लेकिन गिरते समय भी वो देखता भी है, दुर्गुणों को मारने के लिए, ऐसा गिरना 'मानस' में है। जामवंत ने हनुमानकथा सुनाई। सीता की खबर वो हनुमानजी लाये हैं। रामजी हनुमानजी को गले लगाते हैं और कहते हैं, हम तेरे ऋण से कभी मुक्त नहीं हो पायेंगे। हनुमानजी की प्रशंसा राम करने लगे उसी समय वो गिर गये इसका क्या मतलब? कोई भी आदमी हमारी प्रशंसा करे तो गिरना आवश्यक है। ये तो प्रभु राम करते हैं। गिरना ठीक है तो प्रभु के चरणों में गिरे। आपकी प्रशंसा से मुझे अहंकार आये तो मुझे अहंकार से बचाओ, रक्षा करो। राहु-इन्द्र ने देवताओं की मिली भगत कहा क्योंकि वो सब जगह मत्था झुकाये! कुछ समय राहु, कभी हनुमानजी, शुक्राचार्य, बृहस्पति को प्रणाम! तुम सही जगह प्रणाम नहीं करते, मतलब के प्रणाम करते हो। चित्रकूट में भरतजी राम के चरणों में गिर पड़े। गिरना वहीं जहां कोई उठाये। अभी हनुमानजी अशोकवाटिका में जब गिरे तो गिरते समय इन्द्रजित की सेना को समाप्त कर दिया तब इन्द्रजित ने नागपाश बाण फेंककर बांध दिया। शंकर ने कहा, ये तो प्रभुकार्य के लिए बंधा है भवानी। हनुमानजी की चारो ओर नाग आ गये तो बहुत अच्छा लगा! ये तो शंकर के अवतार है। नाग भी अपने मालिक को मिलके भेंट रहे थे। मेरा चेला पहचान सके। नागपाश में हनुमानजी गये। कभी गुरु आश्रित को संकेत करता है। कभी वेश से, वाणी से, वर्तन से, विचार प्रक्षेपण से सचेत करता है। नासमझ राक्षसलोग उसको बांधकर रावण के दरबार में ले आये। हनुमानजी सोच रहे हैं, चेला समृद्ध बहुत है! लेकिन वो देखने आये कि ये जागृत है कि सोया है? हनुमानजी ने चारों ओर सभी देवता को हाथ जोड़कर खड़े हुए देखे। हनुमानजी बीच में खड़े हैं। चारों ओर देखते हैं! तू कौन है? किसके बल से तूने मेरे वनराक्षस को मारा, वृक्ष तोड़े? यहां रावण ने पूछा और कहा, मेरे राज में सूरज को हुकम करूं तो जितना बोलूं इतना ही तपता है। और तू इतना निर्भीक? तू है कौन? किस के बल से तू ये काम करके आया है? तब हनुमानजी ने वैश्विक जवाब दिया, रावण, सबके पीछे बल तो उसीका ही होता है।

सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया।
पाई जासु बल बिरचित माया।।

माया जिसका बल प्राप्त करके ब्रह्मांड का सृजन करती है। इस कथा का 'सुन्दरकांड' मेरा नहीं, मेरे दादा का है। दूसरा बल-

जाकें बल बिरंचि हरि ईसा ।
पालत सृजत हरत दससीसा ।।

जिसके बल से इस सृष्टि का निर्माण, पालन, पोषण और विसर्जन करते हैं, उसके पास जिसका बल है, वो बल है।

जा बल सीस धरत सहसानन।
अंडकोस समेत गिरि कानन।
धरई को बिबिध देह सुरत्राता।
तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता।।

वो जो बल जिसके पीछे लगा है वो बल विधविध रूप धारण करके आते हैं। यहां रावण को शठ कहा, ये अच्छा नहीं पर ये दुलार से बोले हैं। जैसे आप कभी अपने बच्चों को लुच्चा कहे। जिसके बल से तू पूरी दुनिया का राजा बना मैं उसी बल का दूत हूं। उसके बल से तूने उसकी पत्नी का हरण किया, दुरुपयोग किया! एक बात याद रखना मेरे श्रोताओं, जिसकी कृपा से कभी ज़िंदगी में आनंद आया हो

उसका कभी अपराध मत करना। मरणधर्मा मिटकर जीवनधर्मा हो उसका अनादर मत करना। मूर्ख, ऐसी नासमझी ना कर, वो ही उसका बल तेरे पीछे भी है।

सब कें देह परम प्रिय स्वामी।
मारहिं मोहि कुमारग गामी।।

तेरे राक्षस मुझे मारने आये। मुझे भूख लगी थी तो फल खाया। वो धरती की पुत्री जानकी की आज्ञा से फल खाया। आखिर रावण मृत्युदंड का एलान करता है। सभी राक्षस खड़े हो गये, परंतु जैसे ही हनुमानजी ने सबकी ओर देखा, सब बैठ गये! ये आंखों के तेज का प्रभाव था। राक्षसगण उसे मारने के लिए आगे आये, उसी क्षण विभीषण का प्रवेश। भक्ति करनेवालों को सब संकट आते हैं पर आखिर में अंत के समय कोई न कोई सहाय आ ही जाती है। विभीषण ने कहा -

नीति बिरोध न मारिअ दूता।
आन दंड कछु करिअ गोसांई।

फिर निर्णय किया गया। कपि को पूंछ पर ममता होती है। घी-तेल में डूबोकर उसमें अग्नि लगाओ और पूंछहीन बंदर जब राम के पास जाएगा तो राम वहीं से सोचकर लौट जायेंगे! हनुमानजी हंस रह हैं! मुझे पूंछ की जरूरत नहीं है। पूंछ मानी प्रतिष्ठा। हनुमानजी कहते हैं, मुझे तो मेरे प्रभु का काम करना है। राक्षसगण घर-घर से घी, तेल, कपड़ें लाते हैं। हनुमानजी की पूंछ पर लपेटते हैं तब हनुमानजी पूंछ लम्बी कर देते हैं! भक्त को तुम उसकी प्रतिष्ठा जितनी तोड़ने की कोशिश करो, प्रभु उसकी प्रतिष्ठा और बढ़ा देता है!

लंका में हनुमानजी की सवारी निकली। पूरी लंका में घुमाये गये। लोग मजाक कर रहे हैं। बाद में हनुमानजी की पूंछ को आग लगाई गई।

पावक जरत देखि हनुमंता।
भयउ परम लघुरूप तुरंता।।

हनुमानजी ने छोटा-सा रूप धारण कर दिया। एक अटारी पर से दूसरी पर। पूरी लंका में आग फैल गई! एक विभीषण का घर नहीं जला। समाज भक्तों को जलाने की कोशिश करता है लेकिन भक्त जलता नहीं, समाज की मान्यता को जला देता है। श्री हनुमानजी महाराज पूरी लंका जलाकर समुद्र में कूद पड़े। पूंछ बूझाया। लंका में वाटिका, कूप, सरोवर भी है पर समंदर में क्यों बुझाई? मतलब जब किसी भक्त को जलाये तब उसीकी जलन शांत होने के लिए उदार होना चाहिए, संकीर्ण नहीं। औदार्य का परिचय दिया। सूरत के कवि किरण चौहाण का शे'र है -

आपणे मोटा थवा कंइ पण नहीं करवुं पडे,
आपणी इर्ष्या करीने लोक नाना थइ जशे।

जानकीजी ने पूछा, हनुमान, लंका में इतनी आग लगी है? हनुमान ने कहा, इतना बड़ा नगर है, ऐसा तो होता रहता है। बात को टाल दिया। कारण क्या? माँ, ये आग मैंने नहीं लगाई है। आपके संताप ने, आपकी विरहाग्नि है, उसने लंका में आग लगाई है। परमात्मा के प्रभाव से लगी। मेरे बाप ने लगाई। सच कहूं, आग रावण के पाप ने लगाई! स्वयं कर्मो का फल था। अब माँ, मुझे कोई निशानी दे। मैं प्रभु के पास आपका कोई संदेश लेके चलूं। जैसे रघुनाथजी ने निशानी दी आपके लिए; आप भी मुझे कुछ दे। जानकीजी ने तुरंत चूडामणि ऊतारकर दे दी। हनुमानजी को कहा, भगवान को कहना, आप दीनदयालु है। अब विलंब न करे। हनुमानजी कहे, माँ, मैं तो तुझे अभी ले चलूं लेकिन मुझे आज्ञा नहीं है। कुछ समय धैर्य धारण करो। अनुज सहित प्रभु आयेंगे और सबकुछ ठीक हो जाएगा। चूडामणि लेकर हनुमानजी लौटते हैं। मुद्रिका लेकर जैसे आये थे, वैसे चूडामणि लेकर श्री हनुमानजी समंदर नांघते हैं। जब आये तो हमने देखा, कितने विघ्न आये थे! पर लौटते हैं तब कोई विघ्न नहीं आया। भगवान राम के दर्शन करके भी इतने विघ्न आये। पर माँ के आशीर्वाद से, माँ के वरदान से मार्ग की सब बाधाओं दूर हो गई।

हनुमानजी मूल तट पर आये। प्रभु को प्रणाम

पृथ्वी, अग्नि, जल, आकाश सब सेवा करते हैं पर जब आवश्यकता होती है तब। बाकी पवन एक ऐसा है कि जिसकी चौबीस घंटे सेवा चलती है पर दिखती नहीं। गुप्त रहकर पवन सेवा करता है। सेवा करो तो ऐसी करो, दिखे नहीं। तुम चित्रकूटधाम की सेवा न करो पर तुम निंदा, इर्ष्या या द्वेष ना करो। मुझे कोई सेवा की जरूरत नहीं। आप कभी ये मत समझो कि बापू सेवा करने से राजी हो जायेंगे। समझो, सरनामा चुक गये हो! मुझे रामनाम के सिवा और पगड़ीवाले मेरे बाप, इसके सिवा क्या लेनादेना? आपको क्षमता हो और सद्उपयोग करो लेकिन मेरी मूल बातों समझो। व्यासपीठ यही चाहती है।

हुए। प्रभु ने कहा, मैं तेरे कर्जे से कभी मुक्त न हो पाउंगा। रघुकुल सदा तेरा ऋणी रहेगा। जानकीजी का संदेश दिया। चूडामणि दी। रामजी की आंखों से अश्रु बहने लगे। हनुमानजी की सराहना-प्रशंसा करने लगे तब वो रामजी के चरणों में गिर पड़े। चरण पकड़ लिये और बोले, मुझे प्रशंसा से अहंकार आ जाएगा वो फ़िर मुझे गिरायेगा! आप मुझे बचाइये। भगवान बार-बार उठा रहे हैं हनुमानजी को। ये दृश्य बड़ा प्यारा है। हनुमानजी को हृदय से लगा रहे थे। तो कहा, चरण में मुझे रहने दो। प्रभु प्रसन्न है। हनुमानजी के सर पर हाथ रख दिया। शंकर ये कथा भवानी को कैलास पे सुना रहे हैं। तो शंकर समाधिस्थ हो गये। अनुभव हुआ कि मेरे सर पर हाथ आया है। हनुमानजी शंकर ही तो है। 'सुन्दरकांड' की ये सुंदर कथा पार्वती को आगे सुनाने लगे। प्रभु ने कहा, अब विलंब न करे। और पूरी सेना को लेकर समुद्र तट प्रभु आते हैं।

यहां लंका में विभीषण से वार्तालाप हुआ। रावण ने विभीषण को देशनिकाल कर दिया। वो प्रभु के शरण में आया। प्रभु ने उसको शरणागत रखा। प्रभु विभीषण को पूछते हैं कि ये विशाल समंदर बीच में पड़ा है। हम पार कैसे करेंगे? तब विभीषण ने कहा, आपके कुल में समंदर श्रेष्ठ है। आप तीन दिन इंतज़ार करे। कोई सुझाव मिले तब तक बल का प्रयोग न करे। और तीन दिन बीत गये। प्रभु ने बनावटी क्रोध किया। ये सूत्र ठीक नहीं लगता, 'प्रीति भय से की जाती है।' भय से हो जाती वो प्रीति क्या? तुलसीदास के ये सूत्र की बहुत आलोचना हुई! ओशो ने की। काश! तलगाजरडा का एक अलग दर्शन है। प्रेम कभी भय से नहीं करना पर प्रेम हो जाये बाद में जिससे प्रेम हो जाये, उसका थोड़ा भय रखना। किसी बुद्धपुरुष के पास डरते-डरते नहीं जाना पर एक बार उसके हो गये तो उस बुद्धपुरुष की मर्यादा न टूटे इसका खयाल रखना। प्रीत करके पहले नहीं, बाद में भय रखो। ये मैं कहता हूं।

चित्रकूट में मैं बैठा था। मेरे पास एक घटना आई। निझामुद्दीन ओलिया के पास पहली बार अमीर खुशरो शरणागत हुआ। अमीर खुशरो बहुत धनवान और बड़े राजा-महाराजा के साथ भी संबंध था। पर मैं कहता हूं, वो जब निझामुद्दीन के पास पहुंचे तब वो सच्चा अमीर हुआ। जब बुद्धपुरुष मिलता है तभी खुश रह सकते हैं। इसलिए 'अमीर खुश रहो।' वो पहले निर्भय आया। उसीकी शरण में बैठकर रंग लग गया और उसके बाद अमीर निझाम से बहुत डरने लगा। निझाम ने जब पूछा, इतना डरे हुए क्यों हो? तो कहा, बाबा, मैं जब आया तब मगरूरी में था लेकिन अब मोहब्बत हो गई है इसलिए डर लगता है! जब किसीसे-परमात्मा से प्रेम लागू हो जाता है तब डर लगता है। राम भी विश्वामित्र का पैर जब दबाते तो डरते हैं कि बाबा को कोई पीड़ा हो गई तो? ये संकोच, भय, प्रेम का-भक्ति का लक्षण है।

'रामचरित मानस' में आई कई बातें लोगों ने विवादास्पद बनाया गया! तुलसी का शास्त्र संवादी शास्त्र है। धनुष्यबाण तो वहां करीब था। प्रभु ने कहा, लक्ष्मण, बाण ला। प्रभु चाहते हैं कि इतने समय में भी समंदर सुधर जाये तो मुझे बल का प्रयोग न करना पड़े। कितना मौका दिया जाता है! आदमी को सुधरने का श्रेष्ठों की ओर से बहुत मौका दिया जाता है। मौका दे वही महात्मा है। हरेक बुरे आदमी का बुरा भूतकाल होता है तो अच्छा भविष्य होता है। हरेक अच्छे आदमी के लिए भूतकाल होता है। इसलिए किसी के कुल का मूल मत देखो, वर्तमान ही देखो। आप क्या है इसलिए नहीं पर आप कल क्या हो सकते हो इसलिए कथा कहता हूं। सत्संग से हम-आप चेन्ज हो सकते हैं। गूंगे कर दे ये दुरात्मा, स्वतंत्रता प्रदान करे वो संत। मौका दे ये महात्मा।

समंदर जड़ है। इसमें विवेक नहीं होता। पानी जड़ है। पापी या पुण्यशाली दोनों को डूबा देता हैं। वायु, अग्नि, पृथ्वी, धरतीकंप से किसी को भी मार दे। वायु का प्रताप होता है। अच्छे आदमी का घर भी उड़ जाता है। अग्नि किसी को भी जला देता है। जैसे प्रभु ने तीर चढ़ाया, समुद्र में अग्नि की ज्वाला उठने लगी! जलचर जंतु अकुलाने लगे। समंदर समझ गया, सब मरनेवाले हैं! तो समुद्र ब्राह्मण का रूप लेकर मोतियों का थाल लेकर आया। प्रभु को कहता है, हम स्वभावगत जड़ है। आपके तीर से सब जलकर मर जायेंगे इसमें न आपकी प्रभुता, न मेरी प्रभुता। अच्छा किया आपने मर्यादा की सीख दी। देर कर दी मैंने पर एक सुझाव है, आपकी सेना में नल-नील नाम के बंदर है उसका बचपन से आशीर्वाद है कि तुम्हारे हाथों से छुआ हुआ पत्थर पानी पर तैरेगा। महाराज, सेतुबंध की रचना कीजिए। मैं भी अपनी ओर से मदद करूंगा। लेकिन सेतु बनाइये। प्रभु का स्वभाव जोड़ने का है। सेतु बनाने की बात पसंद आई। सेतु बनाने का निर्णय लिया गया। परमात्मा को सेतुबंध का प्रस्ताव भा गया। समुद्र निज भवन गया और यहां समुद्रदर्शन संक्षेप में समाप्त हुआ।

मानस-सुन्दरकांड
॥ ८ ॥

विभीषण का रामदर्शन शरणागति का दर्शन है

कुछ जिज्ञासाएं है। एक भाई ने पूछा है, यहां आने के बाद चिठ्ठी मिली लेकिन मुझे पता नहीं था कि ऐसा प्रश्न आज आयेगा। मैंने उपनिषद का एक पवित्र वचन आज सुबह याद किया था। ये बड़ा प्रसिद्ध वचन है, उसको मैं आपके सामने पेश करना चाहूंगा। ओलरेडी मेरे पास जिज्ञासा भी है। ये तो नदी-नाव संजोग है। पूछा गया है, 'बापू, कथा और प्रवचन में क्या अंतर?' अच्छा प्रश्न। मैं गुरुकृपा से, मेरी समझ के अनुसार जवाब देने की कोशिश करूं। आपकी कोई बाध्यता नहीं है कि हैं जो कहूं वो आप कबूल कर ले। मैं बार-बार कहता हूं कि 'मैं' शब्द का उपयोग करता हूं तब ये वक्तव्य की जिम्मेवारी मेरी है; सही हो कि गलत हो, जो भी हो ये जिम्मेवारी मेरी है इसीलिए 'मैं' शब्द का प्रयोग करता हूं। बाकी तो यहां हम सब व्यास का जूठा ही बोलते हैं! हमारा मौलिक क्या है? ये मंत्र उपयोगी हो जाएगा। मैं तो ऐसे ही ले आया था कि मुझे आज वहां से शुरू करना है। लेकिन आपका प्रश्न भी है तो अच्छा हो गया!

नायंमात्मा प्रवचनेन लभ्यो, न मेधया, न बहुनाश्रुतेन।

आठ दिन से जो हम कर रहे हैं इस पूरी प्रक्रिया का इस मंत्र में खंडन है। बिलकुल खंडन है। लेकिन समझा न जाय तो खंडन है। समझ में आ जाय तो इससे बढ़िया कोई मंडन नहीं है। बाप! इसका सीधा-सादा अर्थ है कि ये आत्मा यानी परमात्मा, ईश्वर जो आप नाम लगाओ आपकी मरजी। वेद का, उपनिषद का ऋषि कहता है, ये आत्मा बड़े-बड़े प्रवचन करने से नहीं मिलती। 'न मेधया'; बहुत बौद्धिक होने के बाद, बहुत बौद्धिक विचारों के बाद, बौद्धिक तर्कों के बाद भी ये आत्मा नहीं मिलती। और अब आपकी बारी है। 'न बहुनाश्रुतेन'; आप कितना भी सुनो, कहीं भी जाओ। कहीं भी सुनो, परमात्मा मिलनेवाला नहीं।

प्रवचन और कथा में अंतर है बाप! कथा प्रवचन नहीं है। प्रवचन कथा नहीं है। मैं मेरी जिम्मेवारी से अर्थ कर रहा हूं इसीलिए मैंने पहले कहा, सब ठीक हो न ठीक हो जिम्मेवारी मेरी है। अब मैं चाहूंगा कि आपके पास मैं प्रवचन, व्याख्यान, आख्यान, भाषण और कथा उसका गुरुकृपा से एनालिसिस करूं, पृथक्करण करूं। ये सब मेरी समझ में जितना आया है वो मैं कहूंगा। आप माने न माने, खुशी आपकी। हम मुसाफ़िर है। कल अपने घर जायेंगे। प्रवचन, आख्यान, व्याख्यान, भाषण और कथा में फ़र्क है।

मेरी समझ में प्रवचन उसको कहते हैं, जिसमें केवल शब्द की प्रधानता होती है; अनुभव न भी हो। हो सकता है, अच्छा प्रवचन हो, शब्दलालित्य हो, चारों ओर शब्दकोश खुल्ले हो जाय, इतने शब्द निकलने लगे, लेकिन अनुभव न भी हो! हो सकता है। May be. प्रवचन में शब्दप्रधानता होती है। हो सकता है अनुभवपूर्ण भी हो। कोई दरवाजे हम बंद न कर दे। तो केवल शब्दप्राधान्य जिसमें

है मैं उसको प्रवचन कहूंगा। फिर आख्यान; आख्यान हमारे प्रेमानंदीय जो होता है। पोळ में बैठकर माणभट्ट और या तो हमारे साधु-ब्राह्मण पगपेटी लेकर दो हाथ से हार्मोनियम बजाये और आख्यान करते हैं। कभी नरसिंह मेहता का, कभी सगाळशा का, भक्तों के भगवान के उसको हम आख्यान कहते हैं। नळाख्यान, सुदामा आख्यान, कुंवरबाईनुं मामेरुं, शामळनो विवाह, मेहतानी हूंडी, मेहता के पिता का श्राद्ध, हरिश्चंद्र आख्यान सब आख्यान है, जिसमें भक्तचरित्र, बिलग-बिलग क्षेत्र के विशिष्ट महानुभावों ने जिसको दुनिया को कुछ दिया है उसके बारे में आख्यान की कथायें हमारे यहां होती थी, होती है। उसको मैं आख्यान समझता हूं। कोई मनीषी उसकी दूसरी भी व्याख्या कर सकते हैं। और व्याख्यान उसे कहते हैं कि जो युनिवर्सिटीओं में दिये जाते हैं। मैं तीन बार मेट्रिक में फैल हुआ हूं! मुझे भी युनिवर्सिटीओं में लोग व्याख्यान के लिए बुलाते हैं! इससे बढ़िया कलियुग कोई नहीं हो सकता! व्याख्यानमालाओं में व्याख्यान दिया जाता है। जैसे कई जगह व्याख्यानमालाएं चलती है। इसमें प्रतिवर्ष कोई न कोई मनीषी, कोई विद्वान व्याख्यान देते हैं। तो ये सीलसीला चलता है जिसमें व्याख्यान दिये जाते हैं। मैं समझता हूं ये व्याख्यान है, घंटे-डेढ़ घंटे का व्याख्यान है। अहमदावाद युनिवर्सिटी में मुझे बुलाया गया। कथा और कहानी के बारे में चर्चा थी उसमें मुझे व्याख्यान देना था। तो युनिवर्सिटी के जो वी.सी.साहब थे उसने भूमिका में कहा कि हमारे यहां वार्ता थी, कहानियां थी और ये कहानियां ऐसी थी कि बच्चे सो जाते थे कहानी सुनते-सुनते। दादा-दादी कहानियां सुनाते थे बच्चे को। ये सब चला गया। बच जाय तो बहुत अच्छा है। लेकिन उसने कहा कि कहानी जो है ये सुला देती है। और मोरारिबापू भी कहानी कहते हैं राम की कहानी, कृष्ण की कहानी। उसने ऐसा सुंदर निवेदन अपने ढंग से दिया। जब मेरी बारी आई तो मैंने कहा कि वी.सी.साहब ने बहुत सुंदर कहा कि कहानी बहुत महत्त्व की और मोरारिबापू भी कहानी कहते हैं। मैंने कहा, थोड़ा भेद करो। ओर कहानी लोगों को सुला देती है, मोरारिबापू कहते हैं वो कहानी लोगों को जगाती है। हां, कोई विशिष्ट महापुरुष सो जाय, बात ओर है! क्योंकि उसके लिए तो निद्रा समाधि स्थिति है। ये पहुंचे हुए फकीर है! मेरा काम सुलाने का थोड़ा है? जगाने का है।

हमारे 'चित्रलेखा' के ज्वलंतभाई छाया और उसकी टीम भी कल मुझे पूछ रही थी कि बापू, ये विदेश में जो श्रोता है और देश में जो श्रोता है उसमें साम्य क्या है, वैषम्य क्या है? मैंने कहा, मैं तो इतना समझ रहा हूं कि देश में कथाएं सुलभ है और हमारे कितने ही पूज्य वक्तागण बिलग-बिगल शास्त्र की कथा करके लोगों को कोशिश कर रहे हैं सावधान करने की। तो देश में कथा सुलभ है। विदेश में कथा थोड़ी दुर्लभ है। इसीलिए लोगों की रुचि, तीव्रता, जिज्ञासा, बड़ी प्रबल रहती है कि कब कथा हो? कब कथा हो? और देश में तो होता है कि कहीं भी कथा होगी तो सुन लेंगे। यहां साल में कम से कम मैं तो एक बार आ सकता हूं, या तो एक-दो मुल्क में जाता हूं। तो यहां के श्रोताओं में थोड़ी विशेष जिज्ञासा है। ये युवान लोग जो अपना वेकेशन भी, मैं जितना जान रहा हूं कि वो कथा के लिए ही अनामत रख देते हैं कि कथा में वेकेशन का उपयोग करेंगे। तो लोग कुछ न कुछ जाग रहे हैं। और कोई पत्रकार परिषद या तो मीडिया मुझे पूछते हैं तो मुझे यही बात पूछते हैं कि बापू, कथा ने कितनी असर की? मैं तो बोलुंगा ही कथा के बारे में कि कथा सफल हो रही है लेकिन ये तो शायद मेरा अर्थवाद भी हो सकता है। या तो मेरा मिशन सिद्ध करना चाहता हूं क्योंकि जीव हूं। मैंने तो जीव कहना भी बंद कर दिया, मेरी जात को मैं 'गीता' के शब्द में पेश करता हूं, हम जंतु है। इस विराट अस्तित्व में मोरारिबापू कौन है? यदि 'मानस' न होता, यह 'रामायण' मेरे पास न होता तो यह टोरंटो कभी आ सकता? और आया होता तो कोई बुलाते? हकीकत का स्वीकार करना चाहिए। ये तो-

पोथीने परतापे क्यां क्यां पूगिया!

इन्सान को अपनी वास्तविकता को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। युवानों को पूछा जाय; जो नए-नए श्रोता है उसको पूछा जाय; जो पुराने हैं उसको पूछा जाय; जो मुझे तीस-तीस साल से सुनते हैं लेकिन मुझे मिलने की कभी कोशिश नहीं करते, दूर-दूर रोते रहते हैं! बस, कथा में देख लेते हैं! कोई कहे कि बापू को मिले? तो बोले, नहीं, हो गया! कथा में मिलना चाहिए था वो मिल गया सूत्रों में। इन सबके पास से निकलवाना चाहिए कि क्या हो रहा है? तो मुझे लगता है कि शायद तीस-पैंतीस प्रतिशत परिणाम निकलता है। अवश्य निकलता है। कई भाई-बहन कहते हैं कि बापू, इतनी कथाओं से हमने ये छोड़ दिया, ये कर दिया! बहुत अच्छा रिझल्ट आ रहा है।

तो प्रवचन, व्याख्यान, आख्यान और भाषण। ये भाषण अमुक क्षेत्र के लिए हैं। लेना-देना कुछ नहीं!

भाषणबाजी बस! भाषण उसको कहते हैं कि जिसमें लोगों को केवल उत्तेजित किया जाता है। जूठे वचन देकर लोगों की तालियां बटोरी जाती है। अच्छा भी हो सकता है। अपवाद सब में होते हैं। ये हम सिद्धांत के रूप में पेश न कर दे। लेकिन ये कथा है। ये प्रवचन नहीं है। ये आख्यान नहीं है। बीच में मैं आख्यान करूं ये बात ओर है कि मैं नरसिंह मेहता को लाउं। बहुत लोगों की मांग है कि नरसिंह मेहता का आख्यान, मनसुख मास्तर, लेकिन अभी तो हमें कथा ही करनी है!

कथा में पांच बस्तु होती है। पंचतत्त्व जिसमें हो उसको कथा कहते हैं। शब्द तो होते ही है। बिना शब्द कथा कैसे हो? कथा उसको कहते है जिसमें शब्द भी हो और सूर भी हो। और सूर सुरतायुकत हो। तीसरा, प्यारा स्वर हो। चौथा लय हो; एक धारा हो। और पांचवां ताल हो। पांच मिलकर कथा होती है। और ये पांचों परमतत्त्व के अंश है। शब्द ब्रह्म है। सूर है देवता। और सूर में एक बहुत बड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। मैं तो सुन-सुनकर सीखा हूं! सूर में सुरता बड़ी रखनी पड़ती है। जरा-सा भी सूरभेद होता है तो सुरता के कारण पता लग जाता कि थोड़ा स्खलन हो गया! सुरता से सुनो तो सूर समझ में आएगा। सूर है देव। और हमारे यहां मनीषियों ने बहुत प्यारा दर्शन दिया है कि देवता उपर रहते हैं। सूर का निवास बड़ा ऊंचा है। ये ऊंचे घरानेवाले हैं। ये हमारी तरह जमीन के गुरुत्वाकर्षण में दबे हुए नहीं है। और तीसरा, सूर के अनुकूल कोई मीठा स्वर मिल गया। और स्वर को तो लोगों ने ईश्वर कहा ही है। स्वर मानी ईश्वर। तो शब्द ब्रह्म है। सूर देव है। स्वर ईश्वर है। लय शिव है, जो प्रलय के देवता है। कहीं भी जाओ, किधर भी जाओ, कितना ही घूमो लेकिन धीरे-धीरे एक विलय की ओर, एक शून्य में समाहित होने के लिए। आदमी कितना भी गाये धीरे-धीरे सम पर आ जाता है। एक लय होती है; ये शिव है। और ताल; ताल की बड़ी महिमा है। ताल का सीधा-सादा मोरारिबापू को अर्थ करना है, ताल मानी भजन।

तळेटी जतां एवुं लाग्या करे छे,
हजी क्यांक करताल वाग्या करे छे।

- मनोज खंडेरिया

ताल मानी करताल। करताल मानी भजन।

हजो हाथ करताल ने चित्त चानक।
तळेटी समीपे हजो क्यांक थानक।

- राजेन्द्र शुक्ल

ताल की एक बहुत बड़ी महिमा है। ये है भजन। कथा में पांच वस्तु का संमिश्रण होता है। कथा में शब्द है, सूर है, स्वर है, लय है, ताल है। इसीलिए कथा इज़ नोट लेक्चर, कथा इज़ नोट व्याख्यान, कथा इज़ नोट भाषण, कथा इज़ नोट आख्यान। कथा इज़ कथा।

तो 'नायंमात्मा प्रवचनेन लभ्यो।' प्रवचनों से आत्मा नहीं मिलती, भाषणों से नहीं मिलती, आख्यानों से नहीं मिलती, व्याख्यानों से नहीं मिलती। लेकिन कथा से आत्मा मिलती है। कथा बिलग वस्तु है। कथा, कथा है। पूछो भगवान शंकर को कि कथा क्या है? पूछो मेरे याज्ञवल्क्य को कि कथा क्या है?

रामकथा सुंदर कर तारी।
संसय बिहग उड़ावनिहारी।।

पक्षी बैठा है उसको उड़ाने के लिए पत्थर की जरूरत नहीं है। किसी पंखी पर पत्थर मत फेंकना।

ते पंखीनी उपर पथरो फेंकता फेंकी दीधो।

'कलापी' के दिल से एक वेदना निकल पड़ी!

ये एक जख्मी परिंदा है, वार मत करना।
पनाह मांग रहा है, शिकार मत करना।
इरादा सामनेवाला बदल भी सकता है,
मुकाबला ही सही, पहले वार मत करना।

पक्षी पर कंकड फ़ैंकना, हमारी संस्कृति मना करती है। तो पक्षी को उडाना है आपको? तो उसके पास मत जाओ; शाखा मत हिलाओ; पथ्थर मत फेंको; गोली न मारो; तीर-कामठां न लो; धुआं न करो; अग्नि न करो; तुम्हारी जगह से खड़े भी मत हो। शंकर कहते हैं, केवल दो हाथ की ताली लगा लो और पंखी अपनेआप उड़ जायेगा। रामकथा दो हाथ की ताली है। हमारे जीवन में संशयरूपी जितने पक्षी है वो अपनेआप उड़ जायेंगे। लेकिन शंकर भगवान से किसी ने पूछा कि पक्षी ताली से उड़ जाय लेकिन ये तो दूसरे वृक्ष पर बैठ जाय तो? तो तुलसी ने दूसरा निवेदन डाल दिया-

रामकथा कलि बिटप कुठारी।

संशय का, वहम का, भ्रांति का पक्षी उड़कर दूसरी शाखा पर बैठ जाय तो तुलसी दूसरा निवेदन देते हैं कि रामकथा कुल्हाडी है। कलियुग के वृक्ष को काट देगी। फिर कहां बैठेगा पक्षी? करताली भी है और कुल्हाडी भी है। करताली शास्त्र है। कुल्हाडी शस्त्र है। रामकथा जुगपद

काम करती है। पक्षी को, वहम को निकाल दे; और वहम कोई दूसरे तर्क की शाखा पर बैठ न जाय इसीलिए कलियुगरूपी वृक्ष को रामकथा मिटा देती है। तो कथा, कथा है। फिर याज्ञवल्क्यजी से पूछो कि पूरी जिंदगी आपने कथा कही है तो आप कथा के बारे में कुछ प्रकाश पाड़े। तो याज्ञवल्क्य कहते हैं-

महामोहु महिषेसु बिसाला।
रामकथा कालिका कराला।।

'विनयपत्रिका' में लिखा है, रावण मोह है। और मोहरूपी रावण को राम मारते हैं। लेकिन हमारे जीवन में महामोह है। उसको कौन मारेगा? तो तुलसी कहते हैं कि महामोह ये तो महिषासुर राक्षस है और महामोहरूपी महिषासुर को मारने के लिए रामकथा कराल कालिका है, जगदंबा है, चंडी है। तो याज्ञवल्क्यबाबा को किसीने पूछा कि आप कथा को कराल कहते हैं? बोले, नहीं। राम कोमल भी होते हैं, कराल भी होते हैं। ब्रह्म को दोनों लक्षण लागू होते हैं। वैसे कथा कराल भी है, कोमल भी है। रामकथा चंद्र के किरण समान है। चंद्र के समान कोमल कौन? और कालिका के समान कराल कौन? ईश्वर कराल भी है, कोमल भी है। वज्र से भी कठोर है और कुसुम से भी सुकोमल है। चंद्र की किरन है कथा, संतरूपी चकोर उसका पान करते हैं।

तो कथा से आत्मा नहीं मिलती वो सिद्ध नहीं होगा। कथा से परमात्मा की पहचान हो जाती है। और शिवसूत्र में भगवान शंकर कहते हैं, 'कथा जप:।' कथा जप है। मैं कथा कहता हूं तो मैं जप कर रहा हूं। आप कथा सुनते हैं तो आप जप कर रहे हैं। ये केवल प्रवचन नहीं है। और जप से आत्मा मिलती है। आत्मा का स्वरूप है शुद्ध, बुद्ध, वो आत्मा कथा से मिलती है। हरिनाम से मिलती है; जप से मिलती है; और ऐसा 'मानस' में लिखा है।

उलटा नाम जपत जग जाना।
वाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।
जान आदि कबि नाम प्रतापू।
भयउ सुद्ध करि उलटा जापू।।

तो मेरे भाई-बहन, कथा जप है। प्रवचन से नहीं होगा वो कथा से होगा क्योंकि कथा थोड़ी भिन्न हो जाती है। पंच परमतत्त्वों का समूह है प्रभु की कथा।

'नायंमात्मा प्रवचनेन लभ्यो: न मेधया।'

'न मेधया'; दूसरा सूत्र उपनिषद का, बहुत बुद्धि के कारण बुद्धि के तर्कों के कारण आत्मा नहीं मिलती। ये तो बिलकुल ठीक है लेकिन जानकी के चरणों में प्रणाम करके जगदंबा के चरणों का आशीर्वाद लेकर जिसकी बुद्धि शुद्ध हो जाय, तो ऐसी बुद्धि से आत्मा मिल जाती है। राम आत्मा है, राम परमात्मा है। तो जानकी के चरणों को मनाने से बुद्धि शुद्ध होती है। और इस शुद्ध बुद्धि से आत्मा मिल जाती है। 'न बहुनाश्रुतेन'; अब आपकी बारी आयी कि बहुत सुनने से आत्मा नहीं मिलती। तो आपको लगेगा, हम तीस-तीस साल से कथा सुन रहे हैं, आत्मा तो मिलनेवाली नहीं! इतनी साल से हम सुन रहे हैं और सुनने से आत्मा नहीं मिलती, ऐसा निवेदन आ गया! लेकिन कथाश्रवण से आत्मा मिलती है। नानकदेव कहते हैं, 'सुनीये दु:ख पाप का नासु।' श्रीमद् भागवद्जी श्रवण को प्रथम भक्ति कहते हैं। 'मानस'कार कहते हैं, 'जिन्हके श्रवण समुद्र समाना।' तो कथाश्रवण से मिलती है आत्मा, अवश्य मिलती है। कईयों को मिली है। वरना कथाश्रवण की इतनी महिमा न हो पाती। सीधी-सी बात है। वो ही कथा आप बार-बार सुनते हो। क्यों सुनते हो क्योंकि ये प्रमाण है कि प्रसन्नतारूपी परमात्मा मिलता है। अंदर प्रसन्नता आती है, मोह भागता है, नेह जगता है।

तो कथा से केवल खाना नहीं मिलता, कथा से ब्रह्म मिलता है। कथा सुनना व्यर्थ नहीं जाता है। कथा से जीव जागता है। कथा तृप्ति देकर नई प्यास प्रगट करती है। एक बार डकार देती है फिर एक नई तृषा प्रदान करती है कथा। तो 'न ब्रहुनाश्रुतेन।' बहुत सुनने से आत्मा नहीं मिलती, वो शायद प्रवचन आदि क्षेत्रों का सूत्र हो सकता है लेकिन कथाजगत का सूत्र नहीं है। हमने कुछ पाया है तो सुनसुन कर ही पाया है। कथा बिलग बस्तु है। इससे आत्मा मिलती है। गाने से, कथा के द्वारा शुद्ध बुद्धि से आत्मा पहचानी जाती है और कथाश्रवण से आत्मबोध क्रमश: होने लगता है।

तो ऐसी जो राम की कथा है, प्रभु की, हरि की जो कथा है, ये शिव कहते हैं, कथा जप है। कथा सुननेवाला, कथा कहनेवाला जप कर रहा है। और जप भी करना है तो मैं तो मेरा अभिप्राय दूं, मंत्र का जप जरूर करे आप यदि करे; ये मंत्रवाला जप पक्ष तो बहुत अद्भुत है। लेकिन ये कलियुग है, मेरा निजी अभिप्राय तो है, ईश्वर मौका दे तब नामजप करे। प्रभु का नाम। मैं दुनिया को कहकर जाउंगा कि आखिरी सार है मेरी जिंदगी का हरिनाम; बस एक ही। समग्र कथा का सार है रामनाम। अथवा तो जो नाम लो, मुझे कोई आपत्ति नहीं। मंत्र जरूर जपो। मंत्र की महिमा अनूठी है। मंत्र के लिए बहुत बड़े नियम होते हैं। नाम में कोई नियम नहीं। कलियुग का एकमात्र साधन, सरल-सहज राजमार्ग जैसा साधन है रामनाम, प्रभु का नाम। और इतनी सरल साधना से यदि परम का अनुभव होता है तो कठिन साधना में क्यों जाए? मैं आपसे प्रार्थना करूं मेरे युवान भाई-बहन, मेरे युवान फ्लावर्स, साधना को जीवन से बिलग मत करो। जीवन ही साधना है। ये पूरा जीवन साधना है। उसको बिलग क्यों करे? पूरा जीवन साधना है। आप शांति से सोचो। हमारा जीवन हमारे माँ-बाप की सम्यक् कामना की साधना का परिणाम है, ऐसा तुलसीदास लिखते हैं-

जनम हेतु सब कहुं पितु माता।

हमारा जीवन हमारे माता-पिता का सम्यक् काम का फल है। और हम संसारी है। हमारी परंपरा बढ़े तो ये भी हमारी सम्यक् कामना की साधना का ही परिणाम है। उसको अनदेखा न करो। हम अच्छा कर्म करे। हम दसवां हिस्सा निकालें। हम दूसरों को सुख दे, पीडितों को मदद करे समाज में। परमात्मा ने हमको दिया है तो उसमें से कुछ दे। ये हमारी अर्थ साधना का परिणाम है। ये अर्थ साधना है। उसको बिलग क्यों करें? अर्थ साधना है। काम साधना है। धर्म साधना है। प्रभु का चिंतन, स्मरण, थोड़ा जो हम करते हैं, ये धर्म साधना है। और सबके साथ रहकर भी असंग रहना सीख ले ये मोक्षसाधना है। धर्म, अर्थ, मोक्ष, काम ये जो चार है उसको जीवन के साथ संलग्न रखना चाहिए। जीवन बहुत महिमावंत है। ये जीवन लोभधर्मा नहीं है, लाभधर्मा है। जैसे शरीर मरणधर्मा नहीं, जीवनधर्मा है। ऐसे शरीर लोभधर्मा नहीं है। मूल में देखे तो लाभधर्मा है। ये कामधर्मा नहीं है, कृष्णधर्मा है। दर्शन बदलना होगा समय के मुताबिक। तो साधना को बिलग न की जाय। जीवन ही साधना क्यों न बने? लेकिन लोगों को कुछ विशेष करना है! थोड़ा दुनिया से हटकर कुछ करके दिखाना है कि हम ये कर रहे हैं, ये कर रहे हैं! जिससे जीवन की धारा चुक जाते हैं हम!

तो बाप! परमात्मा की कथा की ये जो चर्चा हो रही है। जो 'सुन्दरकांड' पंचदर्शन है इसमें जो कल का रह गया विभीषण की आंख में राम का दर्शन क्या है? विभीषण की आंख में राम का दर्शन चरणों से होता है। वो मनोरथ करते-करते केवल प्रभु के चरणों की ही परिकल्पना करता है। और चरण की कल्पना करना; पूरा सार के रूप में मैं कहूं तो विभीषण का रामदर्शन शरणागति का दर्शन है; एकमात्र दर्शन शरणागति का दर्शन। विभीषण का पूरा रामदर्शन मुझे मेरी समझ के अनुसार कहना है तो वो है केवल, केवल, केवल शरणागति। और शरणागति एक ही बार होती है और एक की ही होती है। अनेकबार नहीं होती और अनेकों की नहीं होती। तो, ये पूरा प्रकरण शरणागति का है और पूर्ण शरणागति जिसकी हो जाती है उसको कुछ करने का शेष नहीं रहता। तो ये विभीषण का रामदर्शन है। विभीषण आता है तो कहता है, आपके बारे में सुनकर महोब्बत की है, आपको देखा नहीं है। आपके बारे में सुना था, आप उदार है, शरणागतवत्सल है। सुनकर आया हूं। विभीषण कहता है, मैं आपका सुजश सुनकर आया हूं। आपके बारे में सुना है कि तुम दूसरों की भीड़ को मिटाते हो। मैं आपकी शरण में हूं।

विभीषण को रखा गया। और रावण को मारने से पहले 'लंकेश' कहकर तिलक कर दिया; बिना मारे उसको लंका का राजा घोषित कर दिया। उसके बाद कल जो हम बातें कर रहे थे कि भगवान तीन दिन अनसन पर रहे हैं समंदर के तट पर। वहां एक शब्द आया है कि 'प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि।' विभीषण ने कहा, प्रभु, आपका कुलगुरु समुद्र है। समुद्र गुरु है। अथवा तो गुरु समुद्र होना चाहिए। किसका समुद्र? पानी का? नहीं। करुणासिंधु, दयासिंधु, सत्यसिंधु, प्रेमसिंधु। गुरु ऐसा होना चाहिए। खुद खारा हो, मानी खुद ऐसे ही जीवन जी ले, लेकिन अपने स्वत: को तपाए, तपाकर भाप बनाए, भाप बनाकर बादल बने। बादल बनकर मीठा पानी की वर्षा करे। जहां-जहां जरूरत हो वहां-वहां वर्षा करे वो गुरु सिंधु है। गुरु समुद्र जैसा होना चाहिए। 'रामचरित मानस' में भगवान शंकर को त्रिभुवन गुरु कहा है। लाओत्सु के दर्शन में मैंने आपके सामने गुरु का पांच रूप ओलरेडी कह दिया है। और भगवान शंकर त्रिभुवन गुरु है और शंकर के पांच मुख है इसीलिए युवान भाई-बहनों को कहना चाहूंगा कि गुरु को परखना हो तो जिसको पांच मुख हो उसको गुरु समझना क्योंकि शंकर को पांच मुख है।

बिकटबेस मुख पंच पुरारी।

जब मैं गुरु की इतनी चर्चा करता हूं; सद्गुरु की इतनी चर्चा करता हूं कि मेरी आत्मा का विषय है ये; 'गुरु', 'सद्गुरु', 'बुद्धपुरुष' तीन शब्द है। बार-बार यूझ करता हूं। और नीतिनभाई वडगामा ने बहुत अच्छा काम किया कि इतनी कथाओं में से गुरु, सद्गुरु और बुद्धपुरुष पर जो-जो गुरुकृपा से बातें हुई हो अथवा तो शास्त्रकृपा से अथवा तो संतों के पास बैठकर कुछ जाना हो, सुना हो, इसका जो प्रसाद इकठ्ठा हो उसको चुनचुनकर एक छोटी-सी पुस्तिका संपादित की है 'गुरुदर्शन।' शायद हमें और आपको गुरु की परख हो जाय।

तो गुरु पंचमुखी होना चाहिए। पहला गुरु, गुरुमुख होना चाहिए। मुख तो एक ही हो लेकिन शंकर के साथ तुलना कीजिए।

तुम्ह त्रिभुवन गुरु बेद बखाना।

मुझे और आपको किसी बुद्धपुरुष, किसी सद्गुरु, किसी गुरु को पहचानना है तो पहचानने की कई विधा है। इनमें से एक विधा ये भी है। गुरु गुरुमुख होना चाहिए। शास्त्रों में लिखा है, गुरु कुमुख नहीं होना चाहिए, कुनख नहीं होना चाहिए। गुरुओं की चर्चा में शास्त्रकारों ने कहा कि गुरु कुमुख नहीं होना चाहिए, गुरु के चेहरे की ये बात नहीं है। अष्टावक्र कहां खूबसूरत थे? मीन्स गुरु के मुख से जो निकले वो गुरुबानी होनी चाहिए। कुमुख नहीं, गुरु कुनख भी नहीं होना चाहिए। कहते हैं कि गुरु के नख कुनख नहीं होना चाहिए। इसीलिए तुलसी कहते हैं-

श्री गुर पद नख मनि गन जोती।
सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।।

नख ऐसा है। गुरु कुरद नहीं होना चाहिए। रद मानी दांत। गुरु के पास केवल दंतकथा नहीं होनी चाहिए, संतकथा होनी चाहिए। रद किया जाय ऐसा गुरु नहीं। कभी रद न किया जाय ऐसा नारद। जिसकी बानी को कोई रद न कर सके वो नारद। ऐसे हमारे तुलसीदास बापू कांतरोलीवाले की व्याख्या है। उसको गुरु कहा जाय। कुमुख नहीं। एक शर्त गुरु की। चेहरे के शेईप की बात नहीं है, सत्त्व की बात है। कागभुशुंडि का स्वरूप कैसा? कौए का है। लेकिन कागभुशुंडि जैसा बुद्धपुरुष कौन? गुरु कौन? सद्गुरु कौन? तो गुरु गुरुमुख होना चाहिए। दूसरा गुरु गोमुख होना चाहिए। गोमुख मानी गाय जैसा रंक होना चाहिए। और गोमुख गंगा का प्रगटीकरण का केन्द्र भी है। ऐसा गोमुख गुरु होना चाहिए कि जिसके मुख से गंगा ही निकलती हो, गंदगी कभी निकलती ही न हो। ये गोमुख।

तीसरा, गुरु अंतर्मुख हो। उसकी अंतर्मुखता कोई छिन नहीं सकता। हमारे साथ बात करे, बोले-चाले, सब कुछ करे लेकिन उसकी अंतर्मुखता अखंड रह जाय। ऐसे महापुरुषों की बात है जो बिलकुल अंतर्मुख हो। चौथा, गुरु हमारा सन्मुख हो, विमुख न हो। और गुरु उसको कहा ही न जाय जो विमुख हो। सामने हो। पांचवां, वेदमुख हो। वेदमुख मानी दुनिया का कोई भी शास्त्र। वेद मानी हमारा तो गौरव है। वेद के लिए तो क्या कहे यार! इससे पहले कोई था ही नहीं। ये तो कोई न माने तो हम क्या करे? जैसे लोकमान्य तिलक वेद की गणना करे तो वो कहेंगे कि इतने हजार वर्ष पहले वेद आये। वेद को भले अपौरुषेय कहते हैं लेकिन तिलक की मान्यता, विनोबा की मान्यता लो कि कोई छ हजार कोई सात हजार, कोई ग्यारह हजार वर्ष कहे। पुरातन में पुरातन। और ऐसा पुरातन कि जिसे सनातन ही कहना चाहिए। इसके अलावा कोई शब्द नहीं! सभी दर्शन बाद में आये हैं। गुरु होना चाहिए वेदमुख। तो मेरी समझ में गुरु का कुछ ऐसा दर्शन भी है और युवान भाई-बहन, जहां ऐसा आपको लगे तो उसके मार्गदर्शन में जीना। इतना जहां देखा जाय, उससे हम मार्गदर्शन प्राप्त करके चलेंगे तो मुझे लगता है कि विकास भी होगा और विश्राम भी होगा। कोई चिंता नहीं होती।

'समुद्र आपके कुल का कुलगुरु है। महाराज, आप तीन दिन अनसन करे।' और प्रभु ने किया और समंदर मोतियों का थाल लेकर भगवान की शरण में आता है और परमात्मा के पास सेतुबंध का प्रस्ताव रखता है। और प्रभु ने ये सेतुबंध का प्रस्ताव कुबूल कर लिया कि हम जोड़ेंगे। भगवान को ये मत अच्छा लगा। कलियुग के मेल को हरनेवाला ये चरित्र है। और दुनिया में तीन प्रकार के जीव है-विषयी, साधक, सिद्ध। भगवान की कथा, ये 'मानस-सुन्दरकांड' विषयी जीव को क्या देगा? साधक जीव को क्या देगा और सिद्ध जीव को क्या देगा? हम जैसे विषयी। हम सब विषयी लोगों में है, संसारी लोग है। तो 'मानस-सुन्दरकांड' हमें क्या देगा? 'सुख भवन...' विषयी को सुख चाहिए। सीधी बात है। इसमें कोई पाप नहीं है। मांग कोई गलत नहीं है। हमें सुख चाहिए। दंभ न करे। तुलसी स्वयं कहते हैं, स्वान्त: सुख के लिए मैं रामकथा गाता हूं। सुख चाहिए तो विषयी लोगों को सुख मिलेगा 'मानस-सुन्दरकांड' से। 'संसय समन ...' साधक को क्या चाहिए? साधक को अपने वहम, अपनी भ्रांति, अपनी साधना की समस्याओं से मुक्ति चाहिए। मेरे संशय का निराकरण हो जाय। 'बिषाद रघुपति गुन गना।' उसको विषाद से मुक्ति चाहिए। साधक को संशय की मुक्ति और विषयी को दु:ख से निवृत्ति देती है ये 'मानस-सुन्दरकांड' की कथा।

सुख भवन संसय समन दवन विषाद रघुपति गुन गना।।

अभी शर्त लगा रहे हैं-

तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना।

तमाम आशा छोड़कर; हम जीव है। लेकिन एक बार छोड़ दे तो पूरी करेंगे। तो पूरी करने की शर्त, 'तजि सकल आस भरोस।' आशा छोड़ दे, भरोसा रख। तू मांगेगा, आशा करेगा तो तेरे हाथ की मर्यादा है, तू कितना ले पायेगा? तुलसीदासजी कहे, आशा नाम की एक बहुत बड़ी देवी है। उसको भजो तो मुश्किलियां, उसको छोड़ो तो सुख। आशा छोड़ो। हम थोड़े खाली हो जायेंगे तो देनेवाला भरेगा। जितने हम खाली होंगे और भरोसा रखेंगे कि कोई भर देगा। 'सुन्दरकांड' का पाठ करो तो कोई आशा मत रखना प्लीज़। हमारा सब भजन किसी न किसी फल के लिए है, ऐसा हो जाय, ऐसा हो जाय! भरोसा रखो, भरोसा ही भजन है।

विभीषण की आंख में राम का दर्शन क्या है? विभीषण की आंख में राम का दर्शन चरणों से होता है। वो मनोरथ करते-करते केवल प्रभु के चरणों की ही परिकल्पना करता है। और चरण की कल्पना करना; पूरा सार के रूप में मैं कहूं तो विभीषण का रामदर्शन शरणागति का दर्शन है; एकमात्र दर्शन शरणागति का दर्शन। विभीषण का पूरा रामदर्शन मुझे मेरी समझ के अनुसार कहना है तो वो है केवल, केवल, केवल शरणागति। और शरणागति एक ही बार होती है और एक की ही होती है। अनेकबार नहीं होती और अनेकों की नहीं होती। और पूर्ण शरणागति जिसकी हो जाती है उसको कुछ करने का शेष नहीं रहता।

मानस-सुन्दरकांड
॥ ९ ॥

सनातन धर्म-वैदिक धर्म ये वटवृक्ष है

आज फिर मुझे एक मंत्र से शुरूआत करनी है और वो मंत्र है ऋग्वेद का जो हमारा बहुत आदि वेद है। बड़ा प्यारा मंत्र है। 'मानस-सुन्दरकांड' के उपसंहार की ओर हम है। आज शायद ये मंत्र हमें विशेष रूप से मार्गदर्शन कर सकता है। मैं लाया हूं। मैं आपके सामने पढूं। आप भी कोशिश करियेगा बोलने की।

तपो ष्वग्ने अन्तराँ अमित्रान् तपा शंसमररुषः परस्य।
तपो वसो चिकितानो अचित्तान्वि ते तिष्ठन्तामजरा अयासः।।
- भगवान ऋग्वेद

इसका अर्थ मैंने दो-तीन भास्यों में पढ़ा क्योंकि वेद के मंत्रों का अर्थ निकालना बड़ा मुश्किल है और हम जैसे ग्राम्यगिरावालों को तो बहुत मुश्किल है। मैंने कई बार चारों वेदों के विद्वानों को भी पूछा है कि किस-किस प्रकार से उसका पाठ किया जाय? वो कहते हैं, हम वेद बोलते हैं, लेकिन अर्थ नहीं बताते! बड़ा मुश्किल है, क्लिष्ट है! ये सायनाचार्य आदि-आदि मनीषियों ने जो वेदों का भाष्य किया; कुछ विनोबाजी ने भी किया उनमें उसका भावार्थ, सारांश बताया गया। इस वेदमंत्र का अर्थ है, हे साधक, हे मनुष्य, तेरे दो प्रकार के दुश्मन हैं। कुछ दुश्मन तेरे अंतरंग दुश्मन है। कुछ तेरे बहिरंग दुश्मन है।

युवान भाई-बहन, हमारे प्रेक्टिकल जीवन के लिए उपयोगी है इसलिए वेदकाल की हम यात्रा कर रहे हैं। हमारे आंतरिक तीन दुश्मन है उसके नाम है प्रमाद-आलस; अक्रियता-निरुत्साह और विवेकहीनता। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर ये षड्रिपु हमारे यहां है। और मेरी जो स्वाभाविक समझ है उसके मुताबिक काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ये सब कम हो जाये तो अच्छी बात है लेकिन उसकी चिंता बहुत नहीं करनी चाहिए। ज्यादातर बल दिया है काम को मारो, क्रोध को मारो। और क्रोध को मारने के लिए पहले आपको क्रोधी बनना पड़ेगा। काम की जितनी चर्चा करोगे काम के विषय में आप ओर गहरे जाओगे। लोभ रूपियों का छूटेगा तो कई प्रकार के लोभ आपको पकड़ लेगा। इसीलिए वेद बहुत निकट पड़ते हैं और कहते हैं, प्रमाद ही तेरा दुश्मन है; निरुत्साह तेरा दुश्मन है; विवेकशून्यता तेरा दुश्मन है। उसका मतलब ये है कि निरुत्साह अच्छी स्थिति नहीं है लेकिन कोई भी स्थिति में उत्साह से भर जाना वो अमंगल नहीं है, सुमंगल है -

सकल सुमंगल दायक रघुनायक।

मुझे उसकी चर्चा करनी है जो 'सुन्दरकांड' में है, जो वेद से जोड़ रहा हूं। अमंगल क्या है बाप! हम उत्साह गवां दे, डिप्रेस हो जाय। हम क्या करे! अब हमसे कुछ नहीं होगा! अब हम कोई काम के नहीं रहे! ये निरुत्साह है। वो अमंगल है। बाहरगांव जाओ तो ऐसे निरुत्साही का सगुन ना ले। निरुत्साह अमंगल है, लेकिन निरुत्साह की जगह उत्साह से भर जाओ। तो उत्साह है सुमंगल, निरुत्साह है अमंगल। जिसस कहते हैं, रोज नया कपड़ा पहनो। रोज नये कपड़े पहनने का मतलब तुम्हारा उत्साह रोज नया नित-नूतन हो। आदमी रोज नया होना चाहिए। हम वासी है। जिसस का एक वाक्य मुझे बहुत प्रिय है। जिसस क्राईस्ट, भगवान ईसु वो कहते हैं, आदमी केवल रोटी से नहीं जीएगा, मेरे पवित्र वचनों से जीएगा। हम केवल रोटी से नहीं जी रहे हैं, संतों के वचनों से जी रहे हैं। संतों का वचन हमें उत्साह से भर देता है। कोई साधु का संग करो। और किसी साधु से आपका संग हो अथवा तो उसके मार्गदर्शन में हम जीते हैं और उससे बात करे, वो हमारे कंधे पर हाथ रखकर दो शब्द कह दे, कोई चिंता मत करो। साधु तुम्हें लोटरी नहीं लगा देगा लेकिन बेटरी चार्ज कर देगा; उत्साह से भर देगा। निरुत्साही जीवन अमंगल है, उत्साही जीवन सुमंगल है। प्रमादी जीवन अमंगल है। आदमी कर्मयोगी होना चाहिए। कबीरसाहब कहते हैं-

कह कबीर कछु उद्यम कीजिए।

'शिवसूत्र' में लिखा है, 'उद्यमो भैरवः।' शंकर के पास जो भैरव रहता है वो आदमी का पुरुषार्थ, आदमी का उद्यम यही भैरव। प्रमादी जीवन ठीक नहीं, ये अमंगल है। काम करना चाहिए। लोग कहते हैं, साधु-संतों को तो कोई काम करना नहीं, घूमना हवाई-जहाज में इधर-उधर! नहीं, ये आपकी धारणा ठीक नहीं है। रमण महर्षि को किसीने कहा कि आप अरुणाचल की गुफा में अकेले बैठे रहते हैं! आपको नेत्रयज्ञ करवाने चाहिए। आपको समाज-सेवा करनी चाहिए। रमण महर्षि ने कहा, आप जाहेर में कर रहे हैं, मैं एक कोने में बैठकर कर रहा हूं वो लोगों की सेवा ही कर रहा हूं। सबकी अपनी रीत होती है। एक साधु चुपचाप हरि स्मरण करे इससे जगत को बहुत फायदा होता है।

आदमी को कर्म करते रहना चाहिए। ये पूरी दुनिया कर्म में है। ऋग्वेद में भी ज्यादा से ज्यादा मंत्र कर्मकांड के है। तो प्रमाद है अमंगल। कार्यशीलता है सुमंगल। और तीसरी वस्तु, विवेकशून्यता अमंगल है। और विवेक की संपन्नता सुमंगल है। हे साधक! तेरे तीन प्रकार के जो आंतरिक दुश्मन है इसको तू मार नहीं, ऐसा तू कुछ कर कि उसको लगे कि अब उसके अंदर मैं रह नहीं सकता। तो ये जो अंदर के दुश्मन है ये तीन प्रकार के अमंगल है। उसके उल्टे सब सुमंगल है।

हे साधु! हे मनुष! हे साधक! अंदर के तेरे तेज को तू बढ़ावा दे। 'अंतराँ अमित्रान्', तेरे अंतःकरण के अमित्र-दुश्मन है जो तीन उसको तू तप्त कर, उसको तू हिला दे, वो भाग जाये। और तेरे अंदर के तप से उसको तू तप्त कर दे, उस तेज को तू इतना बढ़ा कि उसकी किरणें पूरे संसार में फैल जाये और पूरे संसार को उसका उजाला मिले; ऐसा तू सुमंगल जीवन जीने का शिवसंकल्प कर। तो ये वचन हमें सुमंगल की ओर प्रेरित करता है। अमंगल हटे। हटाने न पड़े; हट जाय। हम कुछ अंदर से ऐसा अपनेआप को करे। किसीसे दुश्मनी न हो, लेकिन हम हमारा तेज ऐसा बढ़ाये कि हमारे अंतःकरण में सुमंगलता का डेरा हो और ये सुमंगलता उसको हट जाने के लिए बाध्य कर दे। तो बाप! हम और आप ऋग्वेद के अनुसार अपने जीवन में विवेक स्थापित करे, उत्साह स्थापित करे और प्रमाद की जगह पर हम कार्यशील हो अपने-अपने क्षेत्र में; हम काम करें। 'भगवद्गीता' का सूत्र है, एक क्षण भी कोई कर्म बिना नहीं रह सकता।

तो 'मानस-सुन्दरकांड' का दर्शन हम करते हैं तब उसका जो उपसंहार है, आखिरी जो है इससे पहले छंद है। आइए, उस छंद गाकर आखिरी दोहे पर हम आगे बढ़ें।

निज भवन गवनेउ सिंधु श्री रघुपतिहि यह मत भायऊ।
यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ।
सुख भवन संसय समन दवन विषाद रघुपति गुन गना।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना।।
सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान।।

गोस्वामीजी कहते हैं, भगवान का ये 'सुन्दरकांड', उसमें गाई गई भगवान राम के गुण कथा वो क्या करती है? 'सकल सुमंगल दायक।' ये तमाम सुमंगल की दाता है। 'रघुनायक गुनगान।' और रघुनायक के गुनगान समस्त सुमंगल प्रदान करती है। अमंगल चले जाते हैं। फिर लिखा है कि जो श्रद्धा के साथ श्रवण करेंगे, सादर, आदर के साथ; आदर का मतलब यहां श्रद्धा, गुणातीत श्रद्धा; 'सादर सुनहि

तरहि भव।' ये भवसागर तैर जायेंगे। भवसागर तैरने के लिए कोई साधन चाहिए। या तो तैरना आता हो या तो नौका चाहिए। तुलसी कहते हैं, 'सिंधु बिना जलजान।' बिना जहाज ये भवसागर को तैर जायेंगे जो आदर के साथ सकल सुमंगल देनेवाले रघुनायक की ये गुणकथा सुनेंगे।

तो ऐसी कौन-कौन चीज सुमंगल है, जो 'सुन्दरकांड' देती है? 'लंकाकांड' की शरूआत में आनेवाला प्रसंग सेतुबंध। पहले वेद से शुरू किया, अब मैं जा रहा हूं इस्लाम के सूफीवाद की ओर। मैं मेरे भाई-बहनों को जाते-जाते कहकर जाना चाहता हूं कि छोटे-छोटे ग्रूपों के द्वारा विदेश में रहकर टूट मत जाना। एक-दूसरे से जुड़े रहना। तुम्हारे नगर में ईक्यावन मंदिर है ऐसा मैंने सुना है। एक सौ आठ करो, मुझे कोई आपत्ति नहीं लेकिन तुम्हारी दीवारों में दरवाजे रखना वरना टूट जाओगे! मंदिर रहे, संप्रदाय रहे, धर्म का ग्रूप रहे। सब अपनी-अपनी मौज में अपनी बंदगी की साधना करे। मंदिर रहे, मस्जिद रहे, गुरुद्वार रहे, चर्च रहे। सब रहे लेकिन मिले रहना। एक आसमां के नीचे रहना। और आसमां है सनातन धर्म। मेरे कहने से आसमां नहीं हो जाएगा। और आसमां हुआ नहीं जाता। आसमां दिखाया जाता है। मैं चाहूं कि मैं आसमां हो जाउं, नहीं हो सकता। कोई बुद्धपुरुष हमें आसमां दिखा सकता है, क्योंकि हम कमरे में बंद है। हम दीवारों में आबद्ध है। कल बापा भी कहते थे कि मात्र हिंदु धर्म ऐसा है जिसने बहुत विशालता से बात की बाकी सबने अपने डोर सेट कर दिए हैं! बंद कर दिए हैं! आप सबकी शुभकामना से मेरा प्रयास यही है कि दरवाजे खुले रहे। जरूर सब अपना-अपना संप्रदाय, धर्म, पंथ एन्जोय करो; अपने इष्ट की साधना करो; अपने इष्ट का ग्रंथ पढ़ो जरूर लेकिन भेद न करो।

तो मैं आपसे प्रार्थना कर रहा था मेरे देशवासी भाई-बहन, अपने-अपने संप्रदाय-पंथ में मौज करो। लेकिन दरवाजे रखना, बंधियार मत बनो। एक-दूसरे को काटना मत। सनातन धर्म, वैदिक धर्म, वैदिक परंपरा ये वटवृक्ष है। उसकी छाया में सब मौज करो। वरना हम धर्म के नाम से विभक्त हो जायेंगे, टूट जायेंगे। सब अपने-अपने स्थान में अपना स्थान बनाकर अपनी-अपनी साधना, जो-जो करते हो मुबारक, लेकिन विशालता मत छोड़ियेगा। और मैं यहां सबको मिलाने की कोशिश मैं शुरू से हूं। मेरे लिए अस्पृश्य कोई नहीं। मैं जिसस को इतने आदर से पुकारता हूं और मोहम्मद को इतनी महोब्बत से पुकारता हूं। मेरे लिए यहां कोई अस्पृश्य नहीं। ये सब मेरे पास स्वीकार्य है। इसलिए वेद और सूफी। जलालुद्दीन रूमीसाहब ने कुछ मंगल बातें कही अपनी जुबां से। उसका हिन्दी रूपांतरण हो रहा है। संदेश रूमी का है। इसमें सुमंगल बात कौन है, उसकी चर्चा है।

वाद्य हेम सुरभि पय ।

'वाद्य'; इस्लाम धर्म में संगीत की आलोचना होती है और कुछ ऐसा भी है जो संगीत को तोड़ने की कोशिश में है! और अभी-अभी कुछ दिन पहले खबर आई; सूफ़ियाना गायक जो मजार पर-दरगाह पर जो कि इतना फेमस गायक बाज़ार में शूट कर दिया क्योंकि संगीत की मना है! किसी की बोडी को हम खतम कर सकते हैं, लेकिन सुर को हम खतम नहीं कर सकते। सुर अमर है, सुर गुंजता रहेगा और अज़ान जब गायन में बोली जाती है तब तो भैरवी के सुर लग जाते हैं!

अल्लाहु अकबर बिस्मिलां ही रहमान ...

व्यासपीठ है ये। मुझे खबर है कि प्रतिभाव कैसे आयेंगे? आये-आये! लेकिन मेरे वेद ने हमको सिखाया है। हम वेद के बच्चे हैं। हमने उपनिषद की कामधेनु का दूध पीया है, 'संगच्छध्वम्, संवदध्वम्।' साथ चलो, साथ गाओ। और वेद का मंच हो जाये ना तब कोई भी नाच सकता है। कोई अज़ान बोल ले; कोई गुरुग्रंथसाहब का पद बोल ले; कोई-

नमो अरिहंताणं।
बुद्धं शरणं गच्छामि।
धम्मं शरणं गच्छामि।

सबमें वो दिखता है अब हम जाये कहां! हमारी मुश्किल है, 'तुझमें रब दिखता है, यारा मैं क्या करूं!' हरेक में रब दिखता है। हम जाये तो जाये कहां? हमारी मजबूरी है।

अल्लाहु, अल्लाहु, अल्लाहु...

अब मैं व्यासपीठ से 'अल्लाह' बोल रहा हूं तो एक बार तो मुझे कोई जवाब दे अपने मंच से कि-

श्री राम जय राम जय जय राम।

गाउं और मुझे जवाब न मिले तो मुझे कोई चिंता नहीं, क्योंकि हम अपना काम कर रहे हैं। मेसेज पहुंचेगा। औरों के पास न जाये तो अल्लाह के पास तो मेसेज जाएगा।

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।

●

अल्लाहु, अल्लाहु, अल्लाहु।
सेतुबंध बंधाई रह्यो छे बाप!

लज्जते गम बढ़ा दीजिए।
आप जरा मुस्कुरा दीजिए।

ओ धर्मगुरुओ! आप जरा मुस्कुरायेंगे तो आपके पीछे चलनेवाले के कंवल खिलने लगेंगे। क्यों मार-काप? क्यों कट्टरता? क्यों हिंसा? क्यों आतंक? क्या है? सुर को नहीं काट पाओगे।

वाद्य हेम सुरभि पय।

जलालुदीन रूमी, ये रुबाई उसका सूचक सुमंगल तरजुमा है। जलालुदीन कहते हैं, कोई भी वाद्य मंगल है। साहब! सुबह में तुम्हारे घर में कोई वाद्य हो तो उसको छूकर निकलना सुमंगल सगुन है। सोना, सुवर्ण, कुंदन सुमंगल है। घर में सोना हो थोड़ा उसको छूना सुमंगल है। किन्तु ना हो तो कोई चिंता नहीं। गाय का दूध सुमंगल है। रूमी मुझे 'रामायण' के बहुत निकट पड़ रहा है इसलिए मैं कह रहा हूं। उसने तो अपने धर्म में जिस पौधे की महिमा है वो लिखा। रूपांतरकार ने तुलसी किया, क्योंकि विस्तार करना है, दरवाजे खोलने हैं। उनके लिए झमझम गंगा है, हमारे लिए गंगा झमझम है। क्या फ़र्क पड़ता है?

भावनगर के प्रोफेसर महेबूब देसाई हज पढ़ने गये और वो हज पढ़कर आये। बोले, बापू, आपके लिए खजूर और झमझम का जल लेकर आया हूं। मैंने कहा, स्वागत, मुझे दो। आप खाना खाकर जायेंगे? बोले, हां। बोले, बापू, मुझे संकोच होता था कि आपको झमझम दे कि नहीं? मैंने कहा, संकोच क्यों? मेरे दरवाजे खुले हैं। क्यों ऐसा संकोच करे? लेकिन मैंने सवाल किया, आप भोजन करके जायेंगे ना? बोले, हां बापू। तो भोजन करो, मैं एक काम करता हूं। चित्रकूट के बाहर एक भरवाड का घर है। वो बहन को मैंने बुलायी और कहा कि ये झमझम और मेरा गंगाजल इसकी बाजरी की रोटी बनाकर आधे घंटे में तू मुझे दे जा। महेबूबसाहब खा ले फिर मेरे पास कुर्सी में बैठे और मैं झमझम और गंगाजल की रोटी खाउं। ये अपनी बात मैं इसीलिए कह रहा हूं कि मेसेज जाये, बाकी मेरी बातों से क्या? जिस धर्म में जो पौधा पूजनीय हो वो पौधा; कोई परहेज नहीं, 'क्रिसमस ट्री' क्या फ़र्क पड़ता है? जो जिसको रास आये 'नव तुलसी सद्ग्रंथ' कोई भी सद्ग्रंथ; घर में वेद हो, 'भागवत' हो, 'बाईबल' हो, पवित्र 'कुरान' हो, 'धम्मपद' हो, 'आगम' हो, 'मानस' हो, 'भगवद्गीता' हो, सुगंमल की निशानी है। सुमंगल का संकेत है, विनय-विवेक, मातृआशिष। एक विनय और विवेक सुमंगल है और माँ का आशीर्वाद सुगमंगल है। 'रामनाम सतसंग।' वहां तो दूसरा है लेकिन भाष्यकार ने हरिनाम में जोड़ दिया, प्रभु का नाम, खुदा का नाम। इतनी वस्तु सुमंगल है। सोना सुमंगल, वाद्य सुमंगल, सुर सुमंगल, गाय सुमंगल, तुलसी सुमंगल, सद्ग्रंथ सुमंगल, विनय-विवेकयुक्त वाणी सुमंगल, माँ का आशीर्वाद सुमंगल, राम का नाम और सत्संग सुमंगल।

तो ये जो संकेत है 'सुन्दरकांड' में लंका का जो दर्शन है। उसमें वहां वाद्य है, वहां संगीत है। सोना का तो सवाल ही क्या? लंका सोने की है, 'कनककोट' अंदर बैठी जानकी स्वयं सोने की और मेरा हनुमान गया वो भी सोने का। 'कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं।' धेनु का उल्लेख है, लंका में गाय का उल्लेख है। यद्यपि वध करते थे। 'नव तुलसी' अब कहां जलालुद्दीन की रुबाई और कहां 'सुन्दरकांड' का-

नव तुलसी वृंद तहँ देखी हरष कपिराय।

'नव तुलसी' शब्द तुलसीदास ने लिखा है। 'सद्ग्रंथ', ये सद्ग्रंथ है। वेद का सार उपनिषद; उपनिषद का सार है 'गीता'; 'भगवद्गीता' में जितने योग वो सब 'रामचरित मानस' में प्रयोग और 'रामचरित मानस' का सार 'सुन्दरकांड', 'सुन्दरकांड' का संक्षिप्त सार 'हनुमानचालीसा।' 'हनुमानचालीसा' का सार 'रामनाम।' विनय, विवेक; आदमी का विनय। तुम्हारे घर में कोई विनयी व्यक्ति हो तो सुबह-सुबह बाहर निकलो तो कोई विनयी लड़का हो, लड़की हो तो उसको देखकर जाना, उसके सिर पर हाथ रखकर जाना सगुन हो जाएगा। सुमंगल है विनय-विवेकयुक्त वाणी। 'वन्दे वाणी विनायकौ।' और मातृआशिष।

आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना।
होहु तात बल सील निधाना।।

माँ ने आशीर्वाद दिया। फिर रामनाम।

तब देखी मुद्रिका मनोहर।
राम नाम अंकित अति सुंदर।।

'दोहावली रामायण' में भी कुछ सुमंगल बातें लिखी है-

सुधा साधु सुरतरु सुमन सुफल सुहावनि बात।
तुलसी सीतापति भगति सगुन सुमंगल साता।।

तुलसीदासजी कहते हैं, सात वस्तु सुमंगल है संसार में। ये तुलसी अभिप्राय है। साधु; कभी भी, कहीं भी, कैसे भी कोई साधु मिल जाये तो इसके समान कोई सुमंगल नहीं। साधु की अवज्ञा का परिणाम जरा कठोर दिखाया कि हाथ में कल्याण हो और अखिल की हानि हो जाएगी। सच्चे साधु पूजे नहीं गए। किसीको गोली लगी! किसीको वधस्तंभ पर लटका दिया! किसीको जहर दिया! सुकरात तक जहर! मीरां तक जहर! शंकर साधु है 'रामायण' में। जलन मातरी का एक शे'र है-

हवे मित्रो बधा भेगा मळी वहेंचीने पी नाखो।
जगतना झेर पीवाने हवे शंकर नहीं आवे।

'साधु' मुझे बहुत प्यारा शब्द है। 'साधु' बहुत पवित्र शब्द है। कोई ऐसा साधु मिले। दूसरा शब्द 'सुधा'; सुधा यानी अमृत। अमृत सुमंगल है। लेकिन कोई बुद्धपुरुष की अमृत समान वाणी सुनने को मिले ये ही अमृत है-

हरषि सुधा सम गिरा उचारी।

साधु सुधावचन बोलता है, बुधा वचन नहीं बोलता। 'सुरतरु'; कोई बुद्धपुरुष की छाया में रहना इससे बड़ा कोई कल्पतरु विश्व में नहीं है। माहात्म्यकार कहते हैं, 'रामायण' कल्पतरु की छाया है। उसके नीचे जो बैठ गया उसका मनवांछित पूरा होता है, उसका मैं प्रमाण हूं। मैं 'रामायण' के सुरतरु के नीचे बैठा हूं साहब! मन में विचार आया हीं नहीं और कोई पूरा करने के लिए दौड़ा हीं नहीं! ये कल्पतरु है। सुमंगल वस्तु है कल्पतरु। और 'सुमन'; सुमन यानी फूल। आध्यात्मिक अर्थ तो करूंगा लेकिन मूल अर्थ की महिमा कम न होनी चाहिए। सुमन यानी सुंदर मन; ये तो है। सुंदर मन ये मंगल है लेकिन फूल स्वयं सुमंगल है। एक छोटा-सा फूल सुमंगल है। 'सुफल सोहावनि बात।' 'सुफल', अच्छा फल कोई भी अच्छा फल अथवा तो हमारे कर्मों का जो शुभ फल हो वो सुमंगल है। 'तुलसी सीतापति भगति।' और तुलसी कहे, भगवान राम की भक्ति। 'सगुन सुमंगल सात।' इसीलिए तुलसीदासजी 'सुन्दरकांड' के समापन में कहते हैं, 'सकल सुमंगल दायक।' सब सुमंगल का दाता है।

अब मुझे भी कुछ सुमंगल कहना है, मुझे कुछ एड करना है। ओर कई चीजें सुमंगल है। आदमी की मुस्कुराहट सुमंगल है। आप किसीके सामने देखकर मुस्कुराहट करो उसके लिए सुमंगल सगुन है।

मंगल करनी कलिमल हरनी।
तुलसी कथा रघुनाथ की।

प्रभु की कथा सुमंगल है, मंगल देनेवाली है। तीसरा सुमंगल बहुत प्यारा है वो घडी, वो अवसर सुमंगल माना गया कि आकाश में बादल बरसते हो धीरे-धीरे और साथ में धूप भी हो, जिसको दिव्य स्नान शास्त्र कहते हैं। धूप भी हो और बुदं-बुंद भी हो उसको सुमंगल कहा। मैं तो मानता हूं कि ऐसा कभी मौका मिले तो तुरंत नहा लेना। ऐसा मौका आया है तो मैं दो-तीन बार नहाया हूं। ऐसा दिव्य वरसाद सुमंगल है। आप कहीं जा रहे हैं और दो हिरन-दो मृग तुम्हारे सामने देखे और तुम्हारे से भयभीत होकर नहीं लेकिन प्रसन्न होकर छलांग लगाकर जाये तो समझना सुमंगल है क्योंकि तुम्हें देखकर उसको प्रसन्नता हुई। उसको मैं सुमंगल समझता हूं। अब तो ये दृश्य नहीं है लेकिन गांव में कोई साधु या ब्राह्मण सुबह में लोट मांगने निकले हो और वो सुबह में मिल जाये तो सुमंगल है। हमारे गांव में सब ये करते थे। अब तो कोई नहीं करता। स्वाभाविक जरूरत भी नहीं। अब तो जितना लोट खाया है उनसे अनेकगणा खिलाया है।

तो ये 'मानस-सुन्दरकांड' जिसकी कुछ सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा संवादी सुर में इस कथा में हुई। आगे बढें। 'लंकाकांड' का आरंभ होता है। समुद्र ने प्रभु को प्रस्ताव दिया है कि सेतु बनाया जाए। प्रभु ने ये प्रस्ताव कुबूल कर दिया क्योंकि प्रभु का स्वभाव है सेतु करना। सुंदर सेतुबंध निर्मित हो गया। और फिर भगवान कहते हैं, ये उत्तम धरणी है। मेरी इच्छा है, यहां भगवान रामेश्वर की, शिव की स्थापना की जाये। ऋषि-मुनिओं को बुलाये गए। वेदमंत्रों के द्वारा भगवान शिव की स्थापना रामेश्वर में हुई। शिव की स्थापना हुई। राम का ईश्वर ही सेतुबंध है यानी सेतुबंध की विचारधारा ही इष्ट, प्रभु को स्वीकार्य है।

पूरी सेना लंका में पहुंचती है। सायंकाल हुआ। रावण अपने अखाडे में आया है मनोरंजन प्राप्त करने। सिर पर काल है फिर भी आदमी को कोई डर नहीं! सुबह हुई। भगवान की सेना में प्रभु ने अंगद को कहा कि राजदूत के रूप में आप लंका जाओ और रावण के सामने संधि का प्रस्ताव रखो। यदि रावण समझ जाये तो जैसे स्थूल सेतुबंध हुआ है वैसे अयोध्या और लंका के बीच में भी सेतुबंध हो जाये। हमें किसीको मारना नहीं है। अंगद राजदूत बनकर गये। कोई भी जवाब नहीं दे पाया तो रावण राम की निंदा करने लगा। जब निंदा की तो भक्त से सहा नहीं गया और अंगद ने जोर से अपनी भुजा जमीन पे पछाडी! रावण के दस मुकुट नीचे गिर गये! दुनिया के सत्ताधीशों को 'रामचरित मानस' का संदेश है कि सत्ता इतनी चलायमान होती है कि कभी-कभी बंदरों की लात से भी गिर जाती है!

युद्ध अनिवार्य होता है। दूसरे दिन धमासान युद्ध! एक के बाद एक राक्षस वीरगति को प्राप्त करते हैं। और यहां इन्द्रजित लक्ष्मणजी को मूर्छित करते हैं। हनुमानजी संजीवनी लाते हैं। पुन: जागते हैं। उसके बाद कुंभकर्ण को निर्वाण। उसके बाद इन्द्रजित को निर्वाण प्राप्त हुआ। आखिर में रावण के सामने प्रभु का युद्ध चलता है। दस मस्तक, बीस भुजाओं को छेदने के लिए प्रभु ने अपने धनुष पर इकत्तीस बाण चढायें। दस सिर छेदे गये! बीस भुजा काटी गई! नाभि जो मूल केन्द्र है वहां इकत्तीसवां तीर लगा और रावण धरती पर गिरता है! पहली बार और अंतिम बार गर्जना करके बोला है, राम कहां है? और गोस्वामीजी लिखते हैं, रावण का तेज प्रभु के चेहरे में समा गया। प्रभु ने मृत्यु नहीं की, मुक्ति दी। प्रभु ने निर्वाणपद दे दिया। रावण गिरा। मंदोदरी आई। शोक व्यक्त किया। प्रभु की स्तुति की। विभीषण को बुलाकर प्रभु ने रावण की क्रिया कराई। विभीषण को राजतिलक हुआ। जयजयकार हुआ।

आख़िर में प्रभु ने कहा, पुष्पक तैयार करो। अब जल्दी अयोध्या पहुंचे। प्रभु ने विमान से जानकीजी को रणांगण दिखाया। सेतुबंध रामेश्वर का दर्शन करवाया। कुंभज आदि मुनि-नायकों के आश्रमों में विमान गया। विमान शृंगबेरपुर में निषादों की बस्ती में उतरा जहां से प्रभु ने नौका में गंगापार किया था। भगवान ने केवट को कहा कि जाते समय की तेरी उतराई बाकी है। बोल क्या दूं? केवट ने कहा कि प्रभु, ये तो बहाना था दूसरी बार दर्शन का। हमें कुछ नहीं चाहिए लेकिन यदि देना ही चाहते हैं तो मैंने नौका में बिठाया, आप मुझे पुष्पक विमान में बिठाकर अयोध्या ले चलिए। और प्रभु केवट को विमान में ले चलते हैं। यहां गोस्वामीजी 'लंकाकांड' पूरा कर देते हैं।

यहां एक दिन बाकी है। हनुमानजी डूबते भरत को बचा लेते हैं। हनुमानजी ने खबर दी। भरतजी की खुशी की कोई सीमा नहीं! प्रभु का विमान उतरता है और भगवान विमान से बाहर आये उसके साथ मित्रगण भी साथ में आये। लेकिन लंका से चढ़े थे विमान में तब वो थे बंदर अयोध्या में उतरे तो सब सुंदर मनुष्य रूप लेकर आये! क्या है ये कथा? ये कथा है बंदर से मनुष्य बनाने की फोर्म्यूला। राम और भरत गले मिलते हैं तब निर्णय नहीं हो पाया कि कौन वनवासी था, कौन पुरवासी था? दोनों एकरूप है। शत्रुघ्न मिले। इधर वशिष्ठ आदि गुरु के चरणों में प्रणाम किया। पूरी अयोध्या आतुर है प्रभु को मिलने के लिए। भगवान ने अनेक रूप धारण किये। सबको जथाजोग प्रभु मिले। सबसे पहले कैकेयी के भवन प्रभु गये। माँ का संकोच निवारा। सुमित्रा और कौशल्या के पास आये। जानकी को देखकर सबकी आंखें डबडबा गई! और ब्राह्मणों को वशिष्ठ ने कहा, आज ही राजतिलक कर दे। सब ने स्नान किया। राज्य अलंकार धारण कर दिया गया। दिव्य सिंहासन मांगा गया। राम-जानकी गादी पर बिराजित होते हैं और विश्व को रामराज्य देते हुए गुरुदेव वशिष्ठजी ने राम के भाल में तिलक किया। सारे त्रिभुवन में जयजयकार हुआ। दिव्य रामराज्य की स्थापना हुई। मित्रों को बिदा दे दी गई। एक हनुमानजी रहे। समयमर्यादा पूरी हुई। प्रभु की नरलीला है। जानकी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। रघुवंश के वारिस के नाम बता दिये लव-कुश। उसके बाद रामकथा को विराम दे दिया। जानकी का दूसरी बार का त्याग ये कथा लिखी नहीं है। संवाद की कथा रखी, विवाद की कथा छोड़ दी। उसके बाद कागभुशुंडि का चरित्र है।

आख़िर में सात प्रश्न पूछे गरुड ने और भुशुंडि ने सात प्रश्नों के उत्तर दिये और गरुड के सामने कागभुशुंडि ने कथा को विराम दिया। तीर्थराज प्रयाग में याज्ञवल्क्य महाराज ने विराम दिया कि नहीं स्पष्ट नहीं है। और कैलास पर पार्वती के सामने शिव ने कथा को विराम दिया।

कलिपावनावतार तुलसीदासजी ने अपने मन को कथा सुनाते हुए विराम दिया। चारों प्रधान आचार्यों ने अपने-अपने श्रोताओं के सन्मुख कथा को विराम दिया। अब मैं इन चारों आचार्यों की कृपा छाया में बैठकर नौ दिन से आपके सामने कथा गा रहा था मेरी व्यासपीठ से। मैं भी कथा को विराम देने की और हूं तब बहुत कुछ कहा है। अब क्या कहें? फ़िर भी दो-चार बातें कहकर मैं नौ दिन की कथा को विराम कर दूं। पहली बात कि इस कथा के जो निमित्तमात्र परिवार है किरणभाई, प्रवीणाबहन, पूरा उनका फेमिली; मैं इतना ही कहूंगा कि आपका आयोजन, आयोजन के पीछे आपकी रही श्रद्धा और सबके प्रति सद्भाव, उसने इस रामकथा को हर तरह से प्रसन्नतापूर्वक संपन्न करने में सहयोग किया है। सुचारु रूप से कथा विराम की ओर जा रही है। आशीर्वाद तो हम क्या दे किरणभाई? आज आपकी एनीवर्सरी भी है। आज सुबह में मैं कथा में आता था तो मुझे कहा गया कि एनीवर्सरी है। क्या योग बना! आपके दोनों के जीवन में रामराज्य हो, प्रसन्नता का राज्य हो, प्रसन्न जीवन हो और हम सब आपके लिए शुभकामना प्रेषित करते हैं। इस नौ दिवसीय कथा में जिन भाई-बहनों ने जो ढ़ाई सौ स्वयंसेवक आदि-आदि जिन-जिन लोगों ने इस प्रेमयज्ञ में अपनी श्रद्धा से आहुतियां दी है सेवा की उन सबको बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं। आप सब मेरे श्रोता भाई-बहन, इतनी श्रद्धा से और एकाग्रता से सुन रहे थे; आप सबको भी मेरी बहुत-बहुत प्रसन्नता पेश कर रहा हूं।

ज्यादातर मैं युवान भाई-बहनों को लक्ष में रखकर बोलता हूं। तो मेरे युवान भाई-बहनों, नौ दिन की इस कथा से यदि आपके दिल तक कोई बात पहुंची हो तो उसको पकड़ रखियेगा, ये तुम्हारी है। जीवन में भी सात कांड है। इनमें कोई कांड यदि ठीक ना हो तो ये पकड़ी हुई बात तुम्हारे मोड को 'सुन्दरकांड' में परिवर्तित कर सकती है। जीवन का मोड 'सुन्दरकांड' बन सकता है। मैं पुन: एक बार मेरी प्रसन्नता व्यक्त करूं। आशीर्वाद तो हम क्या दे लेकिन व्यासपीठ पर बैठा हूं। व्यासपीठ की तपस्या से, व्यासपीठ की चेतना से और इतने बड़े वैश्विक सद्ग्रंथ के पास बैठा हूं इसीलिए हनुमानजी के चरणों में किरणभाई और उनके परिवार के लिए, 'वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु।' आपके वंश में, आपकी परंपरा में परमात्मा ऐसे-ऐसे शुभ विचार, शुभ आचार प्रदान करे ऐसी हनुमानजी के चरणों में मेरी प्रार्थना आप सबके लिए बाप! खुश रहो, खुश रहो, खुश रहो।

गुरुपूर्णिमा आ रही है। आप सभी को, पूरे जगत को गुरुपूर्णिमा की भुरीश: बधाई हो, शुभकामना हो। मैं हर वक्त स्पष्टता करता हूं इसीलिए करूं कि तलगाजरडा में गुरुपूर्णिमा का कोई उत्सव नहीं होता है। रुटिन में जैसे चित्रकूट में मैं सबको मिलता हूं वो ही रहता है। इसीलिए आप न आये ऐसा मुझे कहना अच्छा नहीं लगता है लेकिन आप समझ जाईये। वहां मैं मेरे सद्गुरु भगवान दादा की पादुका की पूजा कर लेता हूं। ये गुरुपूर्णिमा मेरे लिए है। पहले हम उत्सव करते थे लेकिन लोग ऐसे भाव में आ गये कि मुझे गुरु मानने लगे! मुझे गुरु नहीं होना है। आपके जो श्रद्धेय स्थान हो वहां अपना सद्भाव प्रेषित करिये। आप सबको गुरुपूर्णिमा की बहुत-बहुत बधाई। मेरे लिए ये दिन बहुत महत्त्व का है। इससे बढ़िया कोई दिन नहीं हो सकता। नवदिवसीय रामकथा जो युवानों को केन्द्र में रखकर गाई जा रही थी। आओ, हम सब मिलकर के जगतभर में हो गये हो, जो है, जो होंगे इन सभी बुद्धपुरुषों के चरणों में ये केनेडा की नौ दिन की कथा समर्पित कर देते हैं।

मेरे भाई-बहनों को जाते-जाते कहकर जाना चाहता हूं कि छोटे-छोटे ग्रूपों के द्वारा विदेश में रहकर टूट मत जाना। एक-दूसरे से जुड़े रहना। तुम्हारे नगर में ईक्यावन मंदिर है ऐसा मैंने सुना है। एक सौ आठ करो, मुझे कोई आपत्ति नहीं लेकिन तुम्हारी दीवारों में दरवाजे रखना वरना टूट जाओगे! मंदिर रहे, संप्रदाय रहे, धर्म का ग्रूप रहे। सब रहे लेकिन मिले रहना। एक आसमां के नीचे रहना। और आसमां है सनातन धर्म। सनातन धर्म, वैदिक धर्म, वैदिक परंपरा ये वटवृक्ष है। उसकी छाया में सब मौज करो। वरना हम धर्म के नाम से विभक्त हो जायेंगे, टूट जायेंगे।

मानस-मुशायरा

गालिब न कर हुज़ुर में बार-बार अरज,
जाहिर है तेरा हाल उनको कहे बगैर।

– गालिब

प्यार का पहला खत लिखने में वक्त तो लगता है।
नये परिंदों को उड़ने में वक्त तो लगता है।

– हस्तीमल हस्ती

मोती हार पिरोये हुए।
दिन गुजरे है रोये हुए।
नींद मुसाफ़िर को भी नहीं,
रास्ते भी है सोये हुए।

–परवीन शाकीर

पहले खुद को खाली कर।
फिर उसकी रखवाली कर।

– फेहमी बदायूं

उलझनों में खुद ऊलझ कर रह गए वो बदनसीब,
जो तेरी ऊलझी हुई झुल्फों को सुलझाने गए।

– पारसा जयपुरी

अमीरे-शहर कहता है जमाना मुझसे चलता है।
पर उसकी बात को सुनकर फ़कीरे-दस्त हंसता है।
अजब काजल मेरी आंखों में तूने ये लगा डाला,
कोई चेहरा हो कैसा भी मुझे सुंदर ही लगता है।

– राज कौशिक

क्वचिदन्यतोऽपि

प्रेम दो हाथवाले के साथ होता है, चार हाथवाले के साथ नहीं

'फूलछाब' पुरस्कार वितरण समारोह में मोरारिबापू का प्रासंगिक प्रवचन

सर्व प्रथम विश्ववंद्य गांधीबापू का स्मरण करता हूं। दो अक्टूबर उनका जन्म दिवस है। साथ ही दो अक्टूबर हम सब को और दुनिया को याद रहे ऐसे देश के एक प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री को याद करता हूं। और तीसरे आज 'फूलछाब' का जन्म दिवस है। 'फूलछाब' को जन्मदिन की बधाई व्यक्त करता हूं। मुझे अपनी जवाबदारी पर कुछ कहना हो तो गांधीबापू का जन्म दिवस अहिंसा दिवस है। लालबहादुर शास्त्री का जन्म दिवस उसे 'जय जवान, जय किसान' के रूप में गा सकते हैं। और 'फूलछाब' का जन्म दिवस, उसमें तीनों मिल गये हैं ऐसा एक जन्म दिवस है। अहिंसक कोई अखबार हो तो 'फूलछाब' है। इसलिए कहता हूं कि किसी का चरित्र मलिन हो, किसी का व्यक्तित्व धुंधला हो जाय, अकारण हिंसात्मक घटनाओं को प्रोत्साहित किया जाये, ख़बर न हो ऐसा समाचार फैलाकर, पता नहीं एक दूसरे को हिंसा तक खींच ले जाने के प्रयोग जब विश्व में चल रहा हो तब मुझे कहने में जरा भी अतिशयोक्ति नहीं है कि यह एक अखबार ऐसा है कि गांधीजी के अहिंसा दिवस के साथ बैठ सकता है। किसी की भी हिंसा नहीं करता है। और मानव है साहब! कभी किसी समाचार में भूल हुई हो, कोई गलत समाचार आ गया हो तो भी दूसरे दिन उतनी ही विनम्रता से स्वीकार कर लेने का जिसमें सामर्थ्य है वैसा यह एक अखबार है। बहुत बार इस चेतना में ऐसी वस्तुएं बनती हैं जो मुझे या आपको पता नहीं हैं। इस चैतसिक जगत में कुछ घटनाएं बहुत संयुक्त होती हैं। कहीं न कहीं जुड़ी होती है। और उसे जानने का प्रामाणिक प्रयत्न करता है उसका नाम ही साधक है। कहीं न कहीं सभी छोर मिलते हैं।

अभी मैं विन्ध्यवासिनी में कथा कह रहा था। मुझे सभी पत्रकारों ने कौशिकभाई, ऐसा कहा कि हमें एक दिन दीजिए ताकि हम पत्रकार परिषद आयोजित करें। उनके

प्रतिनिधि आये। तो मैंने कहा कि भाई, मेरी मानसिकता नहीं है। आप आओ मैं बातें करूंगा। कोई चिंता नहीं। जो पूछना है वो पूछिए। मुझे जो लगेगा वो मैं सत्य कहूंगा। परंतु मेरी मानसिकता बातें करने की नहीं है। कारण कि वहां का वातावरण ऐसा है। इतने वर्षों से मैं आप से मिलता हूं और आप लोग एक ही बात मुझसे पूछते रहते हैं। जिसका कोई हेतु नहीं है। मेरा समय बिगड़ता है।

ओशो रजनीशजी विदेश से जब यहां आये घूमफ़िरके और मुंबई आंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर तीन-चार घंटे बैठा रखा। फ़िर जब उन्हें छोड़ा तब उन्होने बहुत मार्मिक बात कही कि दूसरा तो कुछ नहीं, मैं तो फ़कीर हूं। मेरे चार घंटे का समय तुमने बिगाड़ा है उस अपराध की सजा तुम्हें कौन देगा? कारण कि चार घंटे तक किसीको बैठाये रखो! कारण जो भी हो। उनका जवाब मुझे अच्छा लगा। क्योंकि वही के वही प्रश्न तुम पुछते हो, कितने वर्ष से कथा करते हो? मुझसे मुंबई में एक ही प्रश्न पूछा गया था वो आज भी चल ही रहा है कि तुम कथा करते हो तो तुमने कितनों को सुधारा हैं? मैंने ओलरेडी तब जवाब दिया था चालीस वर्ष पहले कि मैं किसी को सुधारने नहीं निकला हूं, मैं बिगड़ न जाऊं इसलिए निकला हूं। ये मेरा जवाब था। पर वही की वही बात पूछी जाती है। इसीलिए मैंने कहा कि अभी चैत्र नवरात्रि भी है और शांति से बैठने दीजिए। तो कहा कि नहीं, एक ही वस्तु पूछनी है कि तुम्हें व्यसन कितने हैं? तुम्हें व्यसन कितने हैं? अब उन्होंने मुझको किसमें गिना होगा ये तो वो जाने! क्योंकि विन्ध्यवासिनी महापीठ है, वहां पांच प्रकार के मकार की साधना होती है। उसमें मार भी होती है, मीन भी होती है, मद्य भी होता है, मुद्रा भी होती है और मांस भी होता है। और मद्य तो उन लोगों के लिए तंत्र साधना में सामान्य होता है। इसीलिए उसने मुझे उनमें गिना होगा! मेरा चेहरा देखकर तो उनमें मुझे नहीं गिनना चाहिए। और ऐसे गिने तो वो जन्मांध है! उसको चेहरा पहचानना नहीं आता है साहब! तो मुझसे कहा, व्यसन कितने? वैसे हमें पता नहीं होता कि हमारे विषय में कौन क्या-क्या सोचता है? मैं व्यासपीठ पर वैसे बहुत ही आनंद में बात करता हूं तो बहुत से लोग कहते हैं, यह कोई वैसे ही चार घंटे नहीं बोला जाता है। इसलिए हमारे लिए अच्छा ही बोला जाता है इस भ्रान्ति में नहीं रहना चाहिए। मतलब कुछ नहीं तो कुछ-कुछ तो लेते ही होंगे! नहीं तो हम थक जाते हैं, वो नहीं थकते? अभी वैसे ही कहना शुरू किया है ये राजकीय पक्षों ने जो उठाया है कि विकास पागल हुआ है, विकास पागल हुआ! मैंने कहा विकास हुआ कि नहीं वो मुझे पता नहीं परंतु बाबा जरूर पागल हुआ है! बाबा पागल हुआ है! विकास का मुझे पता नहीं।

मुझसे कहा, एक वस्तु बापू, तुम बताओ कि तुम्हें कितने व्यसन हैं? इसलिए मैंने उसे गिनवाया। ये सप्ताह पहले की बात मैं प्रस्तुत कर रहा हूं कि मुझको पांच व्यसन हैं। व्यसन का संस्कृत में अर्थ होता है पीड़ा, दु:ख। व्यसन का अर्थ ही दु:ख होता है। मैं ऐसा कहूं कि मुझे इसका व्यसन है इसका अर्थ कि मुझे ये पीड़ा है। व्यसन दु:ख ही देता है। इसका अर्थ हमें ऐसा करना चाहिए। पर है तो है! दीप्ति मिश्रा कहती है, है तो है!

यह रश्मोंरिवाजों से बगावत है तो है!

मैंने पहला व्यसन कहा चाय। बचपन से चाय पीने की साहब! यहां होठ से चाय लगाये न तो आसाम की पत्ती का स्वाद आता है! इतना तो खींच सकते हैं हम। बहुत बड़े व्यसन को क्या कहते हैं काठियावाड में? लत लगाना? जीओ, जीओ! मुझसे तो ये 'जीओ, जीओ' भी नहीं बोला जाता है! एक बार खाली रिलायन्सवाले के कौटुम्बिक क्लेश के कारण, उनकी मेरे प्रति सद्भावना इसलिए कोकिलाबहन हेलिकोप्टर लेकर तलगाजरडा उतरी और मुझसे कहा कि इन दोनों भाईओं के झगड़े में आप कुछ कहो। मैंने कहा, बहन, यह मेरा क्षेत्र नहीं है। मैं आपको क्या कह सकता हूं? आप आई है, मैं आप का स्वागत करता हूं। और मुझको जो उन्हें दो वाक्य लिख देने थे जो सब को लागू पड़ते हैं ऐसा मैंने लिख दिया था। तब से लोग ऐसा मानते हैं कि ये मोरारिबापू और रिलायन्स का अधिक संबंध है! मेरे पास बहुत आते हैं कि आप एक चिठ्ठी लिख दो न तो मेरा लड़का आसिस्टन्ट से मेनेजर बन जायेगा! पर मैंने कहा, ये मेरा धंधा है? मैं 'जीओ' ऐसा बोलने में भी विचार करता हूं कि बापू ने ये विज्ञापन विभाग संभाला है! तो चाय की लत। अभी भी आधे आधे घंटे पर पीने को मिले तो पीते रहे। और व्यसन तो है ही। व्यसन है। हमारे सभी आचार्य और धर्मगुरु है तब मुझको चाय पीने की इतनी इच्छा होती है पर वो चांदी के प्याले में केसर डाला हुआ दूध पीते हैं! इनमें तो हम कितना पिछड़े कहलाएंगे! मैंने कहा, चाय की बहुत आदत है।

चालीस या पैंतीस वर्ष पूर्व मुझको याद नहीं है, एक नया व्यसन शुरू हुआ और वो है गंगाजल। गंगाजल मेरा व्यसन है। मैं गंगाजल पीता हूं। गंगाजल में मेरी रसोई बनती है। 'हमारे संगसंग चले गंगा की लहरें।' मेरा जीवन है। गंगाजल मेरा व्यसन है साहब! और सांठ के साल से खादी मेरा तीसरा व्यसन है। खादी मेरा व्यसन है। गांधीबापू की जन्मजयंती के निमित्त हाल ही विन्ध्यवासिनी की कथा में ही कहा कि ये कपड़े के व्यापारी इतने हैं कि आप ऐसा कुछ नहीं कर सकते कि आप से कोई तीन जोड़ी कोटन का कपड़ा ले तो आप उसे एक पेर खादी की भेट में दो। और साहब! तुरंत उसका अमल हुआ काशी की दुकानों में! अखबारों में एडवर्टाइजमेंट दी। मुझसे कहा कि बापू, ऐसा लिखे कि मोरारिबापू की प्रेरणा से? मैंने कहा, नहीं। किसी की प्रेरणा नहीं। आप की आत्मा ने कुबूल किया है तो ऐसा कीजिए। खादी को घर-घर तक पहुंचाए। मेरा तीसरा व्यसन है खादी। मैं खादी पहनता हूं। वर्षों से खादी मेरा व्यसन है।

मेरा चौथा व्यसन है रामनाम और रामकथा। जो सनतकुमार का व्यसन था शास्त्रों में। सनतकुमारों से पूछा गया, तुम्हारे कपड़े कहां? तो बोले, भगवद्चर्चा हमारे वस्त्र हैं बाकी हम दिगम्बर। हम उससे ढ़के हुए हैं। सनतकुमारों से पूछा, तुम्हारा व्यसन क्या? तो कहे, हरिनाम गायन और उसकी चर्चा हमारा व्यसन है। तुम्हारी आशा कौन-सी? हरिनाम ये हमारी आशा है। इसके सिवा अपेक्षा कोई नहीं है। मेरा चौथा व्यसन है हरिनाम और हरिकथा। और मैंने उसको कहा, उस बेचारे को तो पता नहीं है कि 'फूलछाब' क्या है? मैंने कहा, मेरा पांचवां व्यसन है 'फूलछाब।' साहब! मैं दुनिया के किसी भी देश में होता हूं, विज्ञान अथवा अमुक वस्तुएं बंद हो जाएं और दगा दे तो अलग बात है बाकी सुबह अपने नियम अनुसार मैं उठता हूं और अपने यज्ञकुंड के समक्ष बैठता हूं। अपना नित्य कर्म पूर्ण करने के बाद मैं अपना नास्ता करने बैठता हूं यज्ञकुंड के पास, तब मेरी पहली मांग मुझको नास्ता क्या खिलाओगे ये नहीं होती परंतु 'फूलछाब' आया कि नहीं ये होती है। 'फूलछाब' मेरे सामने आता है। मुझको उसके बिना अच्छा नहीं लगता। ये मैं आपका बखान करने के लिए नहीं कह रहा। सुरेश दलाल ऐसे कहते, अमुक लोग मुझे पसंद है, पसंद है, मतलब पसंद है! यह 'फूलछाब' हमें पसंद है, पसंद है तो पसंद है! तो क्या करोगे? इसका मतलब दूसरे अखबार नहीं पसंद है ऐसा नहीं है। हमें तो सब का सम्मान करना है। परंतु अनायास प्यार छलके उसका क्या? ये रमेश पारेख की कविता कल ही गायी जा रही थी अमरेली में छेलभाई के यहां प्रसंग था, पचहत्तर वर्ष। अनायास प्रेम। मैंने कहा, ये अनायास प्रेम की बात यदि रमेश पारेख में आयी वह भी इसका मूल कारण देवर्षि नारद की बात में है। अनायास प्रेम की बात नारद ने प्रेमसूत्र में की है। 'गुणरहितं कामनारहितं अविच्छनं प्रतिक्षण वर्धमानं अनुभवरूपं सूक्ष्मतरम्।' उसमें कहा है प्रेम, इसमें कहा गया हेत, गुणरहित होता है, कामनारहित होता है। 'फूलछाब' की ओर अनायास भाव है। दूसरे जहां भाव होता है वहां छूटछाट भी होती है।

मैं बने वहां तक दो अक्टूबर खाली रखता हूं। वैसे भी बापू की जन्म जयंती है इसीलिए आप से कहूं कि मैं सुबह से गांधी के स्मरण में होता हूं कारण कि एक विश्व का बाप इस देश ने दिया है। ऐसा महापुरुष किसने दिया है साहब? अब पूरे जगत को आप देखो, गांधी प्रासंगिक लगने लगते हैं। और शायद आनेवाली पीढ़ी को गांधी अधिक प्रासंगिक लगेंगे कारण कि उनके शब्द अधिक सत्य की गहराई से निकले थे। ये जयंती हमारे लिए जितनी पवित्र जयंतियां हैं उनमें से एक है। इसलिए हो सके वहां तक मैं दो अक्टूबर को खाली रखता हूं। पर कथा का क्रम ऐसा है कि लगभग शनिवार से शुरू होती है और फ़िर रविवार को पूर्ण होती है। उसमें कभी नहीं भी बैठता। दोनों ओर अनायास भाव ऐसा रहा है कि मैं जो तारीख दे दूं उसे स्वीकार कर लेते हैं। भाव में बंधन कैसा? भाव में शर्तें क्यों? अब तो 'भाव' शब्द का उच्चारण करने का भी हमें अधिकार नहीं है साहब! ठीक है, भाव रखते हैं। खाक भाव रखते हो? ये जीव और शिव की व्याख्या क्या है? जीव है न वो लगभग सब भूल जाता है उसे जितना हितकारी होता है उतना याद रखता है बाकी सब भूल जाता है। 'किम् किम् न विसरन्ति इह मोह मोहित चेतस: ?' मोह के वश में जिसका चित्त है वो इस जगत में क्या क्या नहीं भूल जाता है? सब कुछ भूल जाता है। शास्त्र जब ऐसा कहते हैं, यह जीव जब सब कुछ भूल जाता है और योग्य लगे उसे ही याद रखता है। मेरा और आपका जो परमतत्त्व है वो सब कुछ याद रखता है परंतु चार वस्तु भूल जाता है। वो अपना सामर्थ्य भूल जाता है कि मैं परमतत्त्व हूं। सूरज को ख़बर ही

नहीं कि मैं सूरज हूं। है ख़बर? कौन उसे कहने जायेगा कि तू सूरज है?

आभना थांभला रोज ऊभा रहे ने वायुनो विंझणो रोज हाले.
आ उदय ने अस्तना दोरडा पर नट बनी रविराज रोज महाले.
भांगती भांगती पडी जती पडी जती पण रात न सूर्यने हाथ आवे.
कर्मवादी बधा कर्म करता रहे एहने ऊंघवुं केम फावे?

अर्थात् सूर्य को पता ही नहीं कि खुद सूर्य है। परमतत्त्व है उसे अपना ऐश्वर्य, स्वयं में कितना गुण है ये उसे पता नहीं है। दूसरा परमतत्त्व वो है जिसे आश्रित का दोष दिखता ही नहीं है। जिसकी शरण में गया हो उसका दोष दिखता ही नहीं। चाहे कोई भी हो। 'करउँ सद्य तेहि साधु समाना।' 'भगवद्गीता' कहती है, 'क्षिप्रं भवति परमात्मा।' तत्क्षण, Instant. परमात्मा अपना ऐश्वर्य भूल जाते हैं। परमात्मा अपने आश्रित का दोष भूल जाते हैं। परमात्मा किसीको दिया हुआ दान भूल जाते हैं। परमात्मा किसीने उनके लिए खराब से खराब वाक्य बोला हो उस दुश्मन का दुर्भाव भूल जाते हैं। साहब! मैं बखान करने के लिए नहीं कह रहा, गांधीबापू के यह दिवस मैं आ सकूं इसके लिए भी प्रयत्नशील रहता हूं। नहीं तो मैं अपना दिवस देता हूं वो स्वीकार कर लेते हैं। ये है प्रेम। ये हे हेतु बिना का हेत। ये है अहेतुक भाव। ऐसा कुछ 'फूलछाब' के साथ है। 'फूलछाब' जब सतानवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जिस अखबार में गांधी की अहिंसा हमें हुंकार देती है। जिस अखबार में किसी की सूरता, किसी की वीरता, 'जय जवान जय किसान' उसका कोई न कोई रूप में ध्वनि सुनाई पड़ती है। ऐसा कितना कुछ है। अब मेरा प्रवचन शुरू होती है!

आज के इस प्रसंग में मंच पर बिराजित सब से पहले तो ये जो पांच तारक बैठे हैं उनके माँ-बाप के पैर लगता हूं। एक ये माईश्री नीता की माता। इनका जब वो विडियो देखता तब उसकी आंख से आंसू गिरते थे। मैं नहीं मानता इन पांचों के चेहरे को देखकर कि इन्हें अेवोर्ड की इच्छा होगी। परंतु 'न मागे दोडतुं आवे।' मतलब इन पांचों के माता-पिता को मेरा वंदन। बहन चेतना वाळा; बहन नीता पटेल; मनुभाई पंचोली 'दर्शक' द्वारा दीक्षित देवचंदभाई; हर्षदभाई चंदाराणा इनका अधिक परिचय तो प्रणव दे सकते हैं, साहित्यकार दे सकते हैं। मैं तो उनके जितना नजदीक बैठा हूं, उनमें शीध्रता अधिक है। शीध्रता एक ऐसा अनोखा लक्षण है। कभी बीमारी में उनका हाथ हिलता हो तब मुझे ऐसा लगता कि कविता लिख रहे हैं! हमें बहुत बार कहते हैं कि बापू, अब तबियत ठीक नहीं है। नरसिंह मेहता ट्रस्ट में से मुक्त कीजिए। मैं देखता हूं, चाय देते हैं तब हाथ हिलने लगता है पर वो हाथ रोग का नहीं लगता, योग का लगता है। कविता का योग और अंगुलियां अलग नहीं पड़ती। ऐसे एक साहित्यिक मूर्ति हर्षदभाई चंदाराणा का यहां सम्मान हुआ।

दूसरे रीक्षावाला। कथा हो तब दूसरे अधिक से अधिक भिक्षा ले ऐसी आदतवाले और 'रामचरित मानस' की दीक्षावाले ऐसे हमारे जयंतीभाई। प्रफुल्लाबहन ने सच ही कहा, ये स्वभाव बदलना वो तो मुझे ख़बर है पर साहब! बहुत से सिंह गौमुखे हो जाते हैं! होते हैं सिंह परंतु गौमुखे हो जाते हैं! उनके रामकथा का संसर्ग और उनके पूर्वजों का पुण्य। इतना बड़ा परिवार, इतना बड़ा कारोबार। वैसे तो आप को पता होगा कि वो पहले मिलेट्री में जाने वाले थे। मिलेट्री में गये होते तो कितनों का...! परंतु वे उद्योग की कितनी बड़ी ध्वजा लहरा रहे हैं। मैं उन्हें कुछ कहूं तो अच्छा नहीं लगेगा। मुझसे तो बहुत घबराते हैं! पैसावाले जितना मुझसे घबराते हैं! मुझसे बारंबार कहते, बापू, कोई भूल नहीं हो रही न? मुझसे अमुक को उलाहना नहीं दिया जाता है! कोई उलाहना दूं तो मुझे अनर्थ की गूंज सुनाई देती है! इतने अधिक समर्पित लोग हैं। उन्हें मुझसे कुछ नहीं लेना। मुझको उनसे कुछ नहीं लेना। फ़िर भी मैं जूनागढ़ की लालढोरी की कुटिया में होता हूं तब सुबह उठता हूं उससे पहले 'अतुल ओटो' के मालिक बाहर मेरे झूले के समीप पोता लगाते रहते हैं। उसे मनुष्यों की कुछ कमी नहीं साहब! वे अेवोर्ड की ना पाडते थे। कौशिकभाई को हुआ कि यहां से जाएंगे तो ही मेल खायेगा। मैंने जयंतीभाई से कहा, तुम्हारे मन में ऐसी कोई भावना नहीं है परंतु सब की भावना है बाप! और मुझको जयंतीभाई पसंद है उसका एक ही कारण है उनकी रीक्षा और उनका धंधा और उसका साम्राज्य वो तो सब ये करते हैं। परंतु दसवां भाग निकालते हैं। मेरा वचन पालते हैं। अपनी कमाई का दसवां भाग निकालते हैं। उनका व्यसन यदि कहना हो तो वे कथा कराते रहते हैं। ये सब घरेलू बातें हैं। मेरे परिवार के सभ्य है ये लड़के। इसीलिए प्रफुल्लाबहन मुझसे कहती हैं बापू, चाहे जो हो धंधा में जो हो पर आप उनसे कथा ही करवाते रहे यानी हमको शांति! हकीकत है। कारण कि यह उनका व्यसन है साहब!

हमारे वसंतबापू रास्ते में अच्छी बात करे रहे थे कि राम का अवतार ये अस्तित्व की व्यवस्था होगी। वाल्मीकि के शोक का श्लोक में उतरना वो भी अस्तित्व की ही व्यवस्था होगी। तुलसी का लिखना ये भी शायद अस्तित्व की व्यवस्था होगी। ऐसे ही अमुक लोगों का कथा करवाने का निमित्त बनते रहना ये भी शायद अस्तित्व की ही व्यवस्था होगी। मुझे पता नहीं है। तो इन पांचों का चेहरा देखकर, इन दो बेटियों को देखकर ऐसा लगता रहता है, अपना सौराष्ट्र कितना तेजस्वी है? इस उम्र की बेटी खेती में आगे निकले उसे क्या हेतु? उसको कुछ करना है? ये चेतना कहां-कहां जाकर अेवोर्ड ले आती है! उसके माँ-बाप को ही गौरव हो ऐसा नहीं। मुझको दुनिया बापू कहती है उसी तरह से मुझको भी बहुत गौरव होता है। देवचंदभाई इतनी बड़ी सामाजिक सेवा करते हैं। मैं नमन करता हूं साहब! हर्षदभाई इतनी बड़ी सामाजिक सेवा, इतना बड़ा कृतित्व। इन पांचों चेतनाओं को मैं हृदय से बधाई देता हूं। उन्हें साधुवाद देता हूं और उनका जो स्वधर्म है वो खूब फूलेफले और उसका फल राष्ट्र को, विश्व को प्राप्त हो।

अंत में मैं इतना ही कहूंगा, सम्मान किसका होता है? मैं बहुत बार कहता हूं, मैं पुस्तक कम पढ़ता हूं, मनुष्य का मस्तक अधिक पढ़ता हूं। अब आप मुझसे पूछना मत कि मस्तक कैसे पढ़ा जाता है? इसके लिए आपको दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। उसे क्यों पढ़ा जाये ये मुझको आप से कहना है। ये मुझको ही आता है। इसको सिखाया नहीं जा सकता। मानसिक मुझे ख़बर पड़ती है, उसके चेहरे से कि इस आदमी में कितना भरा है? सम्मान किसको पसंद नहीं? सम्मान के लिए नेटवर्क लगाये जाते हैं! मैं इसका साक्षी हूं। पद्मश्री और पद्मभूषण तक की जो फाइलें तैयार होती है न वो मेरे पास आती है कि बापू, आप का और नरेन्द्रभाई का ठीक बनता है। मैंने कहा, मेरा और उनका संबंध यानी एक गुजराती के रूप में है। मेरा क्षेत्र सत्य का है, उनका क्षेत्र सत्ता का है। नहीं तो बापू, आप चार पंक्ति लिख दो न तो मेरा पद्मभूषण निश्चित! कितना कुछ करना पड़ता है? धन्य है 'फूलछाब' कि ये एक तटस्थता और कूटस्थता से ये एवोर्ड निश्चित होता है। और ऐसे मर्मज्ञ उसमें बैठकर काम करते हैं। और फ़िर घोषणा होती है तब हमें ऐसा लगता है कि ऐसा ही होना चाहिए। दूसरा नहीं होना चाहिए। ऐसी एक सूक्ष्म दृष्टि से परखकर पक्का होता है।

सम्मान सब को पसंद है। किसे नहीं पसंद यार? परंतु जयंतीभाई बोलते हैं वो हृदय से बोलते हैं। उनका टोन मुझे अच्छा लगा कि मेरी अपेक्षा बहुत से बड़े उद्योगपति राजकोट में हैं। परंतु बाप! वे दसवां भाग निकालते नहीं! निकालते हो तो उनके पैर पड़ता हूं। हमें ख़बर नहीं। पर कौशिकभाई मुझे फोन करे और मैं हां भी भराउं? मैंने क्यों हां कहलवाया होगा? मैंने कहा, जयंतीभाई चांद्रा परिवार के लड़के यदि एक रसोई में साथ आते हो तो आप के कर्मचारी आपका परिवार नहीं है? उन्हें दोपहर को आपको नहीं खिलाना चाहिए? टिफिन लेकर कारखाने में आये ये उद्योगपति के लिए मुख न दिखाने जैसा कहलायेगा! एक वक्त आप उन्हें खिलाएं। वे तुम्हारे होकर रहेंगे। और शायद तुम्हारे होकर नहीं रहे तो भी वे अपने पेट में तुम्हारा अन्न लेकर जायेंगे और उस अन्न की ड़कार उन्हें हमेशा आयेगी। ऐसा कितने लोग कर रहे हैं। इसी कारण मैं इनके लिए बात कर रहा हूं। बाकी अन्य क्या कारण है? लड़को में ये सब उतरा है। लड़को में तो अधिक उतरा है। जयंतीभाई मुझसे कहते कि कथा में मैं आउं उसके बदले नीरज आये? मैं कहता, नीरज को ही भेजो। सब पीढ़ी में उतर रहा है। पैसा तो सब के पास आता है। आना चाहिए। हम चाहते हैं बाप! मेरी बात है कि दो हाथ से कमाओ और चार हाथ से दो। और प्रेम दो हाथवाले के साथ होता है चार हाथवाले के साथ नहीं। लक्ष्मी-नारायण को कभी यूं प्रेम करते देखा है? लक्ष्मी-नारायण में वो भाई सोया रहता है, 'शांताकारं भुजग शयनं...'और लक्ष्मी चपल है, वो तो फ़िरती रहती है। जहां-जहां योग्य पात्रता देखती है वहां देने पहुंचती है। तो बाप! राम और जानकी के बीच जो प्रणय है।

एक बार पुनि कुसुम सुहाए।
निज कर भूषन राम बनाए॥

सीताराम अकेले नहीं पड़े और राम ने फूल नहीं तोड़ा! सीता के बाल में गूंथा नहीं! दो जन मौज कर रहे हैं। और राधाकृष्ण की तो बात ही छोड़ो! लक्ष्मी-नारायण चार हाथवाले नहीं, दो हाथवाले ही प्रेम करते हैं। और इसीलिए मानव मानव से प्रेम करता है। दो हाथ से कमाने के बाद नर में से चतुर्भुज बनो और उसका उपयोग करो। वो एवोर्ड का अधिकारी है।

सम्मान किसको पसंद नहीं आता? एक छोटे-से सम्मान कार्यक्रम की बात करके मैं पूर्ण करूंगा साहब!

मुझको बोलना पसंद है और आपको सुनना शायद पसंद है। पर मुझे अधिक नहीं कहना है साहब! पर अयोध्या में राम के राज्याभिषेक हुए कुछ महिना बीत गये। भगवान राम ने छोटा-सा सम्मान का कार्यक्रम रखा। पांचजन को सम्मानित किया। 'फूलछाब' के प्रसंग में वो मुझे याद आता है। कौन थे वे? राम कौन? राम बनने के बाद उन्हें प्रत्येक जन में राजा दिखा। वो रामराज्य है। राम को कोई प्रजा नहीं दिखी साहब! राम की दृष्टि 'सर्वम् खलु ईदम् ब्रह्म।' एक मेरा विनम्र अनुभव। मुझे और आपको जहां तक हम से कोई छोटा दिखता है न वहां तक हमारा मन शुद्ध नहीं है। अधिक अभ्यास करो साहब! साधना अर्थात् उल्टे सिर होना ये नहीं है। निरंतर आत्मदर्शन करना चाहिए। मुझको या आपको दूसरे या अपने क्षेत्र में कोई छोटा दिखे कि मेरी अपेक्षा ठीक है तो समझना चाहिए मन अभी शुद्ध हुआ नहीं। जब मन शुद्ध होगा तब-

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

●

सम: सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्।

सभी राजा हैं। जितनों का सम्मान किया ये सभी राजा थे। सुग्रीव किष्किन्धा का राजा हो चुका था। विभीषण लंका का राजा हो चुका था। अंगद वो आज नहीं तो कल, सुग्रीव नहीं होगा तब राजा होनेवाला है कारण कि वो युवराज है। राजा बनने का अधिकारी है। और निषाद एक वंचित; एक उपेक्षित, तुलसी उसे निषादराज कहते हैं। गुहराज एक गरीब में गरीब आदमी, उसे भी मेरे राम ने राजा देखा। और पांचवां मेरा हनुमान, ये तू है वो मैं हूं। इन पांच जनों का सम्मान हुआ है।

ये 'फूलछाब' पांच जनों का सम्मान कर रहा है। इसका मूल वहां है। मैंने कहा न शुरूआत में कि चैतसिक घटनाओं की हमें ख़बर नहीं है, कहां-कहां ये सब जुड़ा हुआ है? यह अर्जुन को सात सौ श्लोक के बाद याद आया! ये जुड़ा हुआ था इसलिए याद आया। 'स्मृतिर्लब्धा।' मुझे याद आया। मुझे याद आया। अपने हरीन्द्रभाई कहते हैं, 'पान लीलुं जोयुं ने तमे याद आव्या।' स्मृति के लिए अनुष्ठान नहीं करने पड़ते साहब! वो तो अचानक प्रगट होती है। उसका कहीं प्रोग्राम होगा? उसकी कोई दिनचर्या होगी कि मैं आठ पच्चीस पर आउंगी? बहन हो तो बात अलग है! कोई स्मृति नाम की बहन हो तो! कहीं न कहीं हम जुड़े हुए हैं। हम पांच तत्त्वों का सम्मान हुआ। उनमें अधिक पिछड़ा था वह गृहराजा। उसकी पिछड़ी जनता, उसकी वंचित प्रजा। समय से वह कोई रोजगार नहीं दे सकता था पर तुलसी ने उसे निषादराज कहा है। देवचंदभाई कोई वंचित हो उसकी सेवा करते हैं। ये गुहराज का काम था। हनुमानजी खेलकूद के आदमी हैं। छलांग के आदमी हैं। हनुमानजी की वीणा, उनका शौर्य अद्भुत है। वे क्रीड़ा के आदमी हैं। वे खेलकूद में कुछ न कुछ करते हैं। जो खेलकूद से थोड़ा निकला होगा। उसने अपनी पीड़ा प्रस्तुत की कि बापू, खेलकूद के व्यक्ति नहीं मिलते। हनुमंततत्त्व मिलना महंगा है साहब! वो तो अजर-अमर तत्त्व है। उसे ढूंढ़ना पड़ता है। जहां-तहां नहीं मिलता। खेलकूद का जो एवोर्ड है उसका संधान मुझे वहां लगता है। और साहब उद्योग! अरे जिसके घर पूरी लंका सोने की हो उसका उद्योग कैसा होगा? जयंतीभाई का उद्योग है उसमें स्वर्णिम तेज है। उसमें सदाचार सत्कर्म है। और खेती-कृषि का, उसका सम्मान सुग्रीव को दिया। सुग्रीव को भगवान ने क्या दिया ख़बर है? भरतजी ने जो वस्त्र अपने हाथ से बुना था वो सुग्रीव को पहनाया। किस लिए पहनाया? एक बार जानकी ने सुग्रीव, तुझ पर वस्त्र फेंका था। मुझे खोजते हुए राम निकले और मेरे ये वस्त्र देखें। आज मैं तुम्हें दूसरा वस्त्र देता हूं इसलिए कि तुम धरती को ढंकना। धरती की पुत्री को ढंकने की बात है। ये धरती का पर्यावरण, ये धरती का खनन इस धरती का रस छूट न जाये इसलिए सुग्रीव को का कि तुम इसके रक्षक बनना। इसलिए शायद इस बेटी को खेती का एवोर्ड मिला है। और साहब! साहित्यिक सम्मान। ये सम्मान युवराज अंगद को मिला है। उसको रामने क्या किया? अपने गले में जो माला थी उसे 'बालितनय पहराइ।' वैजंतिमाला, मुक्तामाला, कुंजामाला, मगमाला, कितने प्रकार की माला होती है? तुलसी की माला, रुद्राक्ष की माला, स्फटिक की माला! ये माला वो माला। कितनी मालाएं होगी? परंतु तुलसी ने एक नई माला खड़ी की, उरमाला। हृदय की आत्मीयता। हृदय देना। साहित्यकार क्या करते हैं? हृदय-हृदय तक पहुंचाने का काम करते हैं। साहित्य की खोज क्या है? 'रामायण' में जो सम्मान हुआ है परंपरा 'फूलछाब' में उतरी है। 'रामायण' की परंपरा 'फूलछाब' में उतरी है मतलब मोरारिबापू को आना ही चाहिए।

('फूलछाब' अवोर्ड समारोह में राजकोट (गुजरात) में प्रस्तुत वक्तव्य : दिनांक २-१०-२०१७)

सांध्य-प्रस्तुति

सुश्री कौशिकी चक्रवर्ती

श्री कीर्तिदान गढवी

श्री मायाभाई आहीर

सुश्री शिवल त्रिवेदी

॥ जय सीयाराम ॥